अंधा कुआँ

लक्ष्मीनारायण लाल

अंधा कुआँ

[ग्रामीण सामाजिकता का दुखांत नाटक]

लक्ष्मीनारायण लाल

भारती भण्डार
प्रयाग

ग्रन्थ-संख्या—१९३
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भंडार
लीडर प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण
सं० २०१२ वि०
मूल्य : ढाई रुपये

मुद्रक :
श्री प्रेमचन्द मेहरा,
न्यू एरा प्रेस, इलाहाबाद।

अंधा कुआँ

●

अभिनय अवधि
[तीन घण्टे]

केहु ना सुनी पुकार
हिरनी तब कुआँना गिरी
तुहिं राखो यहिं बार
बिरन गोसाँईं कुआँना

जलालपुर की सूका को
समर्पित
जो अब तक
जीवित है

पात्र

भगौती	हरखू मौसिया
सूका	तेजई
अलगू	मूरत
राजी	हीरा
इंदर	रामदीन
नन्दो	जोखन
लच्छी	अधारे
मिनकू काका	परभू

तीन औरतें

[यह नाटक, ग्यारह नवम्बर उन्नीस सौ पचपन को इलाहाबाद, आर्टिस्ट असोसियेशन द्वारा श्री के० बी० चन्द्रा के निर्देशन में स्थानीय लक्ष्मी टाकीज मे निम्नलिखित भूमिका से प्रस्तुत किया गया।]

भगौती	ज्वाला प्रसाद वर्मा	हरखू	कैलाश चन्द्र सक्सेना
सूका	उषा आर्य्या	तेजई	भारतभूषण रायजादा
अलगू	दया प्रकाशसिन्हा	मूरत	डेविस
राजी	शीला बाधवानी	हीरा	बी० मालवीय
इंदर	जगदीश भटनागर		तीन औरतें क्रमशः
नन्दो	कांता भारती		उषा भटनागर
लच्छी	निर्मला पॉल		माया भटनागर
मिनकू	राबिन बनर्जी		लक्ष्मी मेहरोत्रा

[प्रस्तुत स्थापना में रामदीन जोखन, अधारे परभू का अंश नहीं था, तब इसकी अभिनय अवधि ढाई घंटे की थी।]

दृश्य

●

पहला अंक, दरवाजे का बरामदा
दूसरा अंक, भीतर का दुइदरा
तीसरा अंक, दुइदरे का आँगन
चौथा अंक, भीतर का दुइदरा

मंच सज्जा

●

एक ही मंच रेखा से सम्पूर्ण नाटक खेला जा सकेगा। सामने से बायीं ओर बरामदे का मंच, और उसी से खिचकर कुछ भीतर आँगन और दुइदरे का मंच, सामने से दायीं ओर तक फैला हुआ।

प्रकाश

●

अंकों के बीच में जहाँ एक क्षण के लिये पर्दा गिराने-उठाने की योजना है, अर्थात् समय-अंतराल का यह संकेत पर्दा न गिराकर, प्रकाश से किया जाना चाहिए—'फेड आउट, फेड इन' से, हर अंक में समय, काल-स्थिति के अनुसार प्रकाश की गति और रूप बदलता चलेगा।

पहला अंक

[पर्दा कमालपुर गाँव में भगौती की बैठक में खुलता है, दरवाजे के बरामदे में। बरामदे के पावे ईंट के हैं, मिट्टी से भरपूर लिपे-पुते। वे संख्या में छः है। दरवाजे की किवाड़ खुली है। चौखट के दाएँ-बाएँ ईंट और मिट्टी के बने हुए दो मोढ़े है। चौखट और मोढ़ों के बीच, दोनों ओर एक-एक लाठी खड़ी रक्खी है।

पूरा बरामदा दो भागों में बँटा है। एक भाग दरवाजे से दायीं ओर का है, इसमें केवल एक चारपाई भर की जगह है। इस भाग में चारा घास काटने के लिए एक नेसुहा[1] गड़ा है। नेसुहे से दाएँ हरी घास रक्खी है, और बायीं ओर गेंड़ासा[2] पड़ा है। दीवार में एक लम्बी-सी खूँटी है जिस पर उबहन, बरारी तथा टूटे हुए पगहे एक पर एक रक्खे हैं। खूँटी के नीचे एक खुली हुई अलमारी है, जिसमें फावड़ा, कुदार, दरखनी, खुरपी-खुरपा वगैरह खेती के सामान रक्खे हैं।

बरामदे का दूसरा भाग, दरवाजे से बायीं ओर का है। यह भाग अपेक्षाकृत लम्बा है। इसमें एक पलँग और एक मामूली-सी खाट पड़ी है, फिर भी बरामदे में काफी स्थान शेष है। शेष स्थान में, दीवार से सटाकर अनाज से भरे दो बोरे रक्खे है। इसके अतिरिक्त बाँस के एक ढाँके[3] में धान भरा रक्खा है।

पलँग पर एक मटमैली-सी दरी, समेटी हुई सिरहाने रक्खी है।

---

१ जिस पर चारा काटा जाता है।

२ जिससे चारा काटा जाता है।

३ बड़ा बर्तन।

खाट पर एक फटा हुआ देशी कम्बल पड़ा है। दीवार में लकड़ी की चार खूँटियाँ गड़ी हैं। दरवाजे से क्रमशः पहली खूँटी पर तुलसी के दो माले लटक रहे हैं, दूसरी खूँटी पर जोन्हरी की पकी हुई बालियों का एक झोप्पा टँगा है। तीसरी और चौथी खूँटी पर तेल से पुती हुई दो लाठियाँ पड़ी रक्खी है। चारों खूँटियों के बीच तीन ताख है। पहले ताख मे मिट्टी का चिराग रक्खा है, और समूचा ताख और उसके आसपास की दीवार का हिस्सा कालिख से जैसे पुता हुआ है। दूसरे ताख में आल्हा और रामायण की पोथियाँ कपड़े में बँधी हुई रक्खी हैं, और तीसरे ताख में एक मटमैला-सा बोतल रक्खा है।

आषाढ़ मास के प्रारम्भिक दिन हैं। आषाढ़ की पहली वर्षा हो चुकी है। दिन डूबने में आधा घण्टा शेष है।

पर्दा उठने पर उक्त बरामदे का स्टेज बिल्कुल सूना मिलता है। कुछ क्षणों के बाद पृष्ठभूमि में कुछ गिरने और टूटने की आवाज होती है। उसके साथ ही साथ किसी पुरुष की क्रोधभरी, आवेशपूर्ण फटकार सुनायी पड़ती है। भीतर से भागी हुई एक औरत दरवाजे से निकलकर दायीं ओर निकल जाती है। भीतर पुरुष की फटकार और भी बढ़ती है और एकाएक किसी औरत के रोने और चीखने की आवाज उभरती है। क्षण भर बाद, बाहर भागी हुई औरत फिर तेजी से वापस लौटती है और दरवाजे के भीतर निकल जाती है। भीतर, पिटती हुई औरत की चीख भरी आवाज में डंडे के प्रहार की गति, इस तरह मिली रहती है, जैसे खिंचे हुए मोटे ताँत को कोई बजाता हुआ रुई धुन रहा हो। बेतरह पिटती हुई औरत की चीख और रुदन से स्टेज का सारा वातावरण करुण हो जाता है। उसी समय दौड़े हुए मिनकू काका, घुटने तक की धोती और ऊपर मिरजई पहने, कंधे पर अँगौछा रक्खे, हाथ में पतला डंडा लिये, दायीं ओर से प्रवेश करते हैं।]

मिनकू काका : *(प्रवेश करते ही आवेश में पुकारने लगते हैं।)* भगौती !......ओ भगौती !! (बढ़कर दरवाजे से *लगकर*) ओ भगौती (*डंडे से किवाड़ पीटते हैं*) अबे ओ ! रे भगौतिया !!

[भीतर मारने की आवाज सहसा खत्म हो जाती है, लेकिन भीतर से रोती हुई औरत की आवाज अपनी सारी करुणा के साथ सुनायी पड़ती रहती है। उसी बीच, नंगे बदन, केवल धोती पहने, सिर पर अँगौछा बाँधे और हाथ में डंडा लिए अन्दर से हाँफता हुआ भगौती आता है। उसकी साँसें क्रोध और आवेश से अब तक फूल रही हैं, और वह पसीने में तर है। दरवाजे से बाहर निकलकर वह मिनकू की ओर ध्यान न देकर सीधे दायीं ओर बढ़ने लगता है, मिनकू सहसा बढ़कर उसके हाथ से डंडा छीन कर बायीं ओर फेंक देते हैं।]

मिनकू : (डंडा फेंककर) क्या उसकी जान ही ले लेने पर तुल गये हो ?...... बोलो, क्या चाहते हो ?

[भगौती चुप है, वह सिर के अँगौछे को खोल कर उससे अपने मुख का पसीना पोंछने लगता है।]

मिनकू : तुम्हें लाज नहीं आती (रुककर) एक बार हो गया, दो बार हो गया, डरा-धमका दिया, लेकिन बेहया की तरह यह क्या ढँग है ?

[भगौती गम्भीरता से उस पर एक दृष्टि डालकर फिर अपने हाथ-पैर की धूल झाड़ने लगता है।]

मिनकू : घर क्या है, कसाई का खूँटा बना रखा है।

[भगौती बढ़कर चुपचाप चौखट के बाएँ मोढ़े पर बैठ जाता है।]

मिनकू : सूका ने हजार कसूर किया है, लेकिन उन कसूरों की जिम्मेदारी किस पर है ? तुम अपने कर्म को क्यों नहीं देखते ?

[भगौती चुप है]

मिनकू : *(पीड़ा से)* रोज-रोज बेरहम की तरह उसे मारते हो ! कहीं कुछ हो जाय, औरत-अबला का मामला, कहीं उसे ठाँव-कुठाँव लग जाय, फिर सोचो, क्या होगा *(रुककर)* लेने के देने पड़ जायेंगे। गाँव के बढ़ावा देनेवाले तुम्हारे दोस्त तब काम नहीं आयेंगे, फिर बेटा ! तुम्हें छठी का दूध याद आ जायेगा।

भगौती : *(उठता हुआ)* तुम नहीं समझोगे काका।

मिनकू : क्यों नहीं, बिलकुल ठीक, मैं कैसे समझूँगा, मैंने दुनिया थोड़े देखी है।

भगौती : *(पलँग और खाट के बीच जाता हुआ)* यह बात नहीं काका, तुम समझते नहीं।

मिनकू : मैं रत्ती-रत्ती समझता हूँ, सिर्फ यही नहीं समझता कि अगर तुम्हें सूका को रोज-रोज हलाल ही करना था, तो उसे पाने के लिए तुम इतने दीवाना क्यों हुए ?

भगौती : दीवाना।

मिनकू : हाँ, दीवाना नही तो क्या ! पाँच बार तुमने सूका के लिए वारंट कटाया, न जाने कितनी बार पुलिस को घूस दिये। अंत में दस्ती वारंट लिया, पुलिस के साथ खुद कलकत्ता गये; फिर कहीं जाकर सूका गिरफ्तार हुई।

भगौती *(क्रोध से)* न गिरफ़्तार होती तो बच के जाती कहाँ !

मिनकू : लेकिन सूका को सहज ही तो न पा सके ! उसकी गिरफ्तारी के बाद भी तो न जाने कितनों के दरवाजे झाँकने पड़े । पूरे नौ महीने तक सूका का मुकदमा चला है । मुकदमे की पैरवी में गाँव से कचहरी का रास्ता नापते-नापते हम सब के पैर घिस गये । आखिर यह सब क्यों ? किस लिए ?

भगौती : *(अकड़कर)* इसी लिए कि मैं अपनी बेइज्जती का बदला लूँ।

मिनकू : *(व्यंग से)* सूका से बदला !................*(कड़े स्वर से)* लेकिन भगौती याद रखो, खूँटे में बाँधकर गऊ मार रहे हो ।

भगौती : *(जलकर)* वह गऊ है.........तुम सुकिया को गऊ कहते हो ! उस डायन को गऊ !

मिनकू : *(बीच ही में)* भगौती ! सुनो, जिस तरह से भीतर तुम्हारी मार से इस समय सूका रो रही है, डायन-प्रेतिन होती तो वह इस तरह रोती नहीं, दिन दहाड़े वह घर में आग लगा-कर कहीं गायब हो गयी होती ।

भगौती : क्या उसने अभी इस घर में कम आग लगाई है *(रुककर)* सारा दोष तो तुम मुझे दोगे ही। लेकिन खान्दान की बदनामी, मेरी बेइज्जती जो उसने की है *(रुककर)* मेरा कलेजा जो उसने झाँझर किया है । *(टहलकर बरामदे के दूसरे भाग में आता है । नेसुहे के पास भीतर सूका के रोने की आवाज टूट जाती है ।)*

मिनकू : लेकिन इन बीती हुई चीजों और अब रोज-रोज सूका को मारने से क्या मतलब ? क्या इसी से सब बातें पूरी हो जायेंगी ?

भगौती : पता नहीं !

[जाकर नेसुहे पर बैठ जाता है]

मिनकू : क्या कहा ?

भगौती : (*उपेक्षा से*) कुछ नहीं, मुझे जो-जो सूझेगा मैं वही करूँगा। मुझे किसी का डर नहीं।

मिनकू : ईश्वर का भी नहीं।

भगौती : किसी का नही।

मिनकू : इसका अंजाम भी सोचा है ?

भगौती : (*बिगड़कर*) मैं सोचता-वोचता कुछ नहीं काका। मेरी खोपड़ी मत चाटो। मुझे सारे काम करने हैं।

[सहसा गेड़ासे से नेसुहे पर घास काटने लगता है।]

मिनकू : (*पास बढ़कर*) काम तो तुझे जरूर बहुत करने हैं। सबसे जरूरी काम तो वही था, जिसे करने में अभी तक तुम भीतर लगे थे (*रुककर*) लेकिन भगौती एक बाद याद रख।

(*सिर पर हाथ फेरकर*) ये बाल धूप में नहीं पके हैं।

[भगौती गेड़ासा चलाना बन्द करके मिनकू को देखने लगता है।]

मिनकू : अगर तुमने सूका को इस तरह मारने की हरकत न बंद की, तो याद रखना बेटा। सूका से एक दिन तुम फिर हाथ धो बैठोगे और सदा के लिए हाथ मलते रह जाओगे।

भगौती : इसकी कौन परवाह करता है।

[फिर घास कटाने में लग जाता है। कुछ क्षणों तक मिनकू शान्त, चिंतित रूप में देखते रहते हैं। एकाएक भीतर से सूका दरवाजे पर आती है और चौखट के सहारे खड़ी हो जाती है। सूका की अवस्था अधिक से अधिक बीस-इक्कीस साल की होगी, लेकिन इस समय देखने से लगती है कि वह

तीस वर्ष से कम की न होगी। मटमैली-सी मोटी साड़ी है। बदन पर जो गबरून का सलूका पहने है, उसकी दोनों बाहें फटी हैं। लगता है, महीनों से पानी से भेंट नहीं हुई, फिर तेल-फुलेल की बात ही क्या! सिर के बाल अस्त-व्यस्त हैं। कनपटियो पर बाल की उलझी हुई लटें झूल रही हैं। हाथ-पैर-मुँह-माथा सब पर धूल और कालिख लगी है। पूरा मुँह रुदन और प्रतारणा से फूल-सा आया है। चौखट पर खड़ी खड़ी वह अपने आँचल से आँसू पोंछती रहती है। क्षण भर बाद काका की दृष्टि दरवाजे की ओर घूमती है और वह सहम जाते हैं, कुछ बोल नहीं पाते।]

सूका : (*क्षण-भर बाद पीड़ा मिश्रित व्यंगसे*) इसी लिए कचहरी से मुझे छुड़वाकर इस घर में लाये थे?

[मिनकू चुप हैं, भगौती घास काटने में लगा है।]

सूका : बड़े काका तो बने हो, अब जवाब दो न!.........दो जवाब, इजलास में, हाकिम के सामने तुम लोगों ने क्या-क्या वादे किये थे?

[सूका की आवाज सुनते ही भगौती क्रोध से लाल हो जाता है। चारा काटना छोड़, वह दरवाजे की ओर झपटता है. मिनकू हाँ...हाँ ..हाँ . कहते हुए भगौती को पकड़ते हैं।]

भगौती : (*आवेश में*) चुड़ैल, यहाँ क्यों आई?

सूका : (*जैसे लड़ती हुई*) हाँ, हाँ, ले मार! ले मार गँडासा से!! मार न!!!

[भगौती को पकड़े हुए मिनकू उसे दूर हटा ले जाते हैं और उसके हाथ का गेंडासा छीन लेते हैं।]

मिनकू : *(क्रोध से)* एकदम पागल मत बनो भगौती ! नहीं तो सारी चौकड़ी भूल जायगी ! क्या समझा है अपने को ?

सूका : नहीं, नहीं, रोको नहीं ! मारने दो इसे *(भगौती से)* चलाओ गेंडासा ! मारो ! मैं मरने पर ही तुली हूँ।

भगौती : *(आवेश में)* मना कर दो सुकिया को, नहीं तो मैं जान पर खेल जाऊँगा काका !

सूका : खेल जान पर। खेल न !

मिनकू : *(भगौती को हटाते हुए)* जा सूका, भीतर जा ! चली जा, यहाँ से !

सूका : कहाँ जाऊँ !

भगौती : *(बीच ही में)* मौत के मुँह में जा ! और कहाँ जायेगी ?

सूका : मौत के मुँह में तो जा ही रही हूँ लेकिन ·····लेकिन !

भगौती : हाँ, हाँ, बोल ! चुडैल कहीं की !

मिनकू : *(झुँझलाहट से)* नहीं मानोगे भगौती !

भगौती : *(क्रोध से)* मेरी नजर से इसे दूर हटा दो काका ! इसे देखते ही मुझ पर छिपकली चढ़ जाती है।

सूका : *(बीच ही में)* अब सुन लिया न ! बुला लाओ गाँव भर को, सुन लें इसकी बात ! सब सुन लें।

मिनकू : भूल गये भगौती !····· क्या कहकर सूका को इजलास से छुड़ा कर लाये थे ! बोलो ! चुप क्यों हो गये ?

भगौती गेंडासा दो ! चारा तैयार करना है।······मुझे दम लेने की फुर्सत नहीं है !

[गेंड़ासा छीनकर फिर नेसुहे पर बैठता है, और चारा काटने लगता है। भीतर से घड़ा और डोर लिए नन्दी दरवाजे से निकलती है और सूका को घूरती हुई दायीं ओर चली जाती है।]

सूका : वह क्या बोलेगा !……तुम्हीं बोलो न ! हाकिम के इजलास पर तो तुम्हीं सबसे बड़े काका बने थे। कहाँ हैं आज तुम्हारी वे बातें, जिन्हें ईश्वर की साखी देकर…… *[एकाएक उसका गला रुँध-सा जाता है।]*

मिनकू : मैंने जिम्मा लिया था कि मैं तुम्हें किसी तरह का दुख न होने दूँगा।

सूका : आज वह जिम्मा कहाँ है ? *(दरवाजे से एक कदम आगे बढ़ आती है।)* इजलास से छुटकर इस घर में आये हुए आज डेढ़ महीने बीत गये। तब से आज तक, एक दिन भी न ऐसा हुआ होगा, जिस दिन इसने मुझे मारा न हो। जो साड़ी पहने हुए मैं इजलास से आयी थी, वही आज तक मेरे तन पर सड़ रही है। वही कमीज है। *(दिखाती हुई)* देखो, ऊपर से इसने मुझे मार-मारकर, इसे भी तार-तार कर डाला है……देखो यह आँचल, देखो यह कमीज, किस जतन से मैं इससे अपनी लाज ढकूँ।

[उसी समय नन्दी भरे घड़े को अपनी कमर पर रक्खे वापस आती है और उसी तरह सूका को घूरती हुई भीतर चली जाती है।]

भगौती : *(एकाएक अपने चारे की ओर से दृष्टि हटाकर घूमकर देखता हुआ)* बेहया कहीं की ! बड़ी लाज ढकने चली ! तन की खोरही, मखमल का भगवा, हूँ !

[फिर चारा काटने लगता है]

सूका : अब तो जो चाहो कह लो……लेकिन अगर मैं न होती तो जन्म भर तेरे पुट्ठे पर हल्दी न लगती (रुककर) क्या टूट-सराप दूँ माँ बाप को, अपने भाग्य को क्या रोऊँ ?

मिनकू : क्या हदकर डाला भगौती तूने।……बोलो यही इन्सानियत है, उसके तन ढकने के लिए तूने दो हाथ कपड़ा तक न दिया……जवाब दो।

[भगौती चुपचाप चारा काटता रहता है।]

सूका : वह क्या बोलेगा ! वह तन ढकने के लिए कपड़ा क्या देगा ! उसे तो बस, जूता-डंडा चाहिए और मेरा शरीर। (रुककर) कहाँ-कहाँ, क्या-क्या दिखाऊँ, सारे तन को इसने मूज की तरह खूनकर रख डाला है। (*दिखाती हुई*) यह बाँह देखो, यह कलाई, यह पीठ देखो, यह सब अभी की मार है, अभी-अभी इसने जो मुझे कसाई की तरह मारा है।

भगौती : (*काटना बन्द करके*) लेकिन बेशरम कहीं की। फिर भी तो तेरी जबान नहीं बन्द होती (*चारा काटने लगता है।*)

सूका : जबान तो सांस के साथ ही बन्द होगी।

मिनकू : (*भगौती के पास आकर*) भगौती तुम्हारी यही हरकत रहेगी कि तुम बदलोगे……बोलते क्यों नहीं !

सूका : वह क्या बोलेगा, वह तो मेरी जान लेने पर तुला है।

मिनकू : (*सूका की ओर घूमकर*) तो चलो सूका, मैं तुझे अपने घर रक्खूँगा।

भगौती (*सहसा सब छोड़कर उठता है*) यह नहीं होगा।

मिनकू तो यह भी नहीं होगा कि तुम सूका को हत्यारे की तरह अपने घर रक्खो !

[हथेली में खैनी सुरती मलते हुए बायीं ओर से हरखू मौसिया आते हैं और चुपचाप खाट पर बैठकर सुरती मलते रहते हैं।]

भगौती : इस हरामजादी को मैं जैसे चाहूँगा, वैसे रक्खूँगा, किसी से क्या मतलब !

हरखू : *(रोकते हुए)* हाँ-हाँ ! तुम्हें ऐसा कहना चाहिए भगौती ! मिनकू भाई तुम्हारे सगे काका हैं, अलग हैं तो क्या ! ऐसा नहीं कहना चाहिए तुम्हें !

मिनकू : *(आवेश में)* मैं इसका काका नही बनना चाहता। छप्पर पर रक्खे अपने काका को; लेकिन हाँ, तुम्हारे हाथों में सूका को इस तरह नहीं छोड़ सकता।

[सूका सिसकती हुई दरवाजे से अपना मुँह छिपा लेती है और कुछ क्षणों तक वह उसी मुद्रा में रहती है।]

भगौती : कौन होते हो तुम सूका को ले जानेवाले।

मिनकू : भगवान् के सामने का साक्षी हूँ। सूका इन्दर के साथ चली जाती, उसे कोई नहीं रोक सकता था। हाकिम भी यही फैसला देने के लिए तैयार था। क्योंकि इन्दर सूका दोनों राजी थे, लेकिन मैंने ही सब कुछ किया। मैंने सूका को फोड़ा, इन्दर को धमकाया, झूठी-झूठी सहादतें दिलावायीं। भगवान् को साक्षी देकर मैंने भरे इजलास में कहा था कि सूका अपने शौहर भगौती के साथ राजी-खुशी से रहेगी, इसका जिम्मा मैं लेता हूँ।

भगौती : *(झुँझलाहट से)* लिया करो जिम्मा ! जिसकी जैसी करनी, उसकी वैसी भरनी *(हरखू की ओर बढ़ता हुआ)* सुअर की बच्ची ने मुझे घाट-घाट का पानी पिलवाया है।

[हरखू की हथेली से सुरती निकालकर खाता है। उसी बीच सूका सहसा दरवाजे से हटकर सामने दायीं ओर बढ़ती है। एकाएक भगौती ऊपर खूँटियों के सहारे रक्खी हुई लाठियों में से एक लाठी लेकर सूका पर जैसे टूट पड़ता है।]

भगौती : *(रास्ता रोककर)* एक ही लाठी मे जान ले लूँगा, अगर जो एक पैर आगे बढ़ाया, चल घर में ! लौट।

मिनकू : ईश्वर के नाम पर उसे दो मिनट के लिए तो कहीं आने-जाने दो। उसकी तबीयत बहल जायेगी।

भगौती : साल भर तक तो तबियत ही बहलाती रही, दुम उठाए यहाँ से कलकत्ता, फिर न जाने कहाँ-कहाँ तक तो भगती रही। *(सूका से)* चल भीतर।

[सूका को शक्ति से खींचता हुआ दरवाजे पर ले जाता है और दरवाजे पर लेजाकर उसे जोर से भीतर की ओर धक्का देता है, वह भीतर चीखकर गिर पड़ती है और बाहर से भगौती सहसा दरवाजा बंद कर लेता है।]

मिनकू : अपनी ज्यादती से तुम अपना घर अपने हाथों फूँककर दम लोगे भगौती !

[मिनकू अपने रास्ते लौट जाते है।]

भगौती *(उपेक्षा से)* जाओ ! जाओ !! तुम्हें क्या पता ! मुझ पर क्या-क्या बीत रही है *(रुककर)* हरखू मौसिया ! सुना न ! कहते हैं कि सुकिया को छोड़ाकर मैं लाया हूँ ! बड़े छुड़ाने और लानेवाले बने हैं *(रुककर)* सारी तबाहियों को छोड़, सुकिया को घर लाने में मेरे कुल आठ सौ छत्तीस रुपये खर्च हुए हैं !

[लाठी दीवार के सहारे खड़ा कर देता है।]

हरखू : *(समर्थन में)* क्यों नहीं ! बड़ी मरदई की भइया तूने !

भगौती : *(सामने पलॅग पर बैठकर)* सच, मौसिया राम कसम कहता हूँ, सुकिया को घर में आये आज डेढ़ महीने हो रहे हैं, लेकिन हराम है उसका इधर से उधर एक तिनका तक हिलाना, दोनों वक्त भैंस की तरह खा लेगी और घोड़ा बेंचकर सोती रहेगी, रत्ती भर का काम-धाम नहीं । ऊपर से बात-बात पर लड़ना, बात-बात पर धमकी *(रुककर)* और ऊपर से ये मिनकू काका हैं, जब देखो तब दुहाई दौड़ते हैं सूका—सूका ! .... सूका जैसे धूप में सूखी जा रही है !

हरखू : तुम अपना काम देखो भइया, ई है कि, यह तो दुनिया है । ई है कि सूका को तो तुम्हें निभाना है, उसे और कोई क्या जाने !

भगौती : यही तो नहीं सोचते लोग !

हरखू : घबड़ाओ नही लोग धीरे-धीरे सोचेंगे । (रुककर) क्या बात थी जो मिनकू दौड़े आये थे ।

भगौती : कुछ नहीं,सुकिया की ओर से दुहाई देने आये थे । उसको नहीं जानते कि उसकी क्या करनी है । आँगन के पीछेवाले कमरे में पक्के दो मन धान का बीज रक्खा था। नन्दो ने मुझसे बताया था कि सुकिया उसमे से धान चुराती है। अभी कुछ देर की बात है, आज मैंने उसे रँगे हाथों पकडा है । पक्के दस सेर धान निकालकर उसे बेचने के लिए ऐंठने जा रही थी ।

हरखू : *(बीच ही में)* मारा नहीं चोट्टी को !

भगौती : कहाँ भर पेट मार सका, वही तो मिनकू काका गोहारी दौड़े आए थे।

हरखू : ई है कि वे नाहक ही न गोहारी दौड़ते हैं। (रुककर) अच्छा भगौती, छोड़ो इन बातों को, यह तो बताओ कुछ नशा-पानी है, आज दो रोज हो गये, चिलम पर हाथ नहीं रखने को मिला।

भगौती : मैं किससे कहूँ मौसिया। जवानी कसम, आज तीन दिन हो गये थोड़ा सा गाँजा मेरे पास जरूर था, रामायण की पोथी में बाँधकर रख छोड़ा था, लेकिन न जाने किसने मार दिया।

हरखू : तो चलो चइत्तर के ही यहाँ दो दम लगा आयें।

[दोनों उठते है और जाने लगते हैं।]

हरखू : (एकाएक रुककर) अरे! ई है कि दरवाजा तो खोल दो।

भगौती : इसी तरह बन्द रहने दो।

[दोनों चले जाते हैं, क्षण भर बाद, दाएँ हाथ की बगल से बाँस की एक दौरी[1] दबाए और बाएँ हाथ में कुदार लिये हुए अलगू आता है। अलगू की अवस्था भगौती से चार वर्ष कम है, प्रायः छब्बीस वर्ष की। लेकिन स्वास्थ्य और व्यक्तित्व मे यह अलगू से बहुत ही बढ़-चढ़कर हैं। धोती गाँठ के ऊपर फाँड़ के रूप में कमर से समेटी हुई है। बदन नंगा है, सिर पर अँगौछा बँधा है। यह खेत में धान बोकर घर लौटा है। खेत की मिट्टी-कीचड आदि से इसके दोनों पैर पुते हुए हैं, बदन पर कीचड़-मिट्टी के धब्बे स्पष्ट हैं। यह सीधे दरवाजे की ओर बढ़ता है। दरवाजा बन्द देखकर आश्चर्य से एक क्षण खड़ा रहता है, फिर बाएँ हाथ की कुदार एक ओर फेंककर दरवाजा खोलता है।]

[1] दौरी-खँचिया-बर्तन

अलगू : (*पुकारता हुआ।*) नन्दो ! अरी वो नन्दो !!

[नन्दो दरवाजे पर आ खड़ी रह जाती है, कुछ बोलती नहीं, अलगू भीतर जाता है और क्षण भर बाद दौरी घर में रखकर वापस लौटता है।]

अलगू : (*डाँटकर*) बोलती क्यों नहीं रे ! भगौती बाबू कहाँ हैं ?

नन्दो : मैं क्या जानूँ ! अभी तक तो यहीं थे। हरखू मौसिया से बातें कर रहे थे।

अलगू : हूँ ! तो कहीं दम लगाने गए हैं।

[नन्दो भीतर लौटे जाती है। अलगू नेसुहे की ओर बढ़कर कटे हुए चारे को हाथ से उलटता-पुलटता है; उसी बीच एक हाथ में कटोरा और एक हाथ में पानी का गिलास लिये राजी आती है। राजी की अवस्था प्रायः बीस वर्ष की होगी, सूका की अपेक्षा यह स्वस्थ भरी-पूरी है। हाव-भाव और पहिनावे में यह अभी कुछ कुछ दूल्हन जैसी लगती है।]

राजी : (*दरवाजे से एक कदम आगे बढ़कर*) लो मुँह मीठा कर लो।

अलगू : क्यों क्या बात है ?

राजी : खेत में धान की मूठ[1] जो लेकर आये हो। (*देती हुई*) लो यह गुड़-दही है।

[गुड़-दही खाकर, पूरे गिलास का पानी पी लेता है।]

राजी : (*उसी बीच*) दुनिया में बहुत गाँव होंगे, बहुत आदमी होंगे, पर सब इस घर के नीचे होंगे।

अलगू : (*बर्तन राजी को देते हुए*) बाहर से दरवाजा क्यों बन्द था ?

---

१ पहले पहल दिन खेत में बीज बोना

राजी : आज फिर अभी उन्होंने सूका दीदी को मारा है।

अलगू : फिर मारा है।...हूँ...लेकिन दरवाजा क्यों बन्द था ?

राजी : जिससे कहीं वह बाहर न निकले। (रुककर) उन्होंने आज फिर बहुत मारा है।

अलगू : घर में बैठ-बैठकर यही तो करते हैं। कोई और काम-धाम तो है नहीं।

राजी : नन्दो ने आज फिर आग लगायी है। खुद तो अनाज बेंच-बेंचकर पैसे गाँठती है, और झूठ-मूठ आज उसने सूका दीदी को धर पकड़वाया। खुद कपड़े मे धान बाँधकर खिड़की के रास्ते उसे निकाल रही थी, लेकिन निकाल न सकी, फिर उल्टे अपने पेट का पाप सूका दीदी के सिर मढ़ दिया।

अलगू : फिर।

राजी : फिर क्या ! उन्होंने बेकसूर दीदी को मारा। (रुककर) और इस समय भी नन्दो भीतर उससे लड़ रही है।

अलगू : क्यों ?

राजी : एक गाँठ हल्दी और प्याज के लिए।...कहती है कि घर में इतनी हल्दी और प्याज कहाँ है कि रोज-रोज बदन भर में मालिश की जाय।

अलगू : (बिगड़कर) मारती क्यों नहीं उसे। सूका भौजी इस तरह डरती क्यों है। रोज-रोज उस पर इतनी मार पड़ती है और चोट पर दवा के लिए एक गाँठ हल्दी का उसे मुँह देखना पडता है। मैं देखता हूँ अभी।

[*आवेश में भीतर चला जाता है। राजी दरवाजे पर ही खड़ी रह जाती है। सहसा बायीं ओर से खाँसते हुए हरखू आते हैं। राजी उन्हें देखते ही अपने माथे का आँचल नीचे खींच लेती है और खिसककर किंवाड़ की ओट में चली जाती है। हरखू*

खाँसते हुए पलँग पर बैठ जाते हैं, कुछ ही क्षणों बाद भीतर से अलगू झुँझलाहट में यह कहता हुआ बाहर निकलता है।]

अलगू : घर क्या है भूतों का डेरा बना रखा है।......बडी सिर पर चढी रहती है, जैसे वह आदमी ही नहीं है।

हरखू : क्या बात है अलगू भइया ?

[*अलगू परेशान-सा कमर पर हाथ रखे चुप खड़ा रह जाता है।]*

हरखू : क्या बात हुई आखिर ?

अलगू : यह जो नन्दो है.....यह तो और भी आसमान पर चढी रहती है। मुँह की लगी डोमड़ी गावै ताल-बेताल (*रुककर*) सुना मौसिया, जबसे सूका भौजी को घर लाये हैं, कोई न कोई बहाना ढूँढकर उसे मारते हैं, ऊपर से यह नन्दो है, वह भगौती बाबू का दायाँ हाथ बनी है। चोट पर रखने के लिए भौजी से एक गाँठ हल्दी के लिए लड रही थी। सुना होगा कही ऐसा !

हरखू : राम ! राम !! ऐसा नहीं करना चाहिए उसे।

अलगू : लेकिन नन्दो का क्या बूता कि वह यह हिम्मत दिखाती... ...यह सब भगौती बाबू की चाल है। मौत की साया की तरह दिन रात पड़ी रहती है सूका के पीछे।

हरखू : राम......राम......ई है कि यह ठीक नहीं।

अलगू : (*झुँझलाया हुआ*) ठीक तो नहीं है, इसे तो सभी कहते हैं, लेकिन कभी किसी ने भगौती बाबू को मना भी किया है, डाँटा-फटकारा भी है उन्हें !........ तुम भी तो मौसिया जब देखो तब उन्हें गाँजा पिलाते फिरते हो, कभी उन्हें डाँटा है ?

हरखू : मैं तो हरदम समझाता हूँ उसे, कि सूका को अब तिनके से भी न मारो। उसे सुख दो, विश्वास दो.........लेकिन यह है कि मानता ही नहीं !......क्या करूँ मैं !

राजी : (*किवाड़ के पास से ही, एकाएक*) समझाते नहीं आग हो.. ......घर में लगे आग गाँव खेले फाग।

हरखू : यही तो कहोगी ही, लेकिन पूछो न भगौती से, मैं उसे लाख बार समझा चुका हूँ। (*रुककर*) मैं तो फुलवा की घटना देख चुका हूँ......ई है कि हरिहरपुर की फुलवा। तुमने तो वह घटना सुनी ही होगी। ई है कि वह भी किसी के साथ कानपुर भाग गई थी। एक साल बाद ई है कि पकड़ी गई, धूम से मुकदमा चला। छुड़ाकर अपने मरद के घर आयी। एक दिन उसके मरद ने उसे ताना देते हुए उस पर हाथ उठा दिया। उसी रात फुलवा उसी आदमी के साथ फिर भाग निकली और आज पन्द्रह वर्ष हुए, उसका पता नहीं।..... .. ई है कि मैं इसी बात को भगौती से रोज समझाता हूँ, लेकिन वह क्यों माने ?

अलगू : सुना है कि अभी भगौती बाबू ने मिनकू काका को फटकार दिया है।

हरखू : ई है कि क्या करे कोई! जा को प्रभु दारुन दुख दीन्हा, ताको मति पहिले हरि लीन्हा।

अलगू : (*परेशान स्वर में*) देखो न, दरवाजे की हालत देखो। आज चार दिन हुए दरवाजे पर झाड़ू तक नहीं दिया गया। (*दिखाता हुआ*) दिन भर में यही इतना घास लेकर आये हैं, वह भी पूरा काटा नहीं गया, नेसुहे पर पड़ा है, और घर में आग लगाकर न जाने कहाँ दरवाजे से खिसक गये हैं।

हरखू : शायद वह कहीं खेत में पानी देखने गया है।

अलगू : (*व्यंग से*) खेत में पानी देखने गया है! हुँ........यह नहीं कहते कि कहीं गाँजा पीने गये होंगे! आज खेत ही देखते होते तो रोना क्या! गाँव में लोग चार-चार पाँच-पाँच बीघे धान बो चुके, और मुश्किल से आज मैं पन्द्रह बिस्से का एक खेत निपटा पाया हूँ, और बाकी सारे सिवान का पानी बह गया, या सूख गया। अषाढ़ का पहला-पहला पानी था, पूरा गाँव अपनी खेती में लगा था, लेकिन दरवाजे से उठकर इन्होंने खेत का मुँह तक न देखा।

[इसी बीच अधारे हलवाहा आता है, मिट्टी और कीचड़ में सना हुआ, बरामदे में नेसुहे की ओर बढ़कर दीवार की खुली हुई आलमारी में से बरारी और एक रस्सी निकालता है।]

अलगू : क्या बात है अधारे!......खेत निपट चुका न!

अधारे : हाँ वह तो निपट चुका बाबू; कोन-किनारा सब ठीक है।

अलगू : अब क्या करने जा रहे हो?

अधारे : देख आयन हैं बाबू, डँड़वावाले खेत में कुछ पानी है, कुछ पानी भगवानदीन बाबू के परती में से कटाय लिहेन हैं, अब तो अपने खेत में यतना पानी ह्वै ग बाय कि वह मा जोत-हेंगाय कै अमिला[1] मार दिहा जाय।

अलगू : हाँ, हाँ, बिलकुल ठीक। और कल सुबह ही भोर में उसे बो लिया जायगा। उसमें घास भी तो बहुत लगी थी।

अधारे : अब तो सब ठीक ह्वै जाई बाबू।

---

१ धान के खेत को हल से जोतकर, हेंगा से उसे समतल करके उसे उसी हालत में छोड़ देना

अलगू : क्या ढूँढ़ रहे हो ?

अधारे : बरारी ढूँढ़ रहा हूँ।

अलगू : बरारी टूट गई है क्या ?

अधारे : हाँ.........।

अलगू : अच्छा रुको, मैं नयी बरारी देता हूँ।

[भीतर जाता है, और क्षणभर बाद बरारी लिये वापस आता है।]

अलगू : लो, इसे ले जाओ।

[अधारे लेकर जाने लगता है।]

अलगू : चलो तब तक खेत जोतो, हेंगाने के लिए मैं खुद आता हूँ!.........देखो न, बैलों को खिलाने के लिए थोड़ा-सा हरेरा[1] तक नहीं तैयार हुआ। नेसुहा अपनी जगह रो रहा है, मैं अपनी जगह रो रहा हूँ।

हरखू : ई है कि आज तो बैलों की सानी में कुछ हरेरा जरूर होना चाहिए, अषाढ़ की पहली बोआई, पहले पानी का लेवा[2] है, बैलों का कलेजा कँप जाता है।

अलगू : जाओ तुम अधारे। जरा खूब दबाकर जोतना, और कहीं आँतर न पड़ने पाये, बड़ी दूब लगी है खेत में।

[अधारे चला जाता है।]

अलगू : (*झुँझलाहट से*) हूँ! अच्छा तमाशा है हमारी गृहस्थी का! मर-मर करैं बैलवे बैठे खाँय तुरंग।

१ हरी घास, चारा

२ पानी से भरे हुए खेत को जोतना, हेंगाना, फिर उसी कीचड़ में धान बोने की क्रिया

[*नेसुहे पर बैठता है और तेजी से चारा काटने लगता है।*]

अलगू : (*एक क्षण रुककर*) तुम्हारे यहाँ कितने बीघे खेत बोये गये मौसिया, कुछ पता है कि नहीं ?

हरखू : कुछ जरूर बोये गये हैं, ई है कि ..(*रुक जाते हैं।*)

[*उसी समय दरवाजे पर सूका दिखायी पड़ जाती है, दायें हाथ से वह अपनी बायीं बाँह पकड़े है, पूरे हाथ में हल्दी पुती है। वह एक क्षण पूरे दरवाजे को देखती है, अलगू चारा काटने में व्यस्त है। सूका की दृष्टि फिर हरखू पर जमती है।*]

सूका : (*व्यंग से*) मेरा पहरा देने के लिए दरवाजे पर बैठाये गए हो क्या ?

हरखू : (*बिगड़कर*) ई है कि अलगू मना कर दो सूका को, मैं तुम्हारे दरवाजे पर ताना-बोली सुनने के लिए नहीं आता। ई है कि मैं किसी का दिया-लिया नहीं खाता हूँ।

अलगू : (*घूमकर देखता हुआ*) क्या बात हो गयी ?

हरखू : ई है कि सुनो अपनी सूका की बात, कहती है मुझसे, कि मेरा पहरा देने के लिए दरवाजे पर बैठे हो क्या ?

[*अलगू चुपचाप चारा काटता रहता है, क्षण भर बाद हरखू उठते हैं और अपने रास्ते चल देते हैं। सूका निश्चेष्ट उदास दरवाजे से लगी खड़ी रहती है। कुछ ही क्षणों में अलगू चारा काट चुकता है, चारा बटोर कर उठता है, गेंड़ासे को अलमारी में रखता है।*]

अलगू (*सूका को देखकर*) जरा राजी को बुलाना भौजी !

[सूका भीतर चली जाती है; उस बीच, अलगू बरामदे के दूसरे भाग में जाकर अनाज से भरे हुए दोनों बोरो को क्रमशः उठाता है और अन्दाज लेकर वहीं रख देता है। इसी बीच बरामदे में राजी आती है।]

अलगू : ये बोरे बाहर बरामदे में कब तक रक्खे रहेंगे?

राजी : पता नही, उन्होंने यहीं रखवाया है, कहते हैं कि घर में से धीरे-धीरे बिक जायगा।

अलगू : कैसे?

राजी : कहते हैं कि सूका दीदी बेंच लेगी।

अलगू : अजीब तमाशा है! (*रुककर*) और दरवाजा सूना पाकर अगर कोई यहीं से दोनों बोरे मार दे तो?

[राजी चुप रहती है। उसी बीच, दौड़ा हुआ अधारे आता है, राजी दरवाजे पर चली जाती है।]

अलगू : क्या है अधारे?

अधारे : (*घबड़ाया हुआ*) परभुआ के विच्छी छेद दिहिस!

अलगू : (*चिन्ता से*) बिच्छू ने डंक मार दिया, कहाँ मारा है?

अधारे : दाएँ पैरवा के कानी उँगुरिया में!

अलगू : (*बढ़कर ताख में रखे गंदे बोतल को लेता है*) लो, तब तक उस जगह यह टिंचर लगाते रहना। (*दे देता है*) जाओ मैं अभी आता हूँ, फिर मंत्र से झार दूँगा...... (*रुककर*) उसकी उँगली बाँध दी है न?

अधारे : हाँ बाबू?

[बोतल लिए भाग जाता है। राजी दरवाजे के बाहर आ जाती है।]

अलगू : जरा चार बीरा सुरती खेती आना; मैं भी खेत जा रहा हूँ।

[राजी भीतर चली जाती है, अलगू एक क्षण के लिए दरवाजे के दायें मोढ़े पर बैठ जाता है। राजी आती है, उसके एक हाथ में कच्ची सुरती है, एक हाथ में बनियाइन है।]

अलगू : दरवाजा देखती रहना।

राजी : यह बनियाइन तो पहन लो

अलगू : *(जाता हुआ)* क्या होगी बनियाइन !......बस, ऐसे ही ठीक है। दरवाजा सूना मत छोड़ना, हाँ !

[तेजी से चला जाता है, राजी दरवाजे पर अकेली खड़ी रह जाती है। कुछ क्षणों के बाद, भीतर से दरवाजे पर आती हुई नन्दो की झुँझलाहट भरी आवाज सुनायी पड़ती है।]

आवाज : किसका मन नहीं चाहता !...हूँ, *(दरवाजे पर आकर)* दरवाजे पर खड़ी-खड़ी नजारा मारेगी और.........।

[क्षण भर के लिए चौखट पर रुक जाती है, और आवेश में दायीं ओर मुड़ती है।

राजी : *(रोकती हुई)* और क्या,...वह भी कहती जाओ न ! तुम्हें किसका डर है ?

नन्दो : *(रुककर)* हाँ हाँ कहूँगी, लाख बार कहूँगी, पीठ पीछे चुगली तुम्हे खूब आती है ना ! *(झगड़ती हुई)* लेकिन कर क्या लिया चुगली करके ?

राजी : भला तुम्हारा कोई क्या कर लेगा !

नन्दो : *(लड़ती हुई)* नहीं नहीं, खूब जी भर कर चुगली कर लो, जिससे तुम्हारी छाती ठंडी हो जाय !

राजी : *(बीच ही में)* पानी में आग लगाना तुम्हें ही आता है, यह सब तुम्हें ही मुबारक रहे।

नन्दो : और तुम्हें ?

राजी : मुझे क्या ! मेरा जो होना था हो गया, लेकिन तुम्हें उस दिन पता लगेगा, जब तुम अपने घर जाओगी, पराये घर में दूलहन बन के बैठोगी और तुम्हें जब तुम्हारी ननद इसी तरह बिच्छू के डंक मारेगी, तब पता लगेगा, अभी क्या !

नन्दो : लगा करे पता ! *(उपेक्षा से)* बड़ी बन के आयी है !

राजी : मैं क्या बड़ी हूँ, बड़ी तो तुम हो इस घर की, *(एकाएक चुप होकर भीतर मुड़ जाती है; उसी समय भगौती दिखायी पड़ता है, उसके साथ तेजई और मूरत भी हैं। तीनों के आते ही नन्दो रो पड़ती है।)*

भगौती : *(तेजई और मूरत के साथ बाएँ से प्रवेश करते ही)* क्या है नन्दो ! क्या बात हुई ! *(पास जाकर)* अरे बोलती क्यों नहीं ?

नन्दो : *(आँखें मलती हुई)* घर का घर मेरा दुश्मन है !

भगौती : लेकिन कुछ बात तो बताओ !

नन्दो : राजी झूठे-झूठे अलगू से चुगली करती है, सूका मुझसे अलग लड़ती है, तीन के तीनों कहते हैं कि तू खूब पानी में आग लगाती है *(रुककर)* मैं दिन भर, मर-मर के अकेली काम करूँ, और वे दोनों एक मुँह हो के बैठी-बैठी मुझसे लड़ती हैं।

भगौती : *(सोचता हुआ)* हूँ...*(मुट्ठी बाँधकर सिर हिलाता है।)* *[तेजई और मूरत खाट पर बैठ जाते हैं।]*

नन्दो : सूका को दिन भर सोने से छुट्टी नही मिलती, राजी को जब देखो तब दरवाजे पर खड़ी नजारा मारती है......।

भगौती *(बीच ही में क्रोध से)* घबड़ाओ नहीं, मैं सब ठीक कर दूँगा, मैं सबकी नस-नस पहचानता हूँ।

[राजी बाहर चली जाती है, भगौती कुछ क्षणों तक मुट्ठियाँ भीचे खड़ा रहता है।]

भगौती : *(तेजई और मूरत की ओर बढ़ता हुआ)* बुड्ढा हो जायगा लेकिन मेरे अलगुआ को अकल नहीं आयेगी।

तेजई } मूरत } : *(समर्थन में)* बिल्कुल ठीक !

भगौती : उल्लू कहीं का, वह भी सुकिया के लिये बड़ी हमर्दर्दी रखता है।

तेजई : पता नहीं क्यों !

मूरत : कुछ मरद जनम से ही मेहरे होते हैं। *(नाटक करता हुआ)* औरत का नाम लेते ही अहा...हा...हा......... लछमी है, गऊ है, उस पर हाथ नहीं !

तेजई : बस चन्दन लगाकर उन्हें दोनों वक्त पूजो..... हुँ...... पूजो नहीं सूजो...*(रुककर)* औरत ! औरत की जात, इनका तो मुँह तोड़कर रख दे..... सारा जहर तो इनकी आँख और जबान में है।

भगौती : और भी मजा देखो अलगुआ का ! एक ओर तो सूका से हमर्दर्दी रखता है, हरदम मुझे चेतावनी देता है कि उसे मारो नहीं, गाली न दो, नहीं तो वह फिर भाग जायेगी, और दूसरी ओर *(रुककर)* सूका के मुकदमे में जो इतने रुपये खर्च हो गये हैं उसके लिए दिन-रात भुनभुनाता रहता है।

[नन्दो उसी समय झाबे में ऊपले लिये भीतर जाने लगती है।]

भगौती : नन्दो !...जरा हुक्का बोझ कर दे जाना !

[नन्दो भीतर जाती है।]

मूरत : [*मजे से*] अलगू कहता है कि सूका को मारो नहीं, नहीं तो वह फिर भाग जायगी।

[हँसता है।]

भगौती : अरे बकने भी दो उसे (*रुककर*) मूरत भाई! सुकिया को तो मैं इस लायक ही न रखूँगा कि वह कहीं भाग सके।

मूरत : बिल्कुल सही, मै भी यही सोचता हूँ, न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।

तेजई : भगौती बाबू, मैं तो यही सोचता हूँ कि पहले इंदरवा से बदला लिया जाय, आज कल खूब धुलाकर बजार में घूमता है।

मूरत : इंदरवा को तुमने बजार ही में देखा है! तब क्या देखा, अरे मैंने तो कई बार ताड़ी के ठीके पर देखा है।

तेजई : धत् तेरे की! बाभन और ताड़ी! राम...राम...राम... राम···।

भगौती : अरे, उस बहे की क्या चलाते हो?

[नन्दो हुक्के पर भरी चिलम लिये आती है, और भगौती को देकर भीतर लौट जाती है।]

भगौती (*फूँक मारता हुआ*) तो इंदरवा आज कल घर ही पर रहता है! (*फूँक मार कर*) तेजई भाई! एक बार तो उससे दिल का अरमान पूरा ही करना है।

[तेजई को हुक्का देता है]

भगौती हनुमान जी वह दिन न जाने कब पूरा करेंगे!

मूरत उसमें क्या रक्खा है भगौती! उससे तो बदला लेना दाएँ-बाएँ हाथ का खेल है। पहले तो घर फूँको उसका!

तेजई : *(फूँक मारते हुए)* नहीं नहीं पहले घर नहीं, पहले उसके दरवाजे पर जो बैल बँधे हैं, दखिनहा बैल की जोड़ी, उन्हें खूँटा से ही मार दो ! *(फूँक लेकर)* फिर उन्हें ढूँढ़ने के लिए जब वह इधर-उधर भटकेगा, फिर क्या ! कहीं ऊँचे-नीचे चार डंडे भी बजा दो ।

भगौती : *(बीच ही में)* चार ही डंडे नहीं तेजई भाई ! बिना हाथ-पैर तोड़े दम कहाँ !

तेजई : भाई वही बात मैं भी कर रहा हूँ, चार डंडे के माने यह थोड़े ही कि गिनकर चार डंडे, अरे मारो छठी का दूध याद आजाये ।

तेजई : और क्या ! उसे ऐसा परसाद दो कि जिन्दगी भर याद रहे, पता चल जाय कि कमालपुर गाँव से उसका पाला पड़ा था ।

[तेजई हुक्के पर फूँक मार कर उसे मूरत को दे देते हैं ।]

मूरत : *(फूँक मारते हुए)* इंदरवा को एक दिन ताड़ी के ठीके ही पर क्यों न घेर लिया जाय !

भगौती : *(उत्साह से)* एक बात और भी है मेरे मन में, बिपता चमार है ना, डिहवा पर का, वह पाँच रुपये में तैयार है । उससे इंदरवा के घर में आग क्यों न लगवा दी जाय ।

मूरत : *(फूँक लेकर)* सब होगा ! सब होगा ! वह भी होगा... लेकिन धीरे-धीरे । बुजुर्गों ने कहा है भगौतीबाबू ! धर्म करते और दुश्मन से बदला लेने में घबड़ाना नहीं चाहिए ।

तेजई : क्यो नहीं ! दोनों एक ही तरह के तो धर्म है ।

भगौती : और इधर मैं तबतक सुकिया का दिमाग ठीक ही कर दूँगा।

तेजई : हाँ, इधर भी बिल्कुल गफलत नहीं, यही सोचो कि एक दुश्मन तो घर ही में मौजूद हैं *(रुककर)* सुकिया के हाथ से दाना-पानी तो नहीं लेते भगौती!

भगौती : अरे राम कहो भइया! आज तक मैंने उसको चौके में पैर नहीं रखने दिया है, जो वह गयी, उसके हाथ का छुआ मैं दाना-पीना लूँगा! राम .राम ..*(रुककर)* मैंने अपने बर्तन तक उससे नहीं छुलाये! एक पीतल की थाली, एक काँस का लोटा, यही दोनों मैंने उसे दे दिया है। थाली में ऊपर से खाना डाल दिया जाता है, और लोटे में ऊपर से पानी . बस !

तेजई }
मूरत } : बहुत ठीक!

तेजई : घर की सारी कुटाई-पिसाई का काम उससे लो, और तिल भर इधर-उधर करे, तो देहू जूता.. देहू डंडा!

भगौती : चोट्टी अव्वल दर्जे की है भइया!

तेजई : *(तेजी से)* क्या बात करते हो भगौती बाबू तुम भी! अरे मार के आगे तो भूत भागता है।

[मूरत हुक्के को खत्म करके दरवाजे के पास खड़ा कर देता है, और भगौती के पास खड़ा हो जाता है।]

मूरत : *(मुस्कराता हुआ)* लेकिन जरा उसको माना-जाना भी करना हाँ!

[तेजई को देख कर अपनी दायीं आँख दबा देता है। और मूरत तेजई हँस पड़ते हैं।]

भगौती : [चुप है]

मूरत : भाई मतलब पर तो आदमी गधे को भी दादा कहता है, सूका तो फिर भी...।

तेजई : और क्या !...उसे अब भी पहना-ओढ़ाकर खड़ाकर दिया जाय तो कमालपुर क्या, इस पूरे इलाका में वैसी औरत नहीं है। यह तो तुम्हारे फिर से भाग जागे हैं भगौती बाबू !

मूरत : बस, सब करतब की बात है। अगर करतब है तो बस, मजा करो; मार-पीट बाँध-छोर...दुलार-पुचकार...किसी भी तरह (रुककर) चीज अपनी है, हर तरह से अपनी है—ब्याह कर भी, मुकदमे से जीत कर भी, फिर इसमें किसी का क्या साझा, चाहे वह मिनकू काका हों, चाहे अलगू हों, चाहे सारी दुनिया एक ओर हो तो क्या ! क्या कर लेगा कोई !...अपनी गाय है, चाहे जैसे हम उसे बाँधें, चाहे जैसे हम उसे दुहें।

[इसी बीच एकाएक दरवाजे पर किवाड़ के पीछे कुछ आहट होती है, मूरत और तेजई दोनों चुप हो जाते हैं, और दरवाजे की ओर आपस में संकेत करके जैसे वे दोनों अपराध-ग्रस्त से हो जाते हैं। भगौती मुड़कर दरवाजे की ओर देखता है।]

भगौती : कौन ?

[बिना कुछ बोले सूका दरवाजे पर बढ़ जाती है, उसके आँचल और दोनों हाथों में हल्दी के दाग स्पष्ट हैं, वह एक घायल दृष्टि से तीनों को देखती है, पर कुछ बोलती नहीं।]

भगौती : (क्रोध से) तुझे तिल भर लाज-शरम नहीं, (तेजई की ओर देखकर) देखा न, कोई भी दरवाजे पर बैठा हो, यह बेशरम इसी तरह दरवाजे पर आ टपकती है।

[सूका निश्चेष्ट खड़ी रहती है, भगौती आवेश में बढ़ता है और सूका को पूरी ताकत से खींचकर तेजी से उसे दरवाजे के भीतर ढकेल देता है। और क्रोध से हाँफता हुआ तेजई और मूरत के पास चला आता है। सूका न तो रोती है, न चीखती है, वह फिर जैसे दुराग्रह से दरवाजे पर आ खड़ी होती है। मूरत और तेजई भगौती से बिना कुछ बोले-चाले चुपके से चले जाते हैं। कुछ क्षण बाद भगौती आग्नेय दृष्टि से सूका को देखता है, उसी समय दायीं ओर से आवाज आती है 'जै राम जी की भगौती बाबू !' भगौती उधर देखता है, सामने रामदीन साहु एक आदमी के साथ आते हैं।]

भगौती : *(घबड़ाहट से)* जै राम साहु ·····जै राम !

[रामदीन मैली धोती और कुर्ते में हैं, सिर पर तेल में डूबी हुई पल्लेदार टोपी है। कंधे से पीठ पर सम्हाले हुये अँगौछे में कुछ बोरा-बोरिया बँधे हैं। पैर में देशी म्युकट जूते। साथ का आदमी केवल घुटने तक धोती पहने है, सिर पर एक फटा-पुराना अँगौछा बँधा है। सूका अपने-आप दरवाजे से हटकर किवाड़ के पीछे चली जाती है।]

भगौती : *(हीनता से)* साहु जी, और सब कुशल-मङ्गल है न··· *(आदर से)* आवो पलँग पर बैठो······बैठो न !

रामदीन : सब ठीक है, ऐसे ही अच्छा है ! *(रुककर)* कहो, घर में सब राजी खुशी है न !

भगौती : नहीं साहुजी ! घर की हालत तो बहुत खराब है, नहीं तो मैं अब तक खुद तुमसे मिलता।
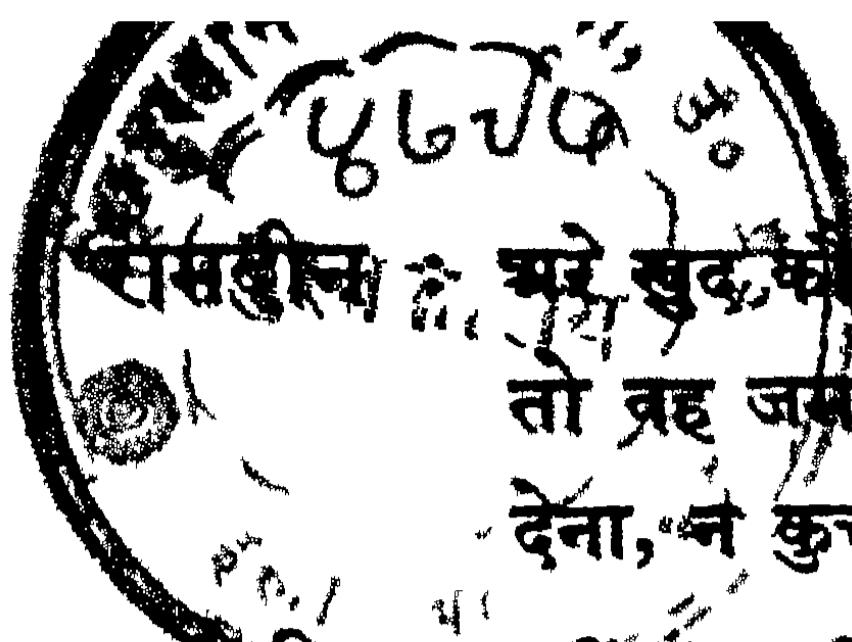
रामदीन : अरे सूद कौन आता है ! ये सब तो कहने की बातें हैं, अब तो वह जमाना ही न रहा, एक हाथ से लेना, दूसरे से दे देना, न कुत्ता भूँकता था, न पहरू जागते थे ।

भगौती : नहीं साहुजी, ऐसी बात नहीं, मैं तुम्हारी देनी साफ करने के लिए दिन-रात चिंता में रहता हूँ, क्या करूँ साहुजी, हाथ की तङ्गी चाहे जो कुछ करा ले !

रामदीन : *(गंभीरता से)* क्या बात बनाते हो भगौती ! बीस बार मैं तब से आया हूँ तुम्हारे दरवाजे पर । आज दूँगा, परसों दूँगा, उस महीने में दूँगा, पहले पाख में दूँगा, फसल कटने पर दूँगा, लेकिन तुमने एक भी वादा न पूरा किया, ऐसे भी कहीं लेन-देन चलती है । *(स्वर में तेजी बढ़ती जाती है)* गाँठ से भी दो, और उलटे दरवाजे भी झाँको ।

भगौती : राम कसम साहुजी ! बस एक मोहलत और दे दो, फिर न देना ।

रामदीन : मैं अब एक घंटे के लिए नहीं मान सकता ! आज मैं ले के जाऊँगा । पचास रुपये तो पिछले हुए, उसके आज दो साल हुए, अगर उसके सूद लगाता तो अब तक वह राई से पहाड़ हो गया होता ।

भगौती : यह तो तुम्हारी मुझ पर दया है साहुजी !

रामदीन : *(झुँझला कर)* तभी तो दया का फल तुम मुझे दे रहे हो ! *(रुककर)* पचास पिछला, और पूरे ढाई सौ बाद का! *(बिगड़कर)* यह सब कहाँ जायगा ! मुझे उल्लू बनाते हो *(रुककर)* हमारा तुम्हारा वादा तो यह था कि तुम सूका के मुकदमे से फुरसत पाते ही सारा रूपया अदा कर दोगे । कहाँ है आज वह शर्त ! यही मर्द बनते हो ?

भगौती : यह सब समय कहलवाता है साहुजी ! नहीं तो मैं सहनेंवाला आदमी नहीं था ।

रामदीन : तो दे न डालो, क्यों सहते हो ?

[भगौती चुप है, दरवाजे पर किवाड़ के पीछे सूका और राजी इस तरह खड़ी दिखायी देती हैं, जिससे भगौती की दृष्टि उन पर न पड़े ।]

भगौती : वक्त पर सबको सहना पड़ता है साहु !

रामदीस : *(गंभीरता से)* मैं तुमसे बँहस करने नहीं आया हूँ भगौती ! मैं अपनी देनी वसूल करने आया हूँ ।

भगौती : बस एक मुहलत और दे दो साहु ! अषाढ़ की बोउनी खत्म होते ही मैं कम से कम पिछला पचास रुपया तुम्हें राम कसम अदा कर दूँगा ।

रामदीन : यह नहीं हो सकता । मैं आज कुछ ले के ही जाऊँगा । *(बायीं ओर बढ़ कर)* यह बोरे में क्या है ?

भगौती : *(घूमकर)* धान है साहु !...बीज के धान हैं, कुल यही दो बोरे हैं और पक्के सोलह बीघे धान बोने हैं !

रामदीन : कितने-कितने के बोरे हैं !

भगौती : दो-दो मन के ।

रामदीन : तो बस, यही चार मन धान बीज के है तुम्हारे पास, और तुम्हें पक्के सोलह बीघे बोने हैं *(रुककर)* क्या झूठ बोलते हो, इतना ही धान है तुम्हारे घर में ?

भगौती विश्वास मानो साहु ! और तो इस साल बिसार[1] लेना है ।

१ बीज, कर्ज के रूप में लेने की प्रणाली, सेर का सवासेर ।

रामदीन : (*बिगड़कर*) मुझे इससे कुछ मतलब नहीं, चाहे तुम बिसार लो, चाहे बिसार दो, मुझसे कोई मतलब नहीं ! (*मजदूर को आज्ञा देता हुआ*) चल उठा वह एक बोरा ।

[मजदूर आगे बढ़ता है, भगौती रामदीन से हाथ जोड़ता है, लेकिन रामदीन नहीं मानता, वह तेजी से एक बोरे को मजदूर के सिर पर उठा देता है, मजदूर चल देता है, पीछे-पीछे रामदीन जाता है । भगौती उदास दृष्टि से देखता रह जाता है, दूसरी ओर से हरखू आते हैं ।]

हरखू : (*आते-आते*) अरे ई है कि भगौती तुम यहीं हो ! ओ हो ! मैंने तो समझा कि तुम्हारा दरवाजा सूना है और रामदीन साहु बिना तुम्हारे जाने ही धान का एक बोरा उठवाये लिये जा रहे हैं ।

भगौती : (*चुप है ।*)

हरखू : कर्ज का मामला ऐसा होता ही है, ई है की क्या किया जाय ! (*रुककर*) चलो अच्छा ही हुआ, जो कुछ भी सिर से टला, किसी तरह टला तो ।

भगौती : (*पीड़ा से*) लेकिन यह बीज का धान था हरखू मौसिया ।

हरखू : आखिर रामदीन साहु के कितने रुपये बाकी हैं !

भगौती : (*पलँग के पायताने बैठकर*) पचास पहले का था, और ढाई सौ सुकिया की कमाई है ।

[कुछ क्षणों तक दोनों चुप रहते हैं ।]

हरखू : हाँ, एक बात भले याद आयी भगौती !

भगौती क्या बात ?

[हरखू दरवाजे की ओर झाँकते हैं, फिर बढ़कर दरवाजे पर जाते हैं और बाहर से किवाड़ बन्द कर लेते हैं ।]

हरखू : (*आकर भेद भरे स्वर से*) ये जो तुम्हारी छोटकी है, राजी, अलगुआ बहू, ई है कि अव्वल दरजे की चुगलखोरिन है, हरदम तो दरवाजे से लगी रहती है !

भगौती : और सुकिया क्या कम है!

हरखू : खैर, उसकी तो बात ही जाने दो ! (*रुककर*) हाँ बात ई है की, बहरैची अबकी पक्के सेर भर बुटवलिया गाँजा ले आया है । क्या कल्लीदार गाँजा है भगौती, देखते ही तबियत नशीली हो जाती है ।

भगौती : सच मौसिया !

हरखू : हाँ भाई ! (*अँगोछे के कोने की गाँठ खोलते हुए*) यह देखो न नमूना, गाँजा है कि चरस की पुड़िया हाय ! हाय !!

भगौती : (*सूँघता हुआ*) चीज तो बहुत उम्दा है मौसिया !

हरखू : और मैंने बहुत ही सस्ते में उसे फाँस लिया है, पूछो कैसे ! बात ई है कि बहरैचिया को जोन्हरी के बीज की जरूरत है, और तुम्हारे घर का बीज गाँव भर में मशहूर है । (*ऊपर खूँटी की ओर संकेत करके*) बस इसी एक झोप्पे पर वह पूरा गाँजा देने के लिए तैयार है ।

[बन्द किवाड़ पर भीतर से एकाएक आवाज आती है ।]

भगौती (*दरवाजे की ओर बढ़कर*) कौन ?

[भीतर से आवाज 'मैं हूँ, मैं हूँ भइया' ।]

भगौती : ओह नन्दो ! अच्छा (*किवाड़ खोलता है*) क्या है ?

नन्दो : थोड़ा-सा गोबर लेने जा रही हूँ।

भगौती : (*पास ही रखे हुक्के से चिलम निकालकर देते हुए*) पहले यह चिलम भर ला !

[नन्दो वापस लौट जाती है, भगौती तेजी से हरखू की ओर मुड़ता है और आँखों से संकेत करता हुआ ऊपर दीवार की खूँटी से टँगे जोन्हरी के झोप्पे को उतारता है और हरखू के अँगौछे में बाँध देता है। हरखू को देता है, हरखू झोप्पे को लिये तेजी से बाँयीं ओर मुड़कर बाहर चले जाते हैं। भगौती क्षण भर तो घबड़ाया हुआ उसी ओर देखता खड़ा रहता है, फिर मुड़ता है, दूसरे ताख में बँधे रखे हुए बस्ते को उठाता है, पलँग पर बैठ जाता है, बस्ते को खोलकर उसमें से आल्हा की पोथी खोलता है और चुपचाप उसे पढ़ता हुआ झूमने लगता है। क्षण भर बाद चिलम लिये नन्दो आती है, हुक्के पर चिलम रखकर भगौती को देती है।

भगौती बिना कुछ बोले हुक्का गुड़गड़ाने लगा है, नन्दो जल्दी से आल्हा की पोथी को फिर बाँधकर ताख में रख देती है। सहसा उसकी दृष्टि ऊपर सूनी खूँटी पर जाती है।]

नन्दो : (*घबड़ाकर*) अरे ! खूँटी से जोन्हरी का झोप्पा कहाँ चला गया ?

[भगौती हुक्का पीता रहता है।]

नन्दो : बोलते क्यों नहीं ?

भगौती : (कश लेकर) जरूरत पड़ते ही कहीं से बिसार आ जायेगा!

नन्दो : (आश्चर्य से) बिसार! और अपना यहाँ टँगा हुआ झोप्पा?

भगौती : बहरैची के घर गया, खबरदार कहीं जो जबान हिली!

[नन्दो कुछ क्षण हतप्रभ सी खड़ी रहती है, फिर घर में वापस लौट जाती है। भगौती चुपचाप हुक्का पीता रहता है। कुछ क्षणों के बाद दायीं ओर से जोखन का प्रवेश होता है, यह भी रामदीन साहु की भाँति है, लेकिन इनमे अपेक्षाकृत हीनता का भाव है।]

जोखन : *(प्रवेश करते ही)* जै रामजी की भगौती बाबू!

[देखते ही भगौती हुक्के को दरवाजे के पास दीवार के सहारे खड़ाकर देता है, और बढ़कर जोखन का स्वागत करता है।]

भगौती : राम-राम साहु! आवो बैठो!

[दोनों पलँग पर आमने-सामने बैठ जाते हैं।]

भगौती : बाल-बच्चे सब अच्छे से हैं न साहु!

जोखन : सब पंच की दुआ है भइया!

[सहसा दोनों कुछ क्षणों तक अनायास चुप हो जाते हैं।]

जोखन *(प्रयत्न करके)* भगौती बाबू आज मेरा भी कुछ हिसाब साफ कर दो!

भगौती अभी तो हाथ बहुत तंग है साहु! और अषाढ़ का महीना है।

जोखन लेकिन रामदीन साहु तो आज एक बोरा धान ले गये हैं, मेरे भी तो रुपये सोलह ही आने के हैं, कम तो नहीं न!

भगौती : क्या बताऊँ साहु! (*बोरे की ओर संकेत करके*) यही दो बोरे धान बीज के लिए अपने पास थे। रामदीन साहु माने नहीं, इसमें से एक बोरा धान उठवा ले गये। मैंने दिया नहीं, न मैं उनका हाथ ही पकड़ा सका, क्या करता, चारो ओर से अपनी ही हार थी। (*रुककर*) वैसे मैं अपना गाँव छोड़कर कहीं भागा नहीं जा रहा हूँ।

जोखन : नहीं, नहीं, इसमे भागने की क्या बात है! (*रुककर*) मेरे भी तो कुल ढाई सौ से ऊपर ही हैं। हाँ, यह बात जरूर है कि मैं रामदीन साहु की तरह वसूलना नहीं जानता, गरीब आदमी हूँ।

भगौती : ऐसी बात नहीं जोखन साहु!

जोखन : (*उठते हुए*) यही बात है, मैं रत्ती-रत्ती जानता हूँ, खैर मैं तो ईश्वर को ही सौंपता हूँ!

[*जाने लगते हैं।*]

भगौती : (*बढ़कर*) रूठकर मत जाओ साहु! फिर मेरा काम कैसे होगा! अभी तो मुझे इंदरवा से पूरा बदला लेना बाकी ही है।

जोखन : अब मुझसे तो कुछ नहीं होगा, साफ बात!

[*भगौती सामने खड़ा हुआ चुप रह जाता है।*]

जोखन : और अब मैं तुम्हारे दरवाजे पर कभी माँगने भी नहीं आऊँगा, बहुत हो चुका!

भगौती : (*पकड़कर लौटाता हुआ*) अच्छा खाली हाथ तो न जाओ! (*दीवार की ओर बढ़कर*) इतना आलू है, इसे ही बाँधे जाओ, तौलकर हिसाब से बही में लिख लेना, बोआई के बाद मैं कुछ न कुछ और प्रबन्ध करूँगा

[जोखन अपने चदरे में सब आलू उलट लेते हैं, उसी समय सहसा हाथ में चिराग लिए राजी आती है और चुपचाप चिराग को ताख में रख देती है, उसी समय भगौती की दृष्टि राजी पर पड़ती है और वह अनायास क्रोध से लाल हो जाता है।]

भगौती : अभी दिन डूबा नहीं कि चिराग जल गया! क्या जरूरत थी इसी समय चिराग की। सब घर फूँकने पर लगी हो क्या!

राजी : इसमें इतना बिगड़ने की क्या बात! मैं चिराग ही बुझा देती हूँ!

जोखन : (*बाँधकर*) नहीं नहीं, सँझौती की बेला तो हो गयी है।

[राजी आँचल की हवा से चिराग बुझा देती है, और उसे लिये हुए भीतर चली जाती है। जोखन आलू के गट्ठर को पीठ पर लादे अपने रास्ते जाते हैं, बरामदे में कुछ अंधकार बढ़ गया है, भगौती परेशान होकर बरामदे में घूमने लगता है। एक-एक करके अनायास ही दोनों चारपाइयों को दीवार के पास खड़ी कर देता है। और फिर सूने बरामदे में चक्कर काटता है, कुछ क्षणों के बाद वह दूसरे बोरे को उठाता है, और उसे लिये हुए अन्दर चला जाता है। दो क्षण बाद वह स्वयं अपने हाथ से चिराग लाता है, और ताख पर रख देता है। फिर बरामदे में घूमने लगता है। आलू से खाली हुए बर्तन को उठाता है, दरवाजे पर जाता है और वहीं से उसे भीतर फेंक देता है। ठीक उसी बीच गाँजे की पोटली बायीं काँख में दबाये बहुत तेजी से हरखू आते

हैं। दोनों कुछ बोलते नहीं, हरखू पोटली को भगौती के हाथ सौंपते हैं। भगौती पोटली को खोल, चिराग की रोशनी में देखता है, फिर हरखू की ओर देखकर मुसकरा पड़ता है।]

भगौती : आवो जल्दी से तब तक एक चिलम.................. आज बहुत तबियत परेशान है।

[एक चिलम गाँजा हरखू को देता है, थोड़ा गाँजा ताख पर बँधे रखे रामायण-आल्हा की पोथियो के बीच रखता है। और शेष गाँजे की पोटली लिये वह भीतर चला जाता है। एक हाथ मे गाँजे की चिलम और दूसरे हाथ में आग लिये हुए आता है। हरखू जमीन पर बैठे-बैठे जल्दी से चिलम तैयार करते है। भगौती उनके साथ बैठता है।]

हरखू : (*चिलम देते हुए*) लो दम मारो !

भगौती : नहीं, पहले तुम्हीं मौसिया !

[हरखू चिलम पर इतनी लम्बी कशें लेते है कि उसमें से लपट निकल आती है, फिर धुएँ को उगलते-निकालते हुए वह भगौती की ओर चिलम बढ़ा देते हैं, भगौती उसी तरह दम भरता है, और क्षण भर में ही बरामदे में गाँजे का धुआँ फैल जाता है। उसी समय सहसा पृष्ठभूमि में बैलों के आने की आवाज होती है। हरखू तेजी से अपने रास्ते निकल जाते हैं, भगौती ताख से चिराग उठा बायीं ओर बढकर आनेवालो को रोशनी दिखाने लगता है। कुछ क्षणो में अलगू के साथ अघारे, परभू हलवाहे आते हैं। तीनों मिट्टी-कीचड़ से डूबे से हैं। अलगू के हाथ में टिंचर की बोतल है, वह

उसे ताख में रखता है। अधारे के कंधे पर कुदार है। परभू के कधे पर वरारी[1] पगहा[2] है। दोनों अपने अपने सामान नेसुहे के पास की खुली अलमारी में रखते हैं।]

अलगू : लो अब तक बैलों को सानी तक नहीं चलायी गई। न जाने क्या कर रहे थे बैठे-बैठे!

भगौती : (*चुप है।*)

अलगू : अधारे! बैलों की नाद में पानी भरा है कि वह भी नहीं।

अधारे : पानी तो हम दुपहरवें भरि कै गै रहन भइया!

[अलगू झुँझलाहट में भीतर चला जाता है और फौरन वह एक मौनी[3] में दाना, एक में कुटी हुई खरी लेकर आता है।]

अलगू : (*परभू को देता हुआ*) लो जल्दी से बैलों की नाद में खरी घोल दो! अधारे! जल्दी से खाँची में यह कटी हुई घास भरो, और भूसे में मिलाकर बैलों को सानी चलाओ! यह दाना रख लो, इसे भी ऊपर से चला देना, नहीं तो थके हुए बैल नाद में मुँह न देंगे।

[दोनों दायीं ओर से चले जाते हैं, क्षण भर के बाद खाँची लिये हुए अधारे आता है; उसमें घास भरता है और उसे लिए हुए लौट जाता है।]

अलगू : (*पुकार कर*) ओ अधारे! देखना, ढीली सानी चलाना, नाद न बोझ देना!

१ जोतने हँगाने की रस्सी
२ बाँधने की रस्सी
३ मूज का बना बर्तन

भगौती : *(क्रोध घूँटकर)* कौन-सा रन मार के आ रहे हो जो बड़े ताव में हो ?

अलगू : रन तो घर में बैठे-बैठे तुम्हीं मारते हो, मैं क्या मारूँगा ।

भगौती : एक ही दिन में चेंचा फूल गया ! अभी तो सारी बोआई पड़ी है, तब तो नानी ही मर जायेगी !

अलगू : लेकिन तुमसे क्या, घर में बैठे-बैठे भौजी को हलाल करो ! और हरखू के साथ गाँजा पियो, यही तो तुम्हारा धंधा रह गया है ।

भगौती : *(बिगड़कर)* मुझसे ज्यादा टिर्रैनबीसी मत करो अलगू, हाँ ।

अलगू : सारे दिन में एक खाँची घास लेकर आये । वह भी आधा उसी तरह नेसुहे पर पड़ा हुआ था । दिन भर खेत में मरो और साँझ को नेसुहे पर भी जूझो ।

भगौती : तो क्या हो गया इसमें ?

अलगू : हो क्या गया !

[उसी समय दरवाजे पर राजी आती है ।]

राजी : क्या सिर धुन रहे हो ! चलो हाथ-पैर धोवो !

अलगू : ऐसे गृहस्थी नहीं चलती ! पूरा गाँव माधो-माधो करके खेत बो रहा है और आज हम पूरे तौर से एक भी बीघा धान न बो सके, आखिर क्यों ?

भगौती : *(बिगड़कर)* होगा, मेरी खोपड़ी मत चाटो !

[अलगू हारकर भगौती को देखने लगता है, भगौती उसके सामने पीठ किये खड़ा है । राजी चौखट से आगे बढ़ती है, और अलगू का दायाँ हाथ

पकड़कर, उसे भीतर ले जाती है। दायीं ओर से अघारे आता है। उसके दोनों हाथ भीगे हैं, और वह अपने अँगोछे से उसे पोंछ रहा है।]

भगौती : डँड़वा का खेत अभी नहीं निपटा !

अधारे : बाबू कल भोर में निपटे ! आज अमिला मार दिहा गवा बाय ! बडी दूब रही वह माँ बाबू !

भगौती : परभू घर गया ?

अधारे : हाँ बाबू ! वोकरे पैरवा मा बिच्छी मार दिहे रही न !

भगौती : अच्छा !

अधारे : बाबू आज पहला दिन रहा। मुला अब पूरी बोआई भर हम लोग सानी-पानी नै कै सकित, होई नाय सकत बाबू !

भगौती : *(चुप है।)*

अधारे : *(हाथ मलता हुआ)* आज कुछ नशा-पानी करा देत्यो, बहुत थक गै हई बाबू !

[एक क्षण रुककर अधारे चला जाता है। हाथ-पैर धुले, गले में बनियान डाले, भीतर से अलगू आता है, तेजी से बायीं ओर के बरामदे में बढ़ता है।]

अलगू : यहाँ से धान के दोनों बोरे कहाँ गये ?

भगौती : क्यों ?

अलगू : जानना चाहता हूँ !

भगौती : तुम्हारी राजी ने बताया नहीं !

अलगू : मैं तुमसे जानना चाहता हूँ !

भगौती : यहाँ से एक बोरा मैं भीतर डेयोढ़ी में रख आया हूँ।

अलगू : और दूसरा !

भगौती : रामदीन साहु उठवा ले गये।

अलगू : (क्रोध से) मरद तो बनते हो, बीज के धान वह कैसे उठवा ले गया !

भगौती : जिसका बाकी है, उसका क्या किया जाय !

अलगू : घर में आग लगा दो और क्या किया जाय ! किस बीज से खेत भाठे जायँगे !

भगौती : बिसार ले लिया जायगा।

अलगू : बिसार ले लिया जायगा, जैसे बिसार खैरात में आता है– बिसार, सेर के सवा सेर का नाम है।

भगौती : (*बिगड़कर*) जाकर सूका से लड़ो, मुझसे अगर बहुत ताव दिखाओगे तो सिर तोड़ दूँगा !

अलगू : [*क्रोध से देखता हुआ चुपचाप खड़ा है।*]

भगौती : यह सब उसी की वजह से हुआ न, वह बेशरम न भागती, उस पर मुकदमा न चलता ! फिर यह नौबत क्यों आती ! क्यों तुम मुझ पर लाल-पीले होते !

[*एकाएक भीतर से सूका आती है।*]

सूका : (*दरवाजे से*) सब दोष मेरा ही तो है ! बीज का धान बिका उसका भी, जोखन को आलू दे डाला उसका भी, जोन्हरी का पूरा झोप्पा बेंचकर.. .. !

[*एकाएक भगौती क्रोध से सूका पर टूट पड़ता है, सूका दरवाजे पर गिर पड़ती है। अलगू भगौती से कुस्ती-सी होने लगती है। राजी घबड़ाई हुई दरवाजे पर आती है, उसी समय बायीं ओर से, हाँ, हाँ, हाँ, की गुहार करते हुए मिनकू काका आते हैं, आते ही वह अलगू और भगौती को अलग-अलग कर देते हैं और दोनों के बीच में खड़े हो जाते हैं।*]

अलगू : *(फूलती हुई साँसों के बीच से)* काका ! घर फूँककर तमाशा देख रहा है।

भगौती : *(आग्नेय दृष्टि से सबको देखता हुआ चुप है।)*

अलगू : काम न धाम ! दिन भर भौजी को मारना, गाँजा पीना, और यहीं बैठे-बैठे घर फूँकना ! *(रुककर)* बीज का एक बोरा धान बिना समझे-बूझे रामदीन साहु को दे दिया, पक्के सोलह सेर आलू जोखन को दे दिया और यहाँ टँगा हुआ जोन्हरी का पूरा झोप्पा न जाने किसे दे दिया।

सूका : *(बीच ही में)* बहरैइची से गाँजा लिया है।

[भगौती की क्रोध भरी आँखें एक क्षण के लिये सूका पर टिक जाती हैं।]

अलगू : तिस पर जब देखो तब, जब देखो तब, यह सब पर लाठी लेकर पिले रहते हैं।

मिनकू : कौन समझाये इनको, आगा-पीछा तो कुछ सोचते ही नहीं !

भगौती : *(क्रोधसे डपट कर)* बड़े सोचनेवाले आये ! सूका से मेरी शादी तुम्हीं ने तो कराई थी, सारा काँटा तो तुम्हीं ने बोया था।

मिनकू *(व्यंग से)* बड़ा कसूर किया था बेटा ! उतने दिन बैठे तो थे, कहीं हो रही थी शादी !

भगौती *(क्रोध से)* घर मेरा है। मैं इस घर का मालिक हूँ, तुमसे मतलब ! मैं चाहे जो करूँ।

अलगू *(व्यंग से)* यह घर के मालिक हैं, जैसे मैं इस घर में आकाश से गिरा हूँ।

भगौती *(क्रोध से)* तो अलग हो जा मेरे घर से !

[अलगू चुप हो जाता है, जैसे वह रोने लगा हो, सूका रोती हुई दरवाजे से आगे बढ़ती है और अलगू के दायें हाथ को पकड़ लेती है।]

सूका : (सिसकती हुई) मुझे अकेली न छोड़ना इस घर में, मुझे वह मार डालेगा जिन्दा गाड़ देगा धरती में।

[सिसकती हुई अलगू के पाँव से चिपट जाती है। भगौती कूदकर दीवार पर रखी हुई लाठी को लेता है, जैसे ही क्रोध से इधर बढ़ता है, मिनकू उसके सामने खड़े हो जाते हैं, अलगू बढ़कर दोनों हाथों से भगौती की लाठी को हवा में तनी हुई पकड़ लेता है। दोनों में छीना-झपटी होती है। सूका अलगू के पैर को छोड़-कर सामने बढ़ती है, राजी को सम्हालने, जो रो रही है। भीतर से दौड़ी हुई नन्दो आती है, बाहर से दौड़े हुए हरखू आते हैं। क्षण भर के लिये सारा रंग-मंच कोलाहल से भर जाता है।]

[तेजी से परदा गिरता है।]

दूसरा अंक

[पर्दा भगौती के पहले आँगन के दुहदरे में उठता है। सामने आँगन की ओर, और भीतर दुइदरे में दो-दो पावे हैं। सामने के पावे लकड़ी के हैं, और भीतर के पावे ईंट के, जो बहुत मोटे नहीं हैं, लेकिन उन पर वर्षों से मिट्टी की इतनी लिपाई-पुताई हुई है कि वे पूर्णतः मिट्टी के ही प्रतीत हो रहे है।

इस तरह रङ्गमंच, बीचो-बीच से दो भागों में बँटा है, ईंट के पावों से पीछे का भाग और आगे का भाग। पिछले भाग को दुइदरा कहते है, और सामने के भाग को बरामदा।

दुइदरे मे पिछली दीवार से लगे हुए मिट्टी के दो चूल्हे हैं, जिन पर मिट्टी के काले-काले बर्तन रखे है। दोनों चूल्हे बुझे पड़े हैं। दुइदरे के बायें भाग में घर का जाँत गड़ा है। दायीं दीवार में एक दरवाजा है, जो भीतरी आँगन में जाने के लिए है।

सामने बरामदे में, दायें-बायें दरवाजे हैं। बायीं ओर का दरवाजा पीछे ड्योढ़ी में खुलता है, जो आगे चलकर घर की खिड़की पर पहुँचता है। दायीं ओर का दरवाजा पीछे एक कमरे में खुलता है, जो आगे चलकर भीतरी आँगन के बरामदे में पहुँचता है।

बरामदे के बायें भाग में ओखली रक्खी है और पास ही दीवार के सहारे दो पहरुये (मूसल) खड़े किये हुये हैं। दायें भाग में मिट्टी की एक बोरसी है, जिसमें आग जिलाई गयी है।

ईंट के दोनों पावों में एक-एक ताख है, जिनमें प्रायः चिराग रखने का काम लिया जाता है।

सावन मास है। और नागपंचमी की रात का पहला पहर है, अभी गाँव में स्थान-स्थान पर, कई पेड़ों पर झूले पड़े हैं, और सारा गाँव सावन की पंचमी मना रहा है।

इस घर के बिल्कुल पिछवारे आम के पेड़ पर डले हुए झूले में मुख्यतः गाँव की स्त्रियाँ झूला झूल रही हैं।

पर्दा उठने पर रङ्गमंच का दुइदरा बिल्कुल सूना-अंधकारमय पड़ा मिलता है। क्षण भर बाद, भगौती बायीं ओर से दौड़ता हुआ आता है, और तेजी से दुइदरे को पार करके, दायीं ओर से भीतरी आँगन में भागता है। क्षण ही, भर में वह फिर भागता हुआ वापस लौट जाता है। कुछ क्षण बाद राजी भीतर से चिराग लिए आती है और बायें पावे के ताख में रख देती है। स्टेज पर मद्धिम-सी रोशनी हो जाती है, उसी समय बाहर से दौड़ा हुआ अलगू आता है।]

अलगू : *(घबड़ाया हुआ)* राजी यह सब क्या हो गया?

राजी : *(चिन्ता से)* न जाने कहाँ सूका दीदी गायब हो गयी! कुछ भी पता नहीं!

अलगू : कब से?

राजी : कुछ ही देर की तो बात है। मैं भीतर चौके में गयी। वह पिछवाड़े खड़ी होकर झूले की कजली सुनने लगी, फिर वहीं से न जाने कहाँ गायब हो गयी!

अलगू : औरतों के साथ झूला झूल रही होगी!

राजी : *(झुँझलाहट से)* झूला नहीं आग झूल रही होगी। उससे बैठा तो जाता ही नहीं, न जाने कैसे वह झूला झूलेगी! और इस मार-गाली के बीच उसे झूला-फूला सूझेगा!

अलगू : (घबड़ाहट से) और नन्दो कहाँ है ?

राजी : सगरे पर कब की गुड़िया जुड़वाने गयी, अब तक नहीं लौटी !

[अलगू सहसा मुड़ता है, और बाहर भागता है। राजी क्षण भर घबराहट में खड़ी रहती है, फिर तेजी से भीतर मुड़ जाती है। उसके मुड़ते ही एक तीस वर्ष की औरत हथेली पर एक डलवा लिये आती है, और चुपचाप दुइदरे में बढ़कर जाँत पर बैठ जाती है और कुछ पीसने लगती है, क्षण ही भर बाद, एक दूसरी चालिस वर्ष की औरत आती है, उसी समय भीतर से राजी आती है।]

दूसरी औरत : कुछ पता चला की नहीं ?

राजी : *(सिर हला देती है।)*

दूसरी औरत : *(हाथ घुमाती हुई)* दुनिया में सब काम समझ-बूझ कर होता है। जब एक बार देख लिया कि सूका के पैर घर से बाहर निकल गये हैं—वह बहरबाँसी हो गयी है, तब उसे घर में बाँधने के लिए खूब मान-जान होनी चाहिए !

राजी हाय राम तुम मान-जान की बात करती हो, उसके तो जान के लाले पड़ गये थे इस घर में।

[पहली औरत इसी समय, जाँते से उठकर आती है।]

पहली औरत *(आते ही)* आज कई दिन हुए मैंने सूका दीदी को नहीं देखा, *(चिन्ता से)* पता नहीं अब भेंट होती है या नहीं !

[तीनों उदासी से एक दूसरे को तकने लगती हैं।]

राजी : (*करुणा से*) परसों रात से कुछ नहीं खाया है। मैं मना के हार गयी दीदी को !

[आँख पोंछने लगती है।]

राजी : परसों रात को भी मेरे बहुत समझाने-बुझाने पर वह चौके पर उठी। पूरी एक रोटी भी न तोड़ सकी थी, इतने में वह बाहर से बड़ी ही गन्दी-गन्दी गाली देते हुए आये, बरबस चौके में चढ़ आये, न लाज, न शरम, बढ़कर उन्होंने सूका दीदी के आगे से थाली खींच ली, और पूरी थाली ले जाकर बैलों की नाँद में झोंक दी।

राजी : (*जैसे रोती हुई*) मुझे तो डर है, दीदी ने कहीं कुआँ-इनारा न देख लिया हो।

[आँसू पोंछने लगती है।]

पहली औरत : जी पक जाने पर कोई ताज्जुब थोड़े है।

[इसी समय बाँयीं ओर से नन्दो आती है, धानी साड़ी और घराऊँ गहने पहने हुए।]

नन्दो (*आते ही राजी से हाथ झमका कर*) घर से भगा दिया न !

राजी (*जलकर*) हाँ, भगा तो दिया, अब तो तुम्हारा कलेजा ठंडा हुआ, अब सुख की नींद सोओ !

नन्दो : मैं क्या सोऊँ, तुम सोओ, तुम्हें अब एकछत्र राज जो करना है।

राजी : आग लगे ऐसे राज में। भगवान करे जहाँ तुम जाओ तुम्हें ऐसे ही राज मिले।

[दोनों औरत हैरान खड़ी रहती हैं, नन्दो झुँझलाती हुई भीतर चली जाती है।]

राजी : *(संकेतकर के)* जहर की बुतायी है! *(रुककर)* सारा काँटा यही लगाती है।

पहली औरत : न जाने क्या इसे मिलता है! मानो नेहर में ताला मार कर सुसराल जायेगी।

राजी : न जाने कब इसके पाँव निकलेंगे इस घर से।

दूसरी औरत : *(भाव बताकर)* बड़ी मुँहजोर है। अब जाकर ढूँढ़ती क्यों नहीं?

राजी : *(पीड़ा से)* यह क्या ढूँढ़ेगी! आग लगाय जमालो दूर खड़ी हुई!

पहली औरत : *(सहसा)* सूका दीदी के नैहर में कोई नहीं रह गया है क्या? कोई तो होगा।

दूसरी औरत : हाय! हाय!! चारों ओर से तो भगवान ने सूना कर रक्खा है।

पहली औरत : आँचल भी तो अभी तक सूना है, भगवान वही भर देता तब भी।

राजी : ओह! दीदी को यही ताना तो बड़कू ने मारा था, कहा था, बाँझ कहीं की, न फल न फूल! इस पर सूका दीदी ने जलकर कहा था! आग लगे मेरी कोख और आँचल में। इसी पर फिर उन्होंने दीदी को बहुत मारा था और परसों भी इसी बात पर गुस्सा! जब उन्होंने दीदी के सामने की परोसी थाली खींच ली थी, तब कहा भी था, इस बाँझ को खिला पिला कर क्या होगा।

[नन्दो भीतर से निकलती है, और तेजी से बाहर चली जाती है। पहली औरत फिर जाकर जाँत पीसने लगती है। इसी समय पृष्ठभूमि में गाँव के आदमियों की आवाज उभरती है। दुइदरे की तीनों औरतें बाहर दौड़ती हैं। कुछ क्षणों बाद नन्दो दौड़ी हुई भीतर आती है, जलती हुई लाल-टेन लिये फिर बाहर भागती है। राजी घबड़ाई हुई दोनों औरतों के साथ दुइदरे में वापस जाती है। गाँव के लोगों की आवाज दुइदरे के पास आने लगती है। नन्दो जाती है और लालटेन लिये हुए दुइदरे में खड़ी हो जाती है। अन्य औरतें दुइदरे के भीतरी दरवाजे पर जाकर खड़ी हो जाती हैं। उसी समय बायीं ओर से भगौती, तेजई, मूरत तथा लाठी लिए हुए गाँव के तीन आदमियों से घिरी हुई सूका प्रविष्ट होती है। भगौती उसकी बाहों को बुरी तरह से भींचे हुए है। राजी अपनी पूर्व दशा की अपेक्षा इस समय पूर्णतः बदली सी है। गले में लाल छींट की कमीज है और उस पर चाँदी की हँसुली पड़ी है। आँचल सावधानी से बँधा हुआ है। धानी रंग की साड़ी नीचे घुटने तक भीगी हुई है। कलाइयों में चूड़ियाँ भरी हैं।

दरवाजे से एक कदम आगे बढ़ते ही भगौती अपनी पूरी ताकत से सूका को जमीन पर ढकेल देता है। वह गिरकर सामने दायें पावे से सम्हलती हुई औंधी पड़ जाती है। शेष लोग आवेश में खड़े रहते हैं और बीच-बीच में क्रोध जताते हुए

कहते रहते हैं 'मारो हाथ-पैर तोड़ दो' 'मारो ।']

भगौती : (*आगे बढ़कर पैर से ठोकर मारकर*) और जाकर कुएँ में कूदो ! कूदो जाकर (*रुककर*) जान से मार डालूँगा इस बार ।

तेजई : आज तो हम सब लोग फँस जाते !

मूरत : अरे समझो कि हथकड़ी पडते-पड़ते बची अपनी तरफ से तो यह कुएँ में कूद ही पड़ी थी ।

पहला आदमी : अरे भइया ई समझो कि दैवसंयोग से वह कुआँ सूखा था नहीं तो ।

दूसरा आदमी : वह इनरा तो अन्हरा पड़ा है आज पाँच बरिस से !

तेजई : इसे यह थोड़े पता था कि वह अन्हरा कुआँ है, नहीं तो यह उसमें कूदती, किसी और में कूदती !

तीसरा आदमी : हाँ हाँ, भइया बिल्कुल ठीक, यह तो अपनी जान देने गयी थी, बच गयी यह तो भगवान की माया है ।

भगौती : इसकी जान अब मैं लूँगा ।

[सूका आग्नेय दृष्टि से सबको देखती है । नन्दो भीतर जाती है ।]

मूरत : (*क्रोध से*) फोड़ दो इसकी आँख, बेहया कहीं की !

सूका : (*आवेश में*) बेहया-बेशर्म तुम ! तुम्हारी सात पीढ़ी ।

[भगौती घूमकर पास के आदमी के हाथ से लाठी छीनता है और सूका पर टूटने लगता है, गाँव के शेष दो आदमी उसे पकड़ लेते हैं ।]

भगौती : इसकी यह हिम्मत ! मैं इसकी जबान खींच लूँगा ।

तेजई : हाथ-पैर काट कर इसे बैठा दो घर में । (*व्यंग से*)

कुएँ में कूदने गयी थी, यह नहीं जानती कि यह कमालपुर है।

सूका : (*तेजी से उठकर*) तेरे कमालपुर में लगे आग।

[*भगौती एकाएक उसके मुँह पर एक झापड़ देता है, वह फिर लड़खड़ा कर गिर पड़ती है।*]

सूका : (*सम्हलकर उठती हुई*) मर जा तू।

भगौती : लेकिन पहले तू मरेगी।

सूका : मैं तो मरूँगी ही, मुद्दई वह कुआँ न सही, दूसरा सही, लेकिन।

मूरत : (*बीच ही में आवेश में*) बाँध दो इसको ! बाँध दो इसे पावे में और सात दिन तक इसे खाना-पीना न दो !

[*भगौती तेजी से भीतर जाता है।*]

तेजई : आज अगर कहीं मेरे घर की होती तो मैं इसे जिन्दा जमीन में गाड़ देता।

सूका : जाकर अपनी माँ-बहिन को जिन्दा गाड़ो।

तेजई : (*क्रोध से*) मेरी चले तो जबान खिंचवा लूँ तेरी।

[*सूका जलती दृष्टि से देखती हुई चुप रह जाती है।*]

पहला आदमी : सम्हलो तेजई भइया सराप दे रही है तुम्हें, इसकी आँख और ओंठ देखो न !

[*दोनों आदमी हँस देते हैं, उसी समय भीतर से हाथ में रस्सी लिए भगौती आता है। भीतर दरवाजे पर खड़ी हुई गाँव की दोनों औरतें और राजी दुइदरे में बढ़ आती हैं।*]

मूरत : भगौती भाई, मेरी मानो, अगर तुम इसका हाथ-पैर तोड़कर सदा के लिए घर में न बैठाओगे, तो गोस-इयाँ कसम कहता हूँ, यह फिर मौका पाते ही किसी और कुएँ में कूद पड़ेगी या कहीं भाग जायगी। फिर हम सब हाथ मल के रह जायेंगे।

पहला आदमी: हाँ नहीं तो क्या भइया। सोलहो आने सही, गाँव में एक ही तो अन्हरा कुआँ था उसमें गिरकर यह जान ही गयी अब तो।

भगौती : *(क्रोध से)* अरे चुप भी रहो! *(दाँत पीसता हुआ)* अपने हाथ से खुद एक लोटा पानी पीने लायक न मैं इसे रहने दूँगा। जन्म भर याद रहेगा कि किसी मरद के पाले पडी थी।

दूसरा आदमी : *(बीच ही में)* अरे जन्म भर की बात छोड़ो, घरी में घर जरै सात घरी भद्रा। आज रात भर तो बचाओ इसे।

भगौती : उसकी दवा मैं कर रहा हूँ। जरा पकड़ो तो।

[तेजई बढ़कर सूका को पकड़ता है, वह विरोध करती है, भगौती उसे शक्ति से खींचकर दायें पावे से खड़ा करने लगता है, उसी समय बायीं ओर से अलगू आता है। वह एक क्षण के लिए चुप खड़ा रहता है। फिर तेजी से आगे बढ़ता है और तेजई को एक झटके से दूर हटाता है।]

अलगू यह क्या करने जा रहे हो?

भगौती पावे में बाँधने जा रहा हूँ।

[सूका खड़ी-खड़ी पावे से अपना मुँह छिपाकर रोने लगती है।]

अलगू : अभी पेट नहीं भरा जो इसे पावे में बाँधने जा रहे हो!

भगौती : तुम्हारा पेट भरा होगा, तुम तो यही रात-दिन मनाते थे कि यह कहीं कुएँ में कूद मरे या कहीं भाग जाय।

तेजई : *(बीच ही में)* देख लेना, यह आज ही रात को हाथ से निकल जायेगी।

[भगौती रस्सी के फन्दे से सूका को बाँधने चलता है।]

अलगू : *(रस्सी छीनता हुआ)* यह नहीं होगा!

भगौती : *(विरोध में)* यह होके रहेगा।

[दोनों क्रोध से एक दूसरे को क्षण भर देखते हैं।]

अलगू : घर फुँकवाकर मैं दुनिया को तमाशा नहीं देखने दूँगा *(घूमकर)* तुम लोग यहाँ क्यों खड़े हो?

भगौती : मैंने बुलाया है, कौन होते हो तुम ऐसा कहनेवाले?

अलगू : कौन होते हो तुम बुलानेवाले *(घूमकर)* और कौन होते हैं यह लोग?

[गाँव के दोनों आदमी अलगू को घूरते हुए चले जाते हैं।]

भगौती : अगर गाँव के ये लोग आज मेरा साथ न देते तो यह हाथ से निकल चुकी थी।

तेजई : तुम भी तो ढूँढ़ने गये थे। मिली कहीं?

अलगू : ढूँढ़कर तुम्हीं लोगों ने बहुत जग जीत लिया *(रुककर)* इसीलिए ढूँढ़ा था कि ......।

भगौती : *(बीच ही में)* की फी कुछ नहीं आवो जो करना हो सो करो।

[सूका को आवेश में बांधने दौड़ता है, इस बार सूका विरोध नहीं करती, पावे से चिपटी हुई खड़ी रहती है। भगौती उसे पावे से दो बार बाँध देता है। तेजई और मूरत जल्दी से खिसक जाते हैं। भगौती जैसे ही रस्सी की तीसरी फाँस पावे से लपेटने चलता है, सूका कष्ट से सामने पलटती है और एक भयानक उदासी से वह अलगू को देखती है, अलगू सहसा बढ़कर भगौती के हाथ पकड़ लेता है, दोनों से हाथाबाहीं होने लगती है।]

भगौती : *(क्रोध से हाथ छुड़ाकर)* लाठी लाओ तो। *(पूरे दुइदरे में भगौती चक्कर लगता है।]*

[राजी दौड़कर अलगू के पास आती है, और उसे वहाँ से हटा लेने के लिए उसका दायाँ हाथ पकड़ती है। वह राजी को झिझकार देता है। राजी घबड़ाई हुई बाहर भागती है। भगौती भीतर जाता है और लाठी लिये हुए तेजी से वापस आता है।]

भगौती : अब आवो अगर हिम्मत हो।

अलगू : खून पर तुले हो क्या?

भगौती : मुझे कुछ परवाह नहीं।

अलगू : तुम सात पुस्त के बने हुए घर को नाश करके छोड़ोगे।

भगौती : *(व्यंग से)* सारी चिन्ता बस मेरी ही ओर से है *(सूका की ओर संकेत करके)* और यह?

अलगू : कुछ नहीं ! दुनिया में कितनी औरतें इस तरह होती हैं, लेकिन फिर घर वापस आ आती हैं । उनकी मान मर्यादा होती है, घर-गृहस्थी में अगर कोई बात हो भी गयी तो मरद उसका पुतला नहीं टाँगता ! न कुत्ता भूँकता है न पहरू जागता है । लेकिन एक तुम हो कि बात-बात में नाच खडी कर देते हो ।

भगौती : इसका इस तरह कुएँ में कूदना तुम्हारे लिए बात है, होगी बात तुम्हारे लिए । मेरे लिए जान की बाजी है, इसकी यह मजाल !

अलगू : लेकिन इसे कुएँ में कुदानेवाले तो तुम हो ! तुम्हें अगर इसी पावे में बाँधा जाय तो ?

[भगौती क्रोध से सहसा अपनी लाठी से अलगू को धक्का देता है । अलगू गिरते-गिरते बचता है । उसी समय राजी के साथ मिनकू काका आते हैं और भीतर से दौड़ी हुई नन्दो आती है ।]

नन्दो : *(आते ही सूका को उपेक्षा से देखती हुई)* कलमुँही न जाने कहाँ नागन ऐसी बैठी थी । घर खा के रहेगी ।

[मिनकू नन्दो को अलग हटा देते हैं । वह पावे के पीछे चली जाती है । राजी घबड़ाई हुई दूसरे पावे से लगी खड़ी रहती है ।]

अलगू : *(सीने को सहलाता हुआ)* काका ! मैं जितना ही इन्हें बचाता हूँ । उतना ही सिर पर चढ़े चले आ रहे हैं !

भगौती : आके मुझे रोको कोई !

[सूका की ओर बढ़ता है, मिनकू पकड़ते हैं नन्दो भीतर चली जाती है।]

मिनकू : यह क्या कर रहे हो ?

भगौती : *(मिनकू का हाथ झटककर)* जो मुझे सूझता है।

मिनकू : *(कड़े स्वर में)* तुम्हें कुछ नहीं सूझता, तुम अंधे हो। आगा-पीछा नहीं सोचते।

[बाँधने लगता है, अलगू सहसा बढ़कर भगौती को पकड़ लेता है। दोनों एक दूसरे से लड़ जाते हैं। अलगू क्षण मात्र में भगौती को पटक देता है। और उसकी लाठी छीनकर तन जाता है राजी भीतर दरवाजे पर आती है।]

अलगू : *(अलगू लाठी ताने हुए)* खैरियत चाहो तो इसी तरह पड़े रहो। *(रुककर)* मिनकू काका! रस्सी खोलो इसकी !

[मिनकू चुप खड़े रहते हैं।]

अलगू : खड़े देखते क्या हो काका, बंधन खोलते क्यों नहीं ?

भगौती : *(दाँत पीसता हुआ)* खबदार रस्सी पर अगर किसी ने हाथ लगाया! सब कान खोलकर सुन लो! मैं अपने बाप के असली रक्त का नहीं अगर मैं सूका का मूँड़ काटकर तुम एक-एक को न फँसा दूँ। *(रुककर)* मैं तो जाऊँगा ही लेकिन तुम में से एक को न छोड़ूँगा।

मिनकू छोड़ोगे कैसे ! इसीलिए तो पैदा ही हुए हो। *(उपेक्षा से)* रस्सी जल गयी लेकिन ऐंठन न गयी।

[भगौती उठने लगता है अलगू फिर उसकी ओर बढ़ता है। मिनकू अलगू को खींच लेते हैं।]

मिनकू : *(लाठी छीनकर)* छोड़ो इसे, देखें यह क्या-क्या कर लेता है ?

[भगौती गुस्से से देखता हुआ तनकर खड़ा है ।]

मिनकू : तुम्हारी रस्सी पर अब कोई हाथ न लगायेगा, जाओ *(रुककर)* लेकिन लल्लन याद रखना, इसी रस्सी से सुबह अगर तुम न बाँधे गये तो मुझे छूकर नहाना ।

[भगौती रस्सी से सूका को पावे में बाँधने लगता है ।]

अलगू : *(क्रोध से)* क्या बात करते हो मिनकू काका ! यह आँख से देखूँ पर बोलूँ नहीं !

मिनकू : चलो बाहर, इसकी दवा मेरे पास है ।

सूका : *(सहसा जैसे चीखकर)* झूठे हो, इसकी दवा किसी के पास नहीं है, मेरे ही लिए सब के पास दवा है, क्योंकि मैं औरत हूँ, बदनाम हूँ ।

अलगू : *(एकाएक आगे बढ़कर भगौती को झटक देता है)* मैं भी इस घर का मालिक हूँ ।

[अलगू भगौती का मुँह पकड़ लेता है, मिनकू दोनों को छुड़ाने लगते हैं ।]

मिनकू : *(अलगू को छुड़ाकर)* पचास बार कहा कि इस समय बाहर टहल चलो, भगौतिया के सर पर खून चढ़ा है ।

अलगू : मेरे भी सर पर खून चढ़ा है ।

मिनकू : तब दोनों हाथ से फूँक दो घर *(रुककर)* जब यह बाँधने ही पर तुला है तो बाँधने ही दो ।

[भगौती उसे बाँधता रहता है ।]

अलगू लेकिन इसका भयानक नतीजा मुझे मालूम है काका !

[दोनों चुप हो एक दृष्टि से सूका को देखते हैं ।]

[भगौती उसे बाँध चुकता है और तेजी से भीतर जाता है, दरवाजे पर खड़ी हुई गाँव की दोनों औरतें और राजी सूका के पास आती हैं ।]

सूका : अब तो मैं बँध चुकी हूँ । अब यहाँ क्यों खड़े हो ? जाओ न *(पीड़ा से)* बड़े मिनकू काका बनकर आये थे !

मिनकू : *(कड़े स्वर से)* तुम भी तो कम नहीं हो । क्यों डूबने गयी थी, और पकड़कर जब यहाँ आयी तो ऊपर से यह धमकी कि फिर किसी कुएँ में कूदूँगी; इस पर तुम बाँधी न जावोगी तो क्या होगा !

अलगू : *(आवेश में)* लेकिन इसमें इसका रत्ती भर कसूर नहीं है ।

सूका : नहीं नहीं, सब मेरा है । उससे मेरी शादी हुई यह भी मेरा कसूर है, मैं भागी, पकड़ी गई । मुकदमा चला, मैं उसे छोड़कर फिर इस घर में आई, यह भी मेरा ही दोख है । मैं मरने भी गयी तो मुझे अंधा कुआँ ही मिला, क्या-क्या कहूँ-किससे कहूँ ।

[आह करके पावे से अपना सिर टकरा देती है, अलगू और मिनकू बाहर जाते हैं, सूका पावे से अपना सिर लगाकर आँख मूँदे रहती है । राजी और गाँव की दोनों औरतें आपस से फुस-फुसाकर बातें करने लगती हैं । भीतर से नन्दो आती है ।]

नन्दो *(आते ही)* मीठा-मीठा गप्प, कड़ुवा-कड़ुवा थू !

राजी : कड़ुवा-कड़ुवा क्या! अब तो गज भर छाती हुई तुम्हारी!

नन्दो : मेरी क्यों, तुम्हारी होती, लेकिन चला तो नहीं।

राजी : अच्छा तुम्हारा तो चला!

[सहसा भीतर से आग लिये हुए भगौती प्रवेश करता है, उसे देखते ही सब चुप हो जाती हैं, पहली औरत चक्की पर बैठती है।]

भगौती : *(आते ही आते)* खबरदार, अगर किसी ने इसे दाना-पानी दिया, *(सूका के पास रुककर)* इसी तरह मैं ने इसे सुखा न दिया तो मेरा भगौती नाम नहीं, *(घूमकर)* तुम सब सुन लो, अगर किसी ने इसे दाना-पानी पूछा और मुझे पता लगा तो मैं उसकी खाल खींचकर छोड़ूँगा!

नन्दो : *(राजी की ओर संकेत कर)* इसी की खाल खींचो, और कौन है इस घर में!

[भगौती बाहर जाने लगता है]

भगौती : *(जाते-जाते)* रहने दो इसी तरह, आज ही तो इसे छठी का दूध याद आयेगा।

[घूरता हुआ चला जाता है।]

राजी : किस के मुँह में है बत्तिस दाँत जो मेरी खाल खींचेगा। जबान सम्हालकर निकालो नहीं तो।

नन्दो : नहीं तो क्या कर लेगी?

राजी : क्या कर लेगी, क्या कर लेगी *(रुककर)* देखती हूँ कब तक उनके सिर पर चढ़ी रहती हो!

नन्दो : आँख फोड़ लो न।

राजी : मैं क्यों, तेरी दैव फोड़ेगा।

[झुँझलाती हुई नन्दो चली जाती है।]

दूसरी औरत : *(हाथ चमकाकर)* हूँ, बहुत ननद देखा लेकिन सब इसके नीचे *(रुककर)* घर-दुवार भउजी कै, ननदी के लबलब !

[पहली औरत चक्की पीस चुकती है, उठ-कर पास आती है।]

पहली औरत : देखो कब सूका दीदी को छोड़ते हैं।

राजी : *(पीड़ा से)* दीदी के भाग भी तो जलने लायक हैं। इस घर से दुहिजरा जी लेके कहीं बूड़ने-धँसने भी गयी तो इन्हें और कोई कुआँ न मिला, भगवान की भी आँख फूटी है।

दूसरी औरत : आदमी भी तो नहीं डरता।

[करुणा से तीनों औरतें सूका को क्षण भर देखती हैं, खाली हाथ राजी आँचल से आँख पोछने लगती है। बाहर से खड़ाऊँ पहने खाली हाथ भगौती आता है और भीतर जाते-जाते कह जाता है—'खबरदार इसको अगर किसी ने दाना-पानी दिया।' गाँव की दोनों औरतें चली जाती हैं। राजी अकेली सूका को देखती हुई खड़ी रह जाती है, भीतर से हाथ में लोटा लिये हुए भगौती आता है।]

भगौती : *(सूका को क्रोध से देखता है)* आँख क्यों मूँदे पड़ी है, अभी तो सारी रात बाकी है *(व्यंग से)* जाओ अब कुएँ में कूदो !

[सूका निश्चेष्ट उसी तरह पड़ी रहती है, राजी भीतर जाने लगती है।]

भगौती : *(कड़े स्वर से)* देख राजी ! कान पार के सुन, समझ-बूझकर घर-गृहस्थी में पैर रखा करना, नहीं तो गेहूँ के साथ घुन भी पिस उठता है, मालूम है कि नहीं !

राजी : *(बिगड़कर)* तुम भी कान पार के सुनो, मैं सूका दीदी नहीं हूँ कि तुम्हारी सहूँ। मैं ब्याह कर इस घर में आयी हूँ, हाँ !

भगौती : मुझे जो कहना था मैंने साफ कह दिया।

राजी : मैं भी साफ कहती हूँ, आग लगे मड़वे, बजर परे बियाहे, मैं तुम्हारी बात सहने के लिए नहीं हूँ। तुम्हारी सहे वह जिस पर भगवान का कोप हो *(भीतर जाती-जाती)* मैं न तुम्हारा खाती हूँ न पीती, हाँ !

[भीतर चली जाती है, भगौती भी घूरता हुआ बाहर चला जाता है। क्षण भर बाद, बाहर से खाली हाथ अलगू आता है और बिना कुछ बोले सूका को देखता हुआ खड़ा हो जाता है। सूका सहसा सिर उठाती है, अलगू तेजी से भीतर मुड़ जाता है, सूका फिर पावे में अपना सिर टकरा देती है और उसी तरह आँखें मूँद लेती हैं। बाहर से नन्दो आती है।]

नन्दो : आज पता चला कि नमक तेल का क्या भाव है *(रुककर)* कुएँ में कूदने गयी थी, सबको फँसाने चली थी !

[भीतर सें अलगू आता है, नन्दो आगे बढ़ती है ।]

अलगू : *(कड़े स्वर से)* नन्दो सुन, बाँड़ी विस्तुइया बाघन से नजारा मारै; मारते-मारते सुसरी तेरी।

[दाँत पीसकर क्रोध पी जाता है ।]

नन्दो : *(लड़ती हुई)* दाँत पीसो जाकर उन पर जो भीतर बैठी हैं, मुझे आँख न दिखाओ, हाँ ।

अलगू : आग लगाती फिरती है घर में, याद रखना, गौने जाकर इस घर का मुँह न देखने पायेगी ।

[जली भुनी भीतर चली जाती है । अलगू वहीं खड़ा रहता है, उसी समय बाहर से हाथ में लोटा लिए हुए भगौती आता है और चुपचाप भीतर चला जाता है, भीतर से राजी निकलती है ।]

राजी : *(पास जाकर)* चलो, तुम भी चौके पर उठो न ।

अलगू : मैं आज अन्न-पानी नहीं छूऊँगा ।

[सूका सिर उठाती है, अलगू को देखती है, वह बाहर मुड़ चुका है ।]

राजी *(भीतर जाते-जाते)* कैसे कोई इस घर में अन्न-पानी करे, जहर तो कर दिया है ।

[भीतर चली जाती है । दुइदरा सूना हो जाता है । घर के पिछवारे झूला झूलती हुई लड़कियों के गाने का स्पष्ट स्वर सुनायौ देता है ।]

अटरी पै कगवा, अरे बोलन लागे ।
छोटे नेबुलवा के पातर डरिया
तापे सुगनवाँ, अरे डोलन लागे ।

पोखरा में हँस बोले, तलरी में कुरिला
बिरहा की रतिया, अरे सालन लागे।
खुलि जाय अँचरा, मसकि जाय अँगिया
बाजू पै बन्दा, अरे घूमन लागे।
उड़ि जा तू कागा, सैयाँ के देसवाँ
कजरी के बनवाँ, अरे फूलन लागे।

[गीत समाप्त होते-होते भीतर से भोजन करके भगौती निकलता है और उसके पीछे-पीछे हुक्के पर चिलम बोझे नन्दो निकलती है।]

भगौती : *(सूका के पास आते-आते)* चाहे कोई खाय-पीये, चाहे मर जाय, मुझे इसकी चिन्ता नहीं!

[दाँत पीसकर रह जाता है। नन्दो के हाथ से हुक्का ले लेता है, और चिलम की आग फूँकने लगता है।]

भगौती : *(क्रोध से)* जी कहता है कि इसी तरह सीधे जला दूँ।

[आग फूँकने लगता है]

नन्दो : कह रही थी, मैं इस घर में एक मिनट न रहूँगी।

भगौती : *(क्रोध से)* कौन?

नन्दो : राजी और कौन!

भगौती : रोकता कौन है, कह दो निकल जाये मेरे घर से। मुझे किसी की परवाह नहीं है।

राजी : *(भीतर से निकलकर)* बड़े घरवाले आये! यह मेरा घर नहीं है क्या!

भगौती लेकिन यह तेरे बाप का घर नहीं है। इस दिमाग में न रहना।

अलगू : *(बायें से प्रवेश कर)* तुम्हारे बाप का भी घर नहीं; आधे का मैं भी हिस्सेदार हूँ।

भगौती : तो बाँट लो न, मैं तैयार हूँ।

अलगू : तुम्हारी यही हरकत रही ती बँटकर ही रहेगा।

राजी : *(झुँझलाई हुई)* इसकी परछाँई का छुआ मैं इस घर का एक अन्न नहीं खाऊँगी। मैं इसकी ब्याही नहीं, जो मुँह में आता है बक देता है।

भगौती : हो जा न अलग, कौन खाली घड़ा दिखाता है, यह न समझ कि मुझे किसी की परवाह है।

अलगू : *(नन्दो की ओर क्रोध से देखकर)* आग बोनेवाली तो यह खड़ी है, तीन से तेरह करती चलती है।

राजी : जिस घर जायेगी वहाँ साँझ ही आग लगेगी।

नन्दो : जैसे हरदम अपने आग लगाती है, बीच में मुझे पेरोगी तो मै सात पुस्त न छोड़ूँगी, हाँ।

[गुस्से में भीतर चली जाती है।]

भगौती : मैं तो कभी से कहता था कि बाँट लो।

अलगू : तभी तो तुझे आटे-दाल का भाव मालूम होगा। मेरे बूते मजे से घर बैठे रहो, मैं चौबीस घण्टे मरूँ, और ऊपर से यह तुर्रा।

भगौती : तो अलग हो जाओ न, होते क्यों नहीं?

अलगू : हो जाऊँगा, सुबह हो, घर और खेत आधा बाँटकर छोड़ूँगा।

भगौती : और कर्जा?

अलगू : कैसा कर्जा?

भगौती : रामदीन और जोखन का कर्जा *(सूका की ओर क्रोध*

से) इसके मुकदमें में जो कर्ज लिया गया है, उसका देनदार कौन होगा ?

अलगू : उससे मेरा क्या मतलब !

भगौती : क्यों नहीं, मीठा-मीठा गप्प, कड़ुआ-कड़ुआ थू।

राजी : दूसरे के कन्धे पर चढकर खूब घर फूँकने आता है।

भगौती : घर फूँकनेवाले तो तुम हो। तुम्हीं लोगों ने मुझे परेशान किया है कि सुकिया को पकडो, मुकदमा लडो, उसे घर लाओ, कर्ज लो; नही तो मैं कभी उसके पीछे पड़ता, जो बह गयी सो बह गयी।

अलगू : क्यों नहीं, उसके लिए सूका मेरी है, मेरे कहने से उसे घर लाये, मुकदमा लड़े और अब मेरा कहना कहाँ गया।

भगौती : कैसा कहना !

अलगू : कि उसे जानवरों की तरह न मारो।

भगौती : हाँ, उससे किसी से मतलब नही, मैं अब भी कहता हूँ।

अलगू : तब कर्ज से मेरा भी मतलब नहीं, मै भी साफ कहता हूँ।

भगौती : *(क्रोध से)* तब ले लेना हिस्सा मैं देख लूँगा।

राजी : चुप्पे-चुप्पे बनियों के हाथ अनाज बेंचना थोड़े है। यह भाई का हिस्सा है। पचा लो तो जानूँ।

भगौती : *(आवेश में)* तेरे बाप की कमाई है।

[क्रोध से घूरता हुआ बाहर चला जाता है।]

अलगू : *(सूका से)* क्या कहती हो, कुछ बोलो !

[सूका कुछ क्षण निश्चेष्ट देखती रहती है, फिर फफक कर रो देती हैं ।]

सूका : *(रुँधे स्वर से)* इस घर में मुझे अकेली न छोड़ो, न छोड़ो बाबू !

[गला रुँध जाता है ।]

अलगू : *(आगे बढ़कर)* देखता हूँ, कोई क्या कर लेता है ?

[बंधन खोलने चलता है ।]

सूका : *(सिसकती हुई)* नहीं, ऐसा न करो, इससे क्या होगा, इससे कुछ नहीं होगा ।

अलगू : होगा क्यों नहीं !

सूका : मरद होकर ऐसी बात करते हो बाबू ! इन रस्सियों को तैयार करनेवाले और इनसे गाँठ बनानेवाले जब तक वे हाथ मौजूद हैं तब तक केवल इन रस्सियों को काटने से कुछ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा बाबू !

अलगू : *(आवेश से)* होगा क्यों नहीं, रस्सियाँ तो नहीं रहेंगी ।

सूका : वही खूनी हाथ फिर रस्सियाँ तैयार कर लेंगे, बल्कि और मजबूत रस्सियाँ बनायेगे *(चुप हो जाती हैं)* और भी कड़े बंधन से बाँध देंगे । देखो न याद करो, जब मैं खरीदकर इस घर में आयी थी दूल्हन बनकर, तब यह रोज नहीं, दूसरे तीसरे ही मारता था, और बाहर-भीतर आते-जाते मुझ पर छिपी नजर रखता था । जब मैं इस घर से भाग गयी और फिर इस घर में आयी तब यह मुझे रोज मारने लगा, और घर के भीतर मुझ पर कड़ी नजर रखने लगा । *(रो पड़ती*

हैं) फिर मैं अपनी जान देने के लिए कुएँ में कूदी, लेकिन मरी नहीं, पकड़कर फिर इस घर में आयी हूँ। और अब देखो *(रुककर)* राम जाने इसके बाद वह मेरी क्या-क्या करेगा ?

[रो पड़ती है, आँचल से मुँह ढके राजी भीतर चली जाती है, अलगू ठगा-सा खड़ा रहता है, उसी समय दुइदरे में नन्दो आकर चुपचाप खड़ी हो जाती है।]

सूका : मेरे पीछे, दुइदरे में नन्दो खडी है, उससे पूछो बाबू !

अलगू : *(बीच ही में)* नन्दो ! *(नन्दो भीतर चली जाती है।)* नन्दो तो यहाँ नहीं हैं।

सूका : थी नन्दो, पीछे खड़ी थी, अब भाग गयी। मैं तो बाबू उसकी आहट पहचानती हूँ न ! साँप जब चलता है तो उसकी आहट कोई नहीं पाता, तभी उसकी काट इतनी बिखधर होती है।

[दोनों चुप हो जाते हैं। भीतर से राजी निकलती है।]

राजी : *(पास आती हुई)* चलो, एक रोटी तो खा लो, उपवास नहीं करना चाहिए।

सूका : हाँ बाबू, मैं मरी थोड़े हूँ, अभी तो जिन्दा हूँ।

अलगू : कौन कहेगा तुम्हें जिन्दा !

[तेजी से बाहर मुड़ जाता है, राजी खड़ी रह जाती है।]

सूका : अभी वह बहुत कुछ कर लेगी ! मेरे खाने-पीने का नाम न लो ! मेरा क्या। मैं तो सात-सात दिनों तक बिना अन्न पानी के रही हूँ। मेरी तो आदत है।

[सूका चुपचाप आँख मूँद लेती है।]

राजी : दीदी कुछ खा लो न! सच, कोई कानो-कान नहीं जानेगा।

सूका : ये बातें तक तो सुनी ही जा रही हैं और खाने की बात कहाँ तक छिपेगी (रुककर) मैं खुद खाना ही नहीं चाहती। मुझे घर की हवा तक से घृणा है। मैं चाहती हूँ कि यहाँ मैं साँस तक न लूँ, लेकिन (रो पड़ती है) ब्याह कर जब मैं इस घर में लायी गयी, तब इस घर ने मुझे रखैल कहा, कचहरी से लौटकर जब मैं इस घर में आयी, तब इस घर ने मुझे भगैल कहा, और आज जब इस घर में खींचकर लायी गयी तब से यह काला घर मुझे चुड़ैल कह रहा है।

[एकाएक बाहर से भगौती के आने की आहट होती है। राजी भीतर चली जाती है। सूका फिर चुपचाप आँखें मूँद लेती है। खाली हाथ भगौती प्रविष्ट होता है। कुछ क्षण तो दाँत पीसता हुआ खड़ा रहता है फिर सूका के बिल्कुल पास चला जाता है, उसे बहुत ध्यान से देखता है।]

भगौती : बन-ठन के कुएँ में कूदने गयी थी! धानी साड़ी, छींट की कमीज, शरबती चूड़ियाँ, मानो इंदरवा से मिलने जा रही हैं। भेंट नहीं हुई उससे! जाओ, अब भेंटकर आवो! जाओ न!

[पृष्ठभूमि में कोई खाँसता हुआ आता है।]

भगौती (बायीं ओर बढ़कर) कौन?

आवाज ई है कि भाई, मैं भी आ जाऊँ

[आवाज खत्म होते ही हरखू मौसिया हथेली में सुरती बनाते हुए आते हैं।]

हरखू : *(मुस्कराहट से)* अरे ई है की छोड़ो भी! जाओ सोओ, काफी रात गयी, पच्छू से बहुत ही तेज बादल चढ़ रहे हैं।

भगौती : बादल बरसेंगे और क्या करेंगे मौसिया।

[भगौती बढ़कर हरखू के हाथ से सुरती ले लेता है, दोनों सुरती खाते हैं।]

भगौती : *(ओंठ के भीतर सुरती दबाते हुए)* हमारे बाबा एक बात कहा करते थे मौसिया, कि औरत और भेंड़ को दो चीजें नहीं होतीं, न दिमाग न रीढ़ की हड्डी, बस इनके एक चीज होती है गरदन, जिस किसी ने इनकी गरदन नाप ली बस ये उन्हीं की हुई हैं।

[हरखू प्रसन्नता से क्षण भर मुस्कराते हैं।]

हरखू : *(भगौती के दायें हाथ को पकड़कर)* चलो यहाँ से बहुत रात बीत गयी है। सब सो गये।

[दोनो बाहर चले जाते हैं, क्षणिक अन्तराल के बाद नन्दो भीतर से निकलती है और दुइदरे को पार करती हुई बाहर भाग जाती है। लौटती है। पावे के ताख में जलते हुए चिराग को मुँह से बुझा देती है और भीतर भाग जाती है। कुछ क्षणों बाद हाथ में लालटेन लिए हुए भगौती आता है। लालटेम तेज करता है और उसे हाथ में उठाये हुए वह सूका के मुँह को बहुत ही नजदीक से देखने लगता है। लालटेन धीमी कर जमीन पर रखता है फिर तेजी से भीतर जाता है। इस बीच, बन्धन में जकड़ी हुई सूका बेचैनी से

छटपटाने लगती है। पावे से बार-बार अपना सिर टकराती है। भीतर से भगौती निकलता है उसके शरीर पर धोती के सिवा और कुछ नहीं है, दाएँ हाथ में वह लोहे का दो हाथ लम्बा छड़ लिये है। छड़ का अगला भाग, पूरे एक हाथ के विस्तार से आग में तपकर सुर्ख हो गया है। भगौती पर सूका की दृष्टि पड़ते ही वह बेतरह चिल्ला उठती है और एक लम्बी आर्त्त चीख से वह घर के पूरे सन्नाटे को चीर देती है। बाहर से लाठी लिये हुए अलगू फट पड़ता है। भगौती छड़ को सूका के मुँह पर रखने जा रहा था कि अलगू अपनी लाठी के झटके से उसे बचा लेता है। छड़ नीचे गिरता है, भीतर से राजी दौड़ती है और जलते हुए छड़ को उठाकर वह आँगन के कीचड़ में फेंक देती है। भगौती और अलगू दोनों लड़ रहे हैं, राजी सूका दोनों रो रही हैं, नन्दो दुइदरे में खड़ी है।]

[तेजी से पर्दा गिरता है।]

[दस मिनट बाद फिर वहीं पर्दा उठता है। वर्षा हो रही है और तेजी से हवा चल रही है। रह-रहकर बिजली कौंधती है और फिर तेजी से बादल गरजते हैं। जब बिजली कौंधती है तब सूका उसी तरह पावे में बँधी हुई मिलती है। अब उसकी आँखें मुँदी नहीं हैं। वह निश्चेष्ट खड़ी है—मूर्तिवत्।

कुछ क्षणों के उपरान्त सामने खपरैल से कोई आँगन में कूदता है। गोरा-सा हट्टा-कट्टा

नौजवान है। कमर में फाँड़ बँधी हुई धोती, गले में कुर्त्ता, बायें हाथ में टार्च, दायें हाथ में छोटा सा डंडा। आँगन से वह दुइदरे में टार्च जलाता है और धीरे-धीरे वह टार्च की रोशनी एक क्षण के लिए सूका पर स्थिर कर देता है। टार्च बुझा देता है। आँगन से भीगता हुआ वह दुइदरे में आता है।]

सूका : *(गम्भीरता से)* कौन ! *(कोई उत्तर नहीं)*

[बिजली कौंधती है, और पूरा दुइदरा क्षण भर के लिए प्रकाशित हो जाता है।]

सूका : कौन है तू, बोल नहीं तो मैं गुहार मचाती हूँ।

व्यक्ति : *(धीमे स्वर में घबड़ाहट से)* मैं इंदर हूँ सूका !

[बार-बार बिजली कौंधती है, बादल गरजते हैं लेकिन दोनों चुप हैं।]

इंदर : *(चारों ओर टार्च जलाकर देखता है)* मैं आया हूँ सूका।

सूका : *(गम्भीरता से)* तो क्या हो गया ?

इंदर : *(घबड़ाहट से पास आकर)* मैं यहाँ दो ही घण्टे रात बीते आया हूँ। बाहर खिड़की के पास, नीम के पेड़ पर बैठा था और तुमसे मिलने का मौका ढूँढ़ रहा था।

सूका : अब मौका मिला है, चोर कहीं का !

इंदर : राम-कसम अभी-अभी मौका मिला है।

सूका : *(कड़े स्वर से)* तब क्यों नही मौका ढूँढ़ा, जब मैं जानवरों की तरह पिटती हुई इस पाये से बाँधी जा रही थी, जब मैं गर्म सलाख से दागी जा रही थी।

इंदर : *(चुप है।)*

सूका : चुप क्यों हो गया ?

[इंदर बढ़कर सूका के बंधन को चुपचाप खोलने लगता है।]

सूका : यह क्या कर रहा है, खबरदार जो मुझे छुआ।

इंदर : *(बीच ही से)* यहाँ से दूर भगा ले चलूँगा।

सूका : *(व्यंग से)* इस बार कलकत्ता से भी कहीं और दूर ले चलेगा ?

इंदर : *(बंधन मुक्त करता हुआ)* कैसी बातें करती हो तुम !

सूका : पता नहीं *(रुककर)* मुझे खोल दिया। बोल यहाँ क्यों आया ? क्यों मुझे खोला ?

इंदर : *(चुप है)*।

सूका : बोलता क्यों नही ?

[गुस्से से अपने दोनों हाथ की चूड़ियाँ पावे पर पटककर फोड़ डालती है। और झुककर पैरकी उँगली से बिछुये निकालने लगती है।]

इंदर : मैं तुम्हें फिर से सुहागन बनाने आया हूँ।

सूका : मेरा सुहाग तो उसी दिन लुट गया, जिस दिन ब्याह कर मैं इस घर में आयी ! अब क्या मेरा सुहाग ?

इंदर : बात न करो सूका ! हाथ जोड़ता हूँ, जल्दी इस घर से निकल चलो।

सूका : कहाँ !

इंदर : मेरे साथ।

सूका : बको मत !

इंदर : क्यों ऐसी……।

सूका : तू चोर है, तूने मरे हुए को भी मारा *(रुककर)* खुद तो मारा ही, दूसरों को सदा मारने के लिए रास्ता दे दिया, रखैल से भगैल नाम दिया, अब कौन नाम देना चाहता है ?

इंदर : मुझे माफ करो सूका ! अब ऐसा नहीं होने पायेगा ।

सूका : मेरे सामने से हट जा, दूर हो जा मेरे पास से ।

इंदर : *(बढ़कर उसके मुँह पर हाथ रख देता है)* धीरे-धीरे ! नहीं तो कोई सुन लेगा और गजब हो जायगा ।

सूका : *(उत्तेजना से)* हो जाये गजब । मैं तो चाहती हूँ चक्र गिर जाय । तू यहाँ पकड़ा जा ! तुझ पर भी उतनी ही मार पड़े । तेरी भी उतनी ही यातना हो, जितनी मेरी हुई है ।

इंदर : *(चुप खड़ा है ।)*

सूका : क्यों यहाँ आया ! बोलता क्यों नहीं ?

इंदर : हाथ जोड़ता हूँ चिल्लाओ नहीं !

सूका : मुझसे हाथ जोड़ता है । जैसे कि मैं कोई हूँ ! धोखेबाज, चला जा यहाँ से ।

इंदर : और तुम ।

सूका : तुझसे मतलब ।

इंदर : मतलब क्यों नहीं, फिर मैं इस आँधी-तूफान में आता क्यों ?

सूका : *(चुप है)* ।

इंदर : मुझे मौका ही नहीं मिलता था, नहीं तो मैं तुम्हें कब का इस घर से निकाल ले गया होता ।

[सूका उसे घूरती हुई खड़ी है, बारिश धीमी हो रही है।]

इंदर : मुझे सब मालूम है कि तब से भगौती तुम्हें कितना मारता है। कितनी यातनाएँ देता है।

सूका : *(बीच ही में)* तो तुझसे क्या, मैं उसके लिए कभी तेरे सामने रोने नहीं गयी। वह मेरा पति है, मुझे मारता है, तुझसे क्या! तू कौन होता है कहने-वाला!

इंदर : *(गम्भीरता से)* मैं तुम्हारा बहुत कुछ होता हूँ।

सूका : *(घृणा से)* मेरी ओर से तू कुछ नहीं है।

इंदर : यह हो नहीं सकता, तुम्हारी भी तरफ से मैं कुछ हूँ। सोचो इसे, नहीं तो मैं आज इस आँधी और तूफान में यह कैसे जान गया कि आज तुम घोर संकट में हो *(रुककर)* मैं क्यों अपनी जान की बाजी लगाकर यहाँ आता! लेकिन नहीं, मैं यहाँ आया और इस बंधन को काटा मैंने।

सूका : *(सहसा क्रोध से)* मैं तेरा यह यहसान नहीं चाहती। मैंने तुझसे कहा भी नहीं कि तू मुझे बन्धन से छुड़ा, तूने मेरा बन्धन क्यों खोला?

इंदर : *(दीनता से)* मुझसे भूल हुई। मुझे वैसा नहीं कहना चाहिए था, मुझे माफ कर दो सूका।

सूका : *(आवेश से)* सूका गयी मर, सूका का नाम न ले, और अगर अपना भला चाह तो मुझे फिर इसी पावे में बाँध दे! बाँध, जैसे मैं थी।

[इंदर हतप्रभ खड़ा है।]

सूका : *(उत्तेजित हो)* तुझे गौ की सौगन्ध अगर तू मुझे उसी तरह नहीं बाँध देता।

इंदर : *(हाथ जोड़े)* मुझे माफ कर दो! जीभ ही थी निकल गयी! मैं माफी माँगता हूँ, मुझे वैसा नहीं कहना चाहिए था, मैंने तुम्हें क्या बन्धन से छुड़ाया, ईश्वर ने छुडाया।

सूका : बातें मत बना, ईश्वर कुछ नहीं, तैने ही अपने आप मेरा बन्धन खोला और तूही बाँध, खडा-खड़ा क्या मेरा मुँह देख रहा है। मेरा मुँह क्या उतने दिनों तक कलकत्ते में नहीं देखा था। पुलिस मुझे गिरफतार कर रही थी और तू दूर एक गली में खड़ा-खड़ा मेरा मुँह तक रहा था, तब मुझे देखकर तेरी तबीयत नहीं भरी थी क्या? बोल भरे इजलास में झूठ बोलकर राम-रामायण की कसम खाकर जब कमालपुरवाले मुझे हरा रहे थे, तब भी तू खड़ा-खड़ा इसी तरह मेरा मुँह तक रहा था।

[इंदर घबड़ाया हुआ चुप है, वह अब भी कभी जमीन की ओर देखता है, कभी सूका के मुँह की ओर।]

सूका : *(उपेक्षा से)* अब क्या मेरे मुँह को देख रहा है?

[एकाएक चुप हो जाती है और घूरती हुई इंदर को देखती है। इंदर अब सिर झुकाये खड़ा है।]

सूका *(गम्भीरता से)* मुझे बाँधता है कि नहीं। मुझे बाँध, नहीं तो मैं अभी गुहार मचाती हूँ।

[इंदर आगे बढ़ता है सूका उसी तरह पावे से सटकर खड़ी हो जाती है, इंदर चुपचाप चिंतित उसे बाँधने लगता है।]

सूका : कसकर बाँध, मैं जैसे बँधी थी, उसी तरह बाँध। मुझे तेरी दया नहीं चाहिए। *(रुककर)* जिसने मुझे बाँधा है, वही मुझे छुडायेगा।

[इंदर उसे बाँध चुकता है, वर्षा बिलकुल थम गयी है। इंदर अभियोगी की तरह उसके सामने खड़ा है।]

सूका : अब अपने रास्ते जा, जा यहाँ से, फिर कभी मेरे सामने न आना।

[इंदर निश्चेष्ट खड़ा है।]

सूका : *(व्यग से)* मुझे बचाने आये थे *(रुककर)* तब क्यों नहीं बचाया, जब मैं इजलास में हार रही थी, तब क्यों नहीं बचाया, जब मैं कमालपुर के मोह में फँसकर···।

[सूका एकाएक चुप हो जाती है और आँखें मूँद लेती है।]

इंदर : *(दीनता से)* लेकिन मैं बार-बार कहूँगा सूका, छोड़ दे इस घर को, और मेरे साथ निकल चल नहीं तो···।

सूका : *(उत्तेजित हो)* नहीं तो क्या! बता न!

इंदर : भगौती तुम्हें मार डालेगा।

सूका : तुझसे मतलब, वह मेरा पति है, मुझे मार डालेगा तो क्या, मुझे मंजूर है, वह, उसकी मार, उसकी

यातना और कमालपुर के कुएँ-नदी-नाले सब। लेकिन किसी भी हालत में तू नही, न तेरी दया, न तेरा गाँव, न कलकत्ता, न बम्बई, न सुख, न भोग, कुछ नहीं, चला जा यहाँ से, निकल जा मेरे घर से।

इंदर : *(गम्भीरता से)* मैं तुझे लेकर जाऊँगा।

[आगे बढ़ता है।]

सूका : खबरदार अगर मुझे छुआ।

इंदर : *(कमर में छिपे हुए लम्बे चाकू को निकालता है)* मैं उसके लिए भी तैयार होकर आया हूँ, किसी भी कीमत पर मैं तुम्हें यहाँ नहीं छोड़ूँगा।

[तेजी से बढ़कर सूका के बधन खोलने लगता है।]

सूका : *(क्रोध से चीखती हुई)* खबरदार अगर मुझ पर हाथ लगाया! अपनी खैर चाह तो अब भी यहाँ से भाग जा।

इंदर : मैं भगौती के लिए काफी हूँ।

[बंधन खोलकर सूका को पकड़ने चलता है, सूका चीखकर भागती है और शोर करने लगती है 'दौड़ो-दौड़ो चोर-चोर'। इंदर अपनी पूरी शक्ति से सूका को पकड़ता है, लेकिन उसी समय अन्दर से हाथ में लालटेन लिए भगौती दौड़ता है। भगौती पर दृष्टि पड़ते ही इंदर बायीं ओर भागता है, भगौती लालटेन को रखकर कोने में खड़े रखे हुए एक पहरूए (मूसल) को लेता है और इंदर का पीछा करता है। भीतर से घबड़ायी हुई नन्दो-राजी निकलती हैं। उसी समय हाथ में

लाठी लिये हुए बाहर से अलगू दौड़ा हुआ आता है ।]

सूका : *(चिल्लाती-सी खिड़की की ओर इंगित करके)* खिड़की, खिड़की !

[अलगू बायीं ओर भागता है । क्षणिक अन्तराल के उपरान्त पृष्ठभूमि में किसी की चीख आती है और कोई कराह उठता है । नन्दो-राजी बायीं ओर दौड़ती है, सूका पावे का सहारा लिए खड़ी रह जाती है । बायीं ओर से भगौती को सहारा दिये हुए अलगू आता है । भगौती की दायीं बाँह में घाव हो गया है और वह क्रोध तथा पीड़ा से बेचैन है । नन्दो के हाथ में मूसल है और राजी के हाथ में अलगू की लाठी । दोनों भगौती के पीछे प्रवेश करती हैं ।]

नन्दो : *(नन्दो प्रवेश करते ही सूका की ओर बढ़ती हैं)* अब तो छाती ठंडी हुई ! मरवाया न अपने……।

सूका : *(चुप है ।)*

भगौती : *(क्रोध से)* भाग क्यों नहीं गयी उसके साथ, भाग गयी होती !

सूका : *(चुप है ।)*

[उसी समय तेजी से पर्दा गिरता है ।]

मध्यान्तर

●

तीसरा अंक

[पर्दा दुद्दरे के आँगन में उठता है। कार शुक्लपक्ष के दिन हैं। सूरज डूबने में बस थोड़ी-सी देर है। आँगन के चारों खूँटों से धूप खिसककर ऊपर खपरैल की मुँडेरी पर चली गयी है।

सामने से, आँगन की बायीं ओर दालान नहीं है, बल्कि कमरे की दीवार है। आँगन में इसी दीवार के सहारे एक चारपाई खड़ी है। ऊपर दीवार में दो ताख और तीन खूँटियाँ हैं। ताखों पर मिट्टी के कुछ बर्तन रखे हैं, बीच की खूँटी पर बन्दर की एक मटमैली खोपड़ी टँगी है।

खड़ी की हुई चारपाई के पास एक दूसरी चारपाई बिछी है, जिस पर मटर सुखायी जा रही है।

पर्दा उठते ही हम देखते हैं कि आँगन के दायें भाग में सूका जमीन पर बैठी हुई हँसुए से से भाजी काट रही है। वह गन्धकी रंग की साफ साड़ी पहने है, सिर पर उतनी अस्तव्यस्तता नहीं है, लगता है उसमें तेल डालकर कंघी की गयी है। सिर आँचल से ढका है, लेकिन हाथ में चूँड़ियाँ नहीं हैं, बल्कि उनमें गिलट के एक एक पछेले पड़े हैं। वह सिर झुकाये चुपचाप भाजी काटती जा रही है। उसका मुँह सामने नहीं है, दीवार की ओर है। दुद्दरे में चक्की चल रही है, और उसकी चाल के साथ ही साथ पीसती हुई औरत का गीत सुनायी पड़ता है।]

हमरे बबैया जू के सात बेटौना रे ना,
रामा सातौ के चन्दा बहिनियाँ रे ना।
सातौ भईयवै चलें परदेसवा रे ना,

रामा चन्दा पकरि रोवै गोड़वा रे ना।
बरहे बरिसवा पै लौटे सातौ भैइया रे ना,
रामा बहिनी के लावैं चन्दा हरवा रे ना।
मोरे पिछुवरवा पंडित भैइया मितवा रे ना
भैइया चन्दा कै सोधो से गवनवाँ रे ना।
पहिले-पहिल चन्दा आयी है गवनवाँ रे ना,
रामा उनके सामी माँगे से पनियाँ रे ना।
पनियाँ अड़ोरत झलकै चन्दा कै हरौवा रे ना,
रामा कहाँ बहुरि पाइव चन्दा हरवा रे ना।
हमरे बबैया जू के सात बेटौवा रे ना,
सामी ओई दिहे चन्दा हरौवा रे ना।
सामी न विसास करे चन्दा कै बतिया रे ना,
रामा चन्दा से मागै लै किरियवा रे ना।

[एकाएक चक्की के साथ ही साथ गीत का स्वर थम जाता है और दुइदरे से लेकर समूचे आँगन का वातावरण शान्त हो जाता है। सूका आँचल से अपने आँसू पोछती हुई सिर उठाती है, दुइदरे की ओर देखती हुई। डलवे में आटा लिये चक्की पर गाती हुई औरत दुइदरे से आँगन में उतरती है और सूका के सामने बैठ जाती है।]

सूका : *(उदासी से)* सब पीस चुकी?

औरत : हाँ दीदी, सेर ही भर तो गेहूँ था। महदेई बुआ के घर से उधार लायी हूँ, आज घर पर पहुना आये हैं न!

सूका : लेकिन गीत तो पूरा कर देती!

औरत : हटाओ दीदी तुम भी क्या हँसी करती हो, अरे अकेले चक्की चलानी थी, तबीयत भुलवाने के लिए गा दिया,

नहीं तो कमालपुर में अब क्या गाना, क्या रोना दीदी,
अरे वही मसल है कि भूल गये रागरंग भूल गयो सगरी,
तीन चीज याद रहो नोन तेल लकड़ी।

सूका : लेकिन क्या होता है इस रोने से, मैंने तो देख लिया, कल्ल मारने से कुछ नहीं होता (*रुक जाती है*) हाँ गावो न सही, तो बता ही दो, उसके बाद क्या हुआ चन्दा का।

औरत : उसके बाद दीदी, गाया गया है कि चन्दा को सुसराल में अपने सत् की परीक्षा देनी पड़ी। क्योंकि उसके सास-सुसर, देवर-ननद को कौन कहे, जब उसका पति ही संदेह कर रहा था कि वह चन्दा का हार असत् का था।

सूका : तब ?

औरत : तब क्या दीदी, लोहार से धरम की कड़ाही बनवायी गयी। बढ़ई ने चन्दन की लकड़ी तैयार की। तेली ने धरम का तेल दिया। चन्दा नैहर से अपने साथ एक सुगना लायी थी। उसी सुगना को सारा संदेश देकर चन्दा ने उसे अपने नैहर भेजा। उसके सातो बीरन आये। तेल से भरी हुई कड़ाही आग पर चढाई गयी, और उसके पास अग्नि परीक्षा देने के लिए चन्दा खड़ी हुई। उसे घेरकर सब बैठे—पति, सुसर, देवर और उसके सातो बीरन।

सूका : फिर !

औरत : खौलती हुई कड़ाही में कूदने से पहले चन्दा ने आँचल पसारकर कहा, कि 'हे आग गोसाँई ! अगर मैं अपने सामी की सच हूँ तो हे धर्म की माता ! तू मेरे लिए जूड़ पाला हो जा, नहीं तो मुझे भस्म कर दे !' यह कहकर

चन्दा कड़ाही में कूद पड़ी। आग बुझ गयी, सारा तेल पाला हो गया।

सूका : तब !

औरत : तब क्या ? तब है कि—(*गाती हुई*)

मुँहवा रूमलिया दै के रोवै चन्दा समियाँ रे ना,
रामा मोरा सती मोका छोड़ि जै हैं रे ना।
सत् इतनी देखिकर भैइया कढ़ैता रे ना,
रामा बहिनी जोग डँड़िया फनावैं रे ना।
यक बन गइली दुसर बन गइली रे ना,
रामा तिसरे में मिली बन-तपसिन रे ना।
बहियाँ पकरि समुझावै बन-तपसिन रे ना,
बेटी सामी कर धरौ न गुनहवाँ रे ना।

[*दोनों चुप रह जाती हैं।*]

सूका : (*उठती हुई*) जब सामी सत् था, तभी उसकी तिरिया भी सत् थी।

औरत : (*उठकर*) हाँ, और क्या, सत् तो था ही, आज की तरह थोड़े था।

सूका (*चुप चिन्तित खड़ी है।*)

औरत तुम अपनी ही हालत देखो दीदी ! हाय ! मैं तो सोचकर काँप जाती हूँ। तुम्हीं जैसी पत्थर की औरत हो कि सब ओढ़ती जा रही हो। लेकिन नहीं, उन्होंने फिर भी तुम्हारे सिर पर एक सौत ला ही खड़ा किया।

सूका मुझसे बदला लेने के लिए उसने दूसरी की है—'जो न मरी तू काटे कीरा, तो तूँ मरो सौत के पीरा।' लेकिन

यह तो अपनी-अपनी भाग है। लच्छी मुझे सौत की तरह नहीं, मेरी छोटी बहन की तरह लगती है। (रुककर) राजी मेरी देवरान थी, वह मेरे लिए लड़ती थी, उसे अलग होना पड़ा, लेकिन लच्छी भी मुझे राजी की ही तरह मिली।

औरत : भगवान् सबका मालिक है दीदी ! 'जाको राखै साइयाँ मार न सकिहैं कोय !'

सूका : लाख बार नहीं-नहीं करने पर भी जबरदस्ती लच्छी मुझे नहलवाती है, मेरा सिर धो देती है, तेल डालकर कंघी करती है, सो भी उससे छिप-छिप करके, नहीं तो वह अगर यह देख ले कि लच्छी मेरी सेवा कर रही है, तो वह उसकी खाल उधेड़ ले। मुझसे हँसकर बोलते देखकर उसने लच्छी को कई बार मारा है, तब से मैं लच्छी को बचाती रहती हूँ, उसकी आँख से उसे छिपाती हूँ।

औरत : कहाँ है लच्छी ?

सूका : छिपकर राजी की ओर गयी है, आती होगी। (रुककर) देखो न, यह साड़ी भी उसी की है, जबरदस्ती उसने आज पहना दी है। क्या होगा यह सब मुझे !

औरत : क्यों नहीं होगा, विपत्ति ने चाहे जो कर दिया है, वैसे अभी तुम्हारी उमर ही क्या है ! मेरे सामने तो अभी ब्याह कर आयी हो।

सूका : *(उदासी से चुप है।)*

औरत : *(अपने आप)* 'आय पर्यो कठ पींजरे, रटौ राम का नाम !'

सूका : *(उदास निश्चेष्ट खड़ी रहती है।)*

औरत : (*बात बदलती हुई*) नन्दो अपनी सुसराल गयी, अब पता चला होगा कि सिर में कितने बाल हैं।

सूका : हाँ, अभी परसों ही तो खबर मिली है, तबकी तो मरद ने मारा था, अबकी ससुर ने मारा है, लेकिन नैहर की बान मारे से थोड़े जायगी, 'परका गोह करौना खाय।' यह धर वह उठाव, यह बेच, उसे लगाव, यही बान तो लेकर यहाँ से गयी है।

औरत : तभी पता चला होगा, जब सास सुसर जेठानी-देवरानी की आँखों में धँसी होगी।

सूका : तीन ननद भी हैं, सिर पर चढ़ी रहती हैं। नाऊ से अपने भाई के पास खबर भिजवायी थी कि 'भइया, मुझे जल्दी ले चले, मेरी रहाइस नहीं है रोज-रोज मार, ताना-बोली देवरानी-जेठानी का झगड़ा।'

औरत : ओ हो हो! 'न कर सास बुराई, तेरे धी के आगे आयी।' आज नन्दो के सिर पर यही बरसा न।

सूका : वहाँ अब चाहे जो बरसे, लेकिन यहाँ नैहर में तो आग लगाकर गयी।

औरत : देखना दीदी! अब वहीं सब आगे उतरेगा।

[जाने लगती है, आँगन के सिरे पर पहुँचती है, फिर घूमती है।]

औरत : लच्छी का नैहर कहाँ है दीदी?

सूका : यही रामपुर तो!

औरत : अच्छा तो वह आदमी रामपुर का ही था, जिसे उस बार भगौती बाबू ने डाँटा था, कि खबरदार, फिर कभी मेरे दरवाजे पर मत आना!

सूका : (एक क्षण उदासी से चुप रहती है) नहीं, वह उस गाँव का नहीं था।

[भाजी की थाली उठाकर शीघ्रता से सूका दुइदरे में चली जाती है। औरत बाहर मुड़ती है, और क्षण भर के लिए आँगन सूना हो जाता है। एकाएक पृष्ठभूमि में भगौती की आवाज सुनायी पड़ती है। वह बाहर से आँगन में आता है, उसके साथ हरखू मौसिया भी हैं।]

भगौती : (आँगन में उतरते ही कड़े स्वर से) सुकिया !

[सूका चुपचाप दुइदरे के आँगन में आने लगती है।]

भगौती : बोला क्यों नहीं जाता ! मुँह में दही जमा रखा है, (रुककर) चारपाई पर अब तक मटर का सुखावन पड़ा है। कई दिन हुए मार नहीं पड़ी, तभी।

[सूका चुपचाप चारपाई पर से कपड़े सहित मटर उठा लेती है।]

भगौती : मार के भूत बात से नहीं मानते

[सूका आँगन से दुइदरे में जाती है।]

भगौती : मटर रखकर जल्दी से इधर आ ! (चारपाई पर बैठता हुआ) आवो मौसिया इधर बैठो।

[सिरहाने बैठाता है।]

हरखू : ई है कि ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है भगौती ! मैं तो यही समझता हूँ।

भगौती मैं भी यही समझता हूँ मौसिया !

हरखू　: ई है कि अलगू ने तुमसे बँटवारा कर लिया तो क्या हुआ तुम्हारे ही हक में अच्छा हुआ।

भगौती　: क्यों नहीं, सिर से एक बला तो टली।

हरखू　: बला ही नहीं, ई है कि तुम्हारा हर तरह से फायदा हुआ (*भगौती चुप है*) पूछो कैसे, ई है कि पहली बात तो यही है कि इसी मिलजुमला पैदावार से तुम्हारे सिर का सारा कर्जा उतर जायगा, फिर चालिस बीघे खेत बराबर बँट जायेंगे।

भगौती　: (*प्रसन्नता से*) और मकान की अगली खण्ड भी मुझे ही मिली, कितनी अच्छी गोट पडी मौसिया।

हरखू　: ई है कि बेटा गोट्टी क्या पडी, ये सब तो दायें-बायें हाथ के करतब हैं। देखा ही, बँटवारे की पंचायत में मिनकू फटफटा कर रह गये, एक भी तो दाल न गली!

भगौती　: बस, तुम्हारा ही तो प्रताप है मौसिया! नहीं तो न जाने क्या होता!

हरखू　: होता क्या, ई है कि, क्या होता। सारे पंच तो अपने हाथ मे ही थे। (*गिनाते हुए।*) देबीदयाल तो अपना ही आदमी था, रामलोट को गाँजा ही पिलाया जाता है, बलेसर को......।

भगौती　: (*एकाएक हरखू के मुँह पर हाथ रख देता है*) चुप-चुप-चुप मौसिया, कहीं सुकिया ने सुन लिया तो गजब कर देगी, चुड़ैल तीन में तेरह लगाकर अलगू के घर लेस आयेगी। फिर तो जानते ही हो मौसिया, घर का भेदी लंका ढाहे।

हरखू : (आश्चर्य से) तो क्या अलगू के घर से उसका अब भी आना-जाना है ?

भगौती : वही चोरी-लूका ।

हरखू : घर के हद में डँड़वार नहीं उठवा लिया ?

भगौती : उठवा तो लिया है, लेकिन आने-जाने के और भी तो रास्ते हैं ।

हरखू : (झुँझलाहट से) रहे बुद्धू के बुद्धू, तब बँटवारे से क्या फायदा ? (सोचते हुये) ई है कि वही मसल है, 'पूत से बैर पतोहू से नाता ।' इस तरह से सारा घर बिक जायगा ।

[सूका दुइदरे में दिखायी पड़ती है ।]

भगौती : (कड़े स्वर से) मैंने कहा था कि मटर रखकर जल्दी से यहाँ आ । सुना नहीं गया ।

[सूका आँगन में आकर खड़ी हो जाती है ।]

भगौती : (क्रोध से) छाती की एक-एक हड्डी तोड़ दूँगा, अगर तिल भर भी मठेठा मेरी बात को ।

[सूका चुप खड़ी है ।]

भगौती : लच्छी कहाँ है ?

सूका : (गम्भीरता से) घर में ।

भगौती : किस घर में ? अलगुआ के घर में तो नहीं ।

सूका : नहीं, अपने घर में ।

भगौती : सब समझता हूँ तेरी चाल । उसको पढ़ा-पढ़ाकर अपना बना लिया है । (दाँत पीसता हुआ) उसकी भी एक दिन सामत है (रुककर) जा, चिलम चढ़ा ला । और देख, थोड़ी भाँग पीस देना, मौसिया तुम भी लोगे न ?

[सूका लौट जाती है ।]

हरखू : *(मुस्कराकर)* खूब मानती-जानती है न छोटकी !

भगौती : माने-जानेगी नहीं तो जायगी कहाँ, *(रुककर)* कुछ दिन तो मौसिया जरूर उसने नाज-नखरा दिखाया था, कुछ चालें चली थीं, लेकिन एक ही बार मैंने डाँटा, कि हे लच्छी की दुम, खरीद कर लाया हूँ काट कर फेंक दूँगा बस तब से सारा नशा......*(धीमे स्वर से)* और मैंने उससे साफ-साफ कह दिया कि देख, तू मेरी औरत तो है ही लेकिन असली रूप में तू सूका की सौत बनकर आयी है, चौबिस घंटे तुझे सवार रहना है उसके सिर पर ।

[दोनों हँसते हैं और भगौती पुलक से भर जाता है ।]

हरखू : ई है कि तुम बड़ी सूझ के आदमी हो भगौती, एक पंथ दो काज ।

भगौती : लेकिन मौसिया, एक चिन्ता मुझे जरूर है !

हरखू : क्या ?

भगौती : यही कि सूका और लच्छी से पटती है ।

[दोनों आश्चर्य से एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं, उसी समय हुक्के पर चिलम चढ़ाये सूका आती है । भगौती उसके हाथ से हुक्का लेकर हरखू को देता है ।]

भगौती : *(सूका से)* भाँग पिस गयी ?

सूका : नहीं !

भगौती : क्यों नहीं !

सूका : (*जाती हुई*) हाथ में मेंहदी रचाकर बैठी थी, इसीलिए (*रुककर*) न जाने किस हाथ से चिलम चढ़ाती और न जाने कैसे इधर भाँग भी पीसती।

[भीतर चली जाती है।]

भगौती : (*कड़े स्वर से*) अभी आके सचमुच तुमपै मेंहदी रचूँगा, समझी की नहीं, (*रुककर हरखू से*) सुना न मौसिया इसकी जबान, यह सीधे तो बोलना ही नहीं जानती, और उल्टे मेरा नाम बिकता है कि मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ!

[उसी समय हुक्का पीते-पीते हरखू को खाँसी आने लगती है।]

भगौती : जरूर उसने तम्बाकू में मिरचा मिलाया होगा, *[उठकर हुक्के से चिलम ले लेता है और आवेश में भीतर जाता है। पृष्ठभूमि में पहले कुछ फूटने की आवाज होती है फिर मारने की। क्षण भर में भगौती खाली हाथ आँगन में लौटता हैं, क्रोध से उसकी साँसे अब भी फूल रही हैं। उसी के पीछे आँसू पोंछती हुई तेजी से सूका आती है।]*

सूका : (*हरखू के सामने तम्बाकू देखाती हुई*) झूटे कहीं के! कहाँ है इसमें मिर्चा? मरवाने आते हैं, अपनी बहन-बिटिया पर इसी तरह मार पड़े तो पता चले!

[उत्तेजित सूका को भगौती पकड़ लेता है। उसी समय भीतर दुइदरे में लच्छी दिखायी पड़ती है, भगौती सूका को बरबस खींचता हुआ भीतर ले जाता है और उधर चुपके से हरखू बाहर खिसकते हैं। क्षण भर बाद भगौती आँगन में लौटता है।]

भगौती : *(कमर पर हाथ रखकर)* अब भी नशा चूर नहीं हुआ ! बेहया कहीं की !! *(क्षण भर रुककर पुकारता है)* लच्छी । चल इधर !!

[भीतर से चुपचाप डरी हुई लच्छी आती है । उम्र प्रायः अठारह वर्ष, रङ्ग गहुँआ, कद सूका ही जैसा, लेकिन भरा हुआ शरीर, व्यक्तित्व में यौवन का सारा वैभव । आँगन में आकर गुलाबी आँचल से अपना माथा ढक लेती है, और सिर झुका लेती है ।]

भगौती : *(अनुशासन के स्वर में)* कहाँ थी ?

लच्छी : *(दबे स्वर में)* घर में ।

भगौती : किस के ?

लच्छी : अपने !

भगौती : सूका ने जो साड़ी पहन रक्खी है वह कहाँ से आयी ?

लच्छी : *(चुप है ।)*

भगौती : *(कड़े स्वर में)* बोलती है कि अभी !

सूका : *(सहसा भीतर से आकर)* मैंने खरीदी है ।

भगौती : खरीदी है ! इंदरचा की कमाई से ।

सूका : उसकी कमाई पहनने की तुझे रोजी हो, मैंने अनाज बेच कर खरीदी है ।

भगौती : *(सूका को घूरकर अपनी दृष्टि लच्छी पर जमा देता है)* क्यों ? सर ऊँचे उठाओ, उठाओ, मुझे देखो, हाँ, जब इस घर की एक-एक चीज, अनाज का एक-एक दाना, तुम्हारे जिम्मे है, तब सूका ने अनाज कैसे बेचा ? और कैसे यह साड़ी खरीदी गयी, बोल नहीं तो अभी खाल खींच लूँगा ।

सूका : (बीच ही में) उसे क्या पता, उससे छिपकर मैंने अनाज बेचा है।

भगौती : (क्रोध से) आखिर क्यों?

सूका : इसलिए कि मैं नंगी नहीं रह सकती। मुझे तन ढकने को बस्तर चाहिए, क्योंकि मैं चौबीस घंटे तुम्हारे घर में टहल करती हूँ।

भगौती : (कड़े स्वर से) करना ही होगा, और नंगे करना होगा, तेरी यह मजाल कि तूने अनाज बेचकर साड़ी खरीदी है।

[आवेश में बढ़कर सूका को पकड़ लेता है।]

भगौती : (भीतर ले जाता हुआ) तुझे लच्छी की उतारी हुई फटी साड़ी पहननी होगी, क्या समझ रखा है तूने।

[भीतर खींच ले जाता है। लच्छी आँचल से मुँह ढककर रोने लगती है, भीतर भगौती की डाँटती हुई आवाज सुनायी पड़ती है। हाथ में सूका के बदन से छीनी हुई साड़ी लिए भगौती लौटता है।]

भगौती : (लच्छी के पैरों पर फेंकता हुआ) लो इसे तुम पहनो! और जब यह फट जाये, तो इसे सूका पहनेगी।

[लच्छी आँसुओं को छिपा लेती है।]

भगौती : उठाओ साड़ी!

[लच्छी उठा लेती है।]

भगौती : इसे धुलवाकर पहनना। (रुककर) सुनो, जाओ इधर से दुइदरे की किवाड़ बंदकर लो। (लच्छी जाती है) जंजीर चढ़ा लेना।

[दुइदरे की किवाड़ बंदकर वापस लौटती है।]

भगौती : और पास आ जाओ, सुनो, जरा कान खोलकर सुनना, मैंने तुमसे बीसों बार समझाया और आज आखिरी बार समझा रहा हूँ। तुम्हें इसे घर में लाये हुए मुझे डेढ़ महीने बीत गये, और तुमको मैंने क्या समझाया था, यही कि तुम इस घर की मालिकन हो। सूका के सँग उठो-बैठो नहीं, उससे मेल-जोल न करो। अगर वह इसके खिलाफ एक भी कदम चले तो उसे डाँट दो, उसका खाना बंदकर दो या सीधा से सीधा तरीका, मुझसे कह दो, *(रुककर)* लेकिन तुमने क्या किया, कुछ भी नहीं, सब मेरे खिलाफ! आज डेढ़ महीने हो गये तुझे इस घर में आये, आज तक लेकिन सूका की एक भी शिकायत नहीं, उससे एक दिन भी अनबन नहीं, इसके क्या मतलब हैं, बोलो जवाब दो।

लच्छी : *(डरी हुई)* कुछ नहीं!

भगौती : *(झुँझलाता हुआ)* कुछ नहीं क्या, कुछ नहीं के क्या मतलब होते हैं? बोलो, बोलती क्यों नहीं!

[लच्छी निश्चेष्ट भगौती को देखती हैं, फिर दृष्टि नीचे गिरा लेती है।]

भगौती : यह आखिरी बार तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, और आज से मैं देखूँगा कि तुम मेरी बातों पर कहाँ तक अमल करती हो। *(रुककर प्रश्न करता है)* आज से मेरी बताई हुई बातों पर चलोगी न।

लच्छी : चलूँगी!

भगौती : देखूँगा *(रुककर)* राजी के घर तो तब से नहीं गयी!

[लच्छी सर हिलाती है।]

भगौती : *(झुँझलाकर)* मन भर का सिर न हिलाओ, जबान से बोला करो *(रुक जाता है)* खाना कौन बनाता है?

लच्छी : दीदी !

भगौती : *(बिगड़कर)* खबरदार ! जो फिर सुकिया को दीदी कहा, उसका नाम लिया करो, जैसी करनी, वैसी भरनी । अगर दीदी ही बनने लायक होती तो...।

[उसी समय बाहर से राजी आती है और चुपचाप दुइदरे में बढ़कर बंद किवाड़ खोलती है, और भीतर चली जाती है ।]

भगौती : *(गम्भीरता से)* जा देख आ राजी कहाँ और कैसे आयी है !

[लच्छी भीतर चली जाती है । भगौती आँगन में चक्कर लगाता है कुछ क्षणों में ही दायें हाथ में लोटा लिये हुए लच्छी आती है ।]

भगौती : क्या है ?

लच्छी : कुछ नहीं, आग लेने आयी है ! *(लोटा बढ़ाते हुए)* यह भाँग है ।

[पूरा लोटा एक ही साँस में पी जाता है ।]

भगौती : *(अपने-आप)* आग लगाय जमालो दूर खड़ी, इसे कोहार का घर समझ रखा है ।

राजी : *(झुँझलाकर)* कोंहार क्या, चमार से भी बत्तर ।

भगौती : लेकिन एक दिन भी चैन नहीं पड़ता बिना इस घर में आये ।

[जलकर देखती हुई राजी बाहर चली जाती है, दिन डूब चुका है । आँगन के किनारे-किनारे अंधकार की पहली पर्त अब फैल रही है । भगौती बाहर

चला जाता है। लच्छी एक क्षण चुपचाप खड़ी रहती है, फिर एकाएक रो पड़ती है। भीतर से चिराग लिये दुइदरे में सूका आती है, पावे पर चिराग रखकर तेजी से आँगन में आती है। सूका इस बार जिस कपड़े से अपना तन ढके है, उसे हम साड़ी नहीं कह सकते, बस वह एक फटा-पुराना वस्त्र है, जिसमें सूका लिपटी हुई है आँगन में आते ही वह अपनी बाहों में लच्छी को भर लेती है।]

सूका : *(मनाती हुई)* मत रोओ! न रोओ मेरी लच्छो! *(लच्छी उसके अंक में जैसे छिपती जा रही है)* रोने के लिए मैं हूँ ही। मेरे जीते अगर तुम्हें भी रोना पड़ा तो मेरे आँसू बेकार हैं। मुझे देख, रोओ नहीं, आखिर हुआ क्या! डाँटा है उसने, मारा है क्या, बताओ न मुझ *(सूका स्वयं रोने लगती है और उसका गला रुँध जाता है।)*

लच्छी : *(भरे स्वर से)* मुझे धमकाया है कि मैं तुम्हारे सँग उठूँ-बैठूँ न, तुमसे बोलूँ न। हर दम उससे तुम्हारी चुगली करूँ।

सूका : तो इसमें रोने की क्या बात है।

लच्छी : *(सिसकती हुई)* आज मेरे माँ-बाप होते तो मैं इसके हाथ क्यों बेची जाती! *(रोने गगती है।)*

सूका : मैं तो हूँ ही, धीरज बाँधो न! इस तरह रोओगी तो कैसे काम चलेगा! कहीं उसने देख लिया तो...।

लच्छी : *(सहसा सूका के पैरों पर गिर पड़ती है)* दीदी, मैं इसकी साया में अब एक दिन भी नहीं जी सकती!

सूका : *(उसे अंक में भरकर उठाती हुई)* घबड़ाओ नहीं बच्ची !

लच्छी : वह यहाँ तक कहता है दीदी, मैं तुम्हें दीदी न कहूँ। हाय, मैं कहाँ बुड-धँस मरूँ।

सूका : ऐसी बात मुँह में न लाओ बेटी, बुडना-धँसना बहुत बड़ा पाप है, लोग बताते हैं कि इस तरह मरने से आदमी शैतानों की गिरोह में चला जाता है, और उसे कभी छुटकारा नहीं मिलता। *(रुककर)* एक शैतान से बचने के लिए सदा के लिए शैतान हो जाना, फिर कभी ऐसी बातें न सोचना।

[दोनों चुप होकर जैसे कुछ सोचने लगती हैं।]

लच्छी : न जाने कैसे आज तक तुम इस घर मे जिन्दा हो दीदी ! गजब का कलेजा है तुम्हारा।

[सूका बरामदे में अन्धकार को देखती हुई चुप है।]

लच्छी : दीदी ! चलकर दूसरा कपड़ा पहन लो ! मेरी दूसरी साड़ी वह नहीं पहचान पायेगा।

सूकाहै : *(चुप।)*

लच्छी : *(सूका का दायाँ हाथ पकड़कर)* चलो न दीदी ! मैं जल्दी से तुम्हारे लिए खाना बनाऊँगी।

[सूका का हाथ पकड़े हुए लच्छी दुइदरे को पार करके भीतर चली जाती है, क्षण भर बाद आँगन में मिनकू काका आते हैं।]

मिनकू : *(स्नेह से पुकारते हुए)* सूका ! ओ सूका !

सूका : *(भीतर से दौड़ी हुई आकर)* क्या है काका ! खड़े क्यों हो, बैठो। *[मिनकू खाट पर बैठते हैं।]* काका तुम तो मेरी खोज-खबर ही नहीं लेते।

मिनकू : (उदास चुप है।)

सूका : मैं इस घर के पिंजरे में बन्द हूँ। तुम्हें तो आना चाहिए न काका!

[तेजी से भीतर भागती है और एक बीड़ी जला कर लाती है।]

सूका : (देती हुई) मैं तुम्हारे लिए बीड़ी रखती हूँ काका!

मिनकू : (एक कस लेकर) मैं तो तुम्हारे हाथ का हुक्का भी पी सकता हूँ, मुला तुम तो देती ही नहीं!

सूका : मैं इस घर का हुक्का तुम्हें नहीं दूँगी काका, तुम्हें लोग हँसेंगे, नाम बेचने लगेंगे तुम्हारा।

मिनकू : नाम है ही कहाँ जो लोग बेचेंगे।

सूका : वाह! है क्यों नहीं (रुककर) तुम्हीं तो एक आदमी हो इस गाँव भर में काका!

मिनकू : सुना है लच्छी तुम्हें बहुत मानती है।

सूका : यही तो हम दोनों के लिए काँटा है। (रुककर) इतनी अच्छी लड़की न जाने यहाँ कैसे आ फँसी काका! उसकी भी किस्मत को क्या कहूँ! उसे पत्नी बना ले आये लेकिन एक दिन भी उसे पत्नी की तरह देखा होता तब भी।

मिनकू : (बीच ही में) वह साथियों से तो कहता है कि लच्छी को मैं सूका के सिर पर सौत बनाकर लाया हूँ, चाहता हूँ कि लच्छी के हाथों सूका के सीने पर चौबीस घंटे चक्की चलायी जाय।

सूका : फिर सोचो काका, एक औरत को यातना देने के लिए दूसरी औरत की भी यातना की जाती है, और काका तुमसे क्या कहूँ, लच्छी देवी जैसी है।

[एकाएक बाहर बरामदे से भगौती के खाँसने की आवाज उठती है, सूका धीरे से दुइदरे में चली जाती है। मिनकू बीड़ी पीकर नीचे जमीन पर फेंक देते हैं, और खाट से उठकर उसे दायें पैर के तले घिस देते हैं। उसी समय बाहर से भगौती आता है।]

भगौती : (*आते ही*) राम-राम काका!

मिनकू : राम, राम!

भगौती : बैठो न काका। कहाँ चल दिये, (*रुककर*) अकेला अलगू ही तो नहीं, मैं भी तो तुम्हारा भतीजा हूँ। यह भी तो तुम्हारा घर है काका।

मिनकू : (*मुस्कराकर*) आज बड़ी मीठी बोल, बोल रहे हो, खूब भाँग चढ़ा ली है क्या! और मुझे गाली कब दोगे?

भगौती : तुम तो मुझे झूठ-मूठ में बदनाम करते हो काका! अब तो मैंने सब राह पैंड़ा भी छोड़ दिया, 'न ऊधो की लेने, न माधौ की देने!'

मिनकू : अलगू से उठक-बैठक रखते हो कि नहीं। लच्छी ठीक है!!

भगौती : क्या ठीक, क्या बे ठीक काका! यह भी कोई बात थी कि मैं एक छोड़ दूसरी लाता, जब सूका भागी थी, और उसके मिलने की कोई आस न थी (*रुककर*) लेकिन नहीं, मजबूरी सब कुछ कराती है काका! जब आस लगाये-लगाये, देवी-देवता मनाते-मनाते मैं हार गया फिर भी सूका से

किसी संतान की उम्मीद न हुई तब मुझे हारकर लच्छी को लाना पड़ा। अपनी आल-औलाद के लिये इंसान को जो भी कुछ न करना पड़ जाये, मजबूरी ही है, क्या किया जाय, नहीं तो क्या मुझे अच्छा लगता है कि चलने को दम नहीं, रजाई का फाँड़ बाँधूँ।

मिनकू : *(केवल सिर हिलाते रहते हैं।)*

भगौती : वैसे काका! इस शादी ने मेरे सिर पर फिर कर्ज लाद दिया। *(रुककर)* और तो और इसी के विरोध में तो अलगू ने बँटवारा किया है।

मिनकू : बड़ी महँगी पड़ी तुम्हें यह शादी!

भगौती : मजबूरी थी, क्या करता काका, कहाँ तक महँगी-सस्ती देखता। और फिर तो अपना नफा-नुकसान मैं ही समझ सकता हूँ, दुनिया से क्या! दुनिया तो इसी फिराक में रहती है कि किसका निरवंश हो और हम उसकी हड़पें *(रुककर)* मैं सब समझता हूँ काका।

मिनकू : बड़े समझदार हो तुम।

भगौती : *(बढ़कर दीवार की खूँटी से बन्दर की खोपड़ी ले लेता है।)* देखो न काका, यह बन्दर की खोपड़ी है न! इसे मैं रिसालगंज के एक औघड़ के यहाँ से लाया था। यह उस औघड की पूजी हुई खोपड़ी थी, उसने बताया था कि इस खोपड़ी को ले जाकर उस कमरे के दरवाजे पर टाँग देना जिसमें तुम्हारी औरत सोती हो, मैंने यह भी करके देख लिया, लेकिन कुछ नहीं, टाँय-टाँय फिस, बंजर धरती में भी कभी कुछ हुआ है काका, या बेंत में कभी किसी ने फल-फूल लगते देखा है, 'जदपि सुधा बरसे जलद

[बन्दर की खोपड़ी को फिर उसी खूँटी पर टाँग देता है।]

मिनकू : फिर तो यह खोपडी झूठी है, अब क्यों इसे रखते हो, ले जाकर फेंक न आवो उसी औघड़ के पास।

भगौती : अहा-हा हा ! यह खोपडी नहीं झूठी है काका, झूठी तो सूका है, जब उसमें औरतपन ही नहीं है तो फिर इस खोपड़ी का क्या दोष !

मिनकू : लेकिन उसकी हत्या तो तुम्हीं ने की है।

भगौती : *(सहसा बिगड़कर)* यह कहते हुए तुम्हें लाज नहीं आती।

मिनकू : *(गम्भीरता से)* लाज तो आती है, इतनी आती है कि अपनी आँख फोड लूँ, जिससे तुम्हारा घर न देखूँ लेकिन......।

[चुप हो जाते है, फिर बाहर निकल जाते हैं। भगौती आँगन में तिलमिलाया हुआ खड़ा है, क्षण भर बाद वह लच्छी को पुकारता है। लच्छी आती है।]

भगौती : *(देखता हुआ)* क्या कर रही थी तुम ? क्यों इस तरह पसीने से तर हो ?

लच्छी : बैठी तो थी, भीतर गर्मी है

भगौती : तो आँगन में बैठो न। मरने दो उस चुड़ैल को भीतर, तुम्हें क्या ?

लच्छी : *(चुप खड़ी है।)*

भगौती : जावो अपना बिछावन उठा लाओ, इसी खाट पर बिछा लो, अँजोरिया रात है बस यहीं आराम करेंगे।

[उसी बीच बाहर से तेजई और मूरत की आवाज आती है 'ओ भगौती भाई' और इस पुकार के साथ-ही-साथ वे दोनों आँगन में आने लगते हैं, लच्छी तेजी से भीतर भागती है। वे दोनों हाथ में लाठी लिए हुए आँगन में आ जाते हैं।]

तेजई : मरदवा सामी कहीं के, हरदम चूल्हे में क्या घुसे रहते हो ?

मूरत : *(खाँसी मारता हुआ)* अरे भाई क्यों नहीं, कहा जो है 'मरद मोछारा दूसर जोय इन्हें अलगि जनि देख्यो कोय' अब तो उसे चौबीस घंटे रखायेंगे न।

तेजई : हाँ, और क्या, दूध की जली बिलार माठा फूँक-फूँककर पीती है।

भगौती : अरे भाई सब मालूम है, अब मेरी भी तो सुनो। पहले यह तो बताओ काम हो गया कि नहीं।

मूरत : काम क्यों नहीं होगा ! कभी ऐसा हुआ भी है कि काम न हो।

तेजई : पक्के गुइयाँ हैं भाई। जो कह दिया, वह समझो हो गया।

भगौती : *(प्रसन्नता से)* सच !

मूरत : और क्या झूठ ! *(धीमे स्वर से)* सब पक्का इन्तजाम करके आये हैं।

तेजई : जैसे ही खाना-वाना खाकर बड़े गाँव में सोउता पड़ेगा, और जानते ही हो गाँव की पहली नींद कैसी होती है। बस उसी समय इंदरवा के घर में आग लगेगी।

मूरत फिर हम लोग यहीं कमालपुर से तमाशा देखेंगे।

[भगौती प्रसन्नता से 'वाह-वाह' करता हुआ दोनों को बारी-बारी से अंक में उठा लेता है और आँगन में नाच उठता है ।]

भगौती : कुछ धुआँ-पानी हो जाय, बम शंकर !

तेजई : अभी कुछ नहीं भाई, पहले काम, फिर इनाम !

भगौती : काम तो हुआ ही समझो, जिसमें तुम्हारे हाथ लेंगे वह काम न हो, क्या मजाक करते हो !

सूरत : चलो बाहर बैठेंगे, वहीं से इंदरवा का घर जलते हुए देखेंगे ।

तेजई : बस तभी कुछ होगा ।

[दोनों बाहर जाते हैं, कुछ क्षणों के लिए आँगन सूना हो जाता है भीतर से सूका और लच्छी आँगन में आती हैं, उसी समय बाहर से भगौती आता है । सूका तेजी में लच्छी से दूर हट जाती है ।]

भगौती : *(सूका से)* देखो, जल्दी से तीन थाली खाना परोसकर बाहर बैठक में लाओ ।

लच्छी : *(बीच ही में)* इतना खाना लेकिन कहाँ बना है ?

भगौती : मैं इसका जिम्मेदार नहीं, जल्दी करो ।

[तेजी से बाहर मुड़ जाता है । लच्छी-सूका दोनों पास आ जाती हैं, आँगन में सप्तमी की चाँदनी फैली हुई है । लेकिन दोनों चुप शून्य में देख रही हैं ।]

सूका : *(स्नेह से)* मैं तुम्हारे लिए फिर से खाना बनाऊँगी ।

लच्छी : नही नहीं दीदी सच, राम कसम मुझे तिल भर भूख नहीं है।

सूका : तब तक लग जायेगी न ! फिर से खाना बनाने में मेहनत ही क्या है। चूल्हा जल ही रहा है, थोड़ा-सा चावल-दाल डाल दूँगी, बस।

लच्छी : लेकिन दीदी एक शर्त होगी, तुम भी खाओ, तभी मैं खाऊँगी, अकेली नहीं !

सूका : मैं कैसे खाऊँगी। खा ही पाती तो क्या ! जब तक यह पुरवैइया बहेगी, रात को मैं कहाँ खा पाती हूँ। उस बार इसने इसी पेट ही में तो हनकर एक लात मारा था, *(रो पड़ती है)* तब से यह बैरिन पुरवैइया और यह अभागा पेट।

लच्छी : *(उदास चुप है।)*

सूका : तुम यही बैठो, मैं बाहर थाली दे आऊँ।

[सूका के साथ लच्छी भी भीतर जाती है। सूका के दोनों हाथों में दो परोसी हुई थालियाँ हैं। एक थाली लच्छी लिये हुए है, दोनों आँगन पार करती हुई बाहर जाती हैं। थाली देकर सूका लौटती है और भीतर चली जाती है। बाहर से लच्छी आँगन में आकर नंगी खाट पर औंधी गिर पड़ती है और सिसकने लगती है। भीतर से आँचल में गीले हाथ पोंछती हुई सूका आती है।]

सूका : क्यों बार-बार रोती हो ? *(खाट पर बैठ जाती है)* क्या बात है ? बोलो भूख लगी है न !

[लच्छी का सिर अपनी गोद में रख लेती है।]

सूका : रोओ नहीं, रोने से क्या होता है ?

लच्छी : *(चुप होकर अपने सहारे बैठ जाती है ।)*

सूका : क्या सोच रही हो ?

लच्छी : आज सात दिन हो गये दीदी, माधोपुरवाले की कोई हाल-चाल न मिली ।

सूका : *(एकाएक जैसे जगकर)* आज सत्तमी है न, सोम दिन ।

लच्छी : हाँ, है तो, क्यों ?

सूका : पहले मुझे क्यों न होश धराया ! मेरी तो सुधि ही जलने लायक है । आज उसकी चिट्ठी जरूर आयी होगी ।

[सूका तेजी के साथ खाट से उठ खड़ी होती है ।]

लच्छी : पियारे के घर अभी जा रही हो ?

सूका : और नहीं तो क्या, पियारे की माई चिट्ठी लिए हुए मेरा रास्ता तक रही होगी *(जाने लगती है)* घर देखना, मैं अभी आयी ।

[तेजी से दुइदरे में जाकर दायीं ओर मुड़ जाती है । लच्छी प्रसन्नता से एक बार आँगन में जैसे, नाच जाती है, फिर खड़ी होकर कमर पर हाथ रखकर जैसे कुछ सोचने लगती है । फिर तेजी से आकाश की ओर निहारती हुई आँचल को ऊपर उठाती जाती है । पृष्ठभूमि में आहट होती है, लच्छी स्वस्थ ढंग से खड़ी हो जाती है ।]

भगौती : *(आकर)* और खाना है ?

लच्छी : *(सिर हिलाती है ।)*

भगौती : सब खाना परस दिया था।

लच्छी : वही उतना था ही।

भगौती : अच्छा कोई बात नहीं, (रुककर) तो सुकिया फिर से खाना बना रही है न !

लच्छी : हाँ।

भगौती : बनाने दो।

[भगौती बाहर लौट जाता है। लच्छी फिर आकाश की ओर निहारती है, फिर बेचैन हो दुइदरे में आती है, दायीं ओर मुड़कर खिड़की की ओर दौड़ती है आँगन में लौटती है और दुइदरे की ओर देखती हुई सूका के आने की बाट जोहने लगती। सूका दुइदरे में दिखाई पड़ती है। लच्छी बच्चों की तरह दौड़कर आँगन में आते-आते सूका के गले से लस जाती है।]

सूका : *(रहस्य से)* जा पहले धीरे से बाहर की किवाड़ उठगाँ आ।

[लच्छी तेजी से बाहर जाती है। सूका दुइदरे का चिराग उठाकर आँगन में लिए खड़ी रहती है। लच्छी तेजी से लौटती है।]

सूका : *(कमीज के नीचे से खत निकालती हुई)* लो पढ़ो।

लच्छी : *(खत खोलकर)* सुनो दीदी !

सूका : सुनाने में देर लगेगी, तुम अपने मन में जल्दी पढ़ लो, तब तक मैं इधर-उधर देखती रहती हूँ।

[चिराग खाट की पाटी पर रखकर वह इधर-उधर पहरा देने लगती है लच्छी जमीन से घुटनेटेक-

कर चिट्ठी पढ़ चुकती है और तेजी से उठकर प्रसन्नता से चिट्ठी को अंक में छिपा लेती है।]

सूका : *(पास आती हुई)* पढ़ लिया ?

[लच्छी दौड़कर उसके अंक से लग जाती है और खुशी से पागल हो उठती है।]

सूका : *(प्रसन्नता से)* क्या बात है ?

लच्छी : *(जैसे कोई बच्ची माँ के गले से लगकर अपने मन की बात कहती हो)* लिखा है न दीदी! पहले उन्होंने तुम्हारा पैर छूना लिखा है। फिर लिखा है न दीदी! हाँ दीदी लिखा है कि ··कि कि *(भावातिरेक से बार-बार उसका गला रुँध-सा जाता है)* उन्होंने लिखा है कि मैं दीदी से हाथ जोड़ता हूँ, उसके पैरों गिरता हूँ, वह जल्दी से मेरी लच्छी को मेरे हाथ सौंप दे।

सूका : *(एकाग्र हो चिराग की लौ देख रही है।)*

लच्छी : और लिखा है न दीदी! कि इसी पूर्णमासी की रात में मैं अपनी बुआ, पियारे की माँ के घर आऊँगा।

[सूका को अपलक देखने लगती है।]

लच्छी : आज सत्तमी है न दीदी! पूर्णमासी आज से आठ रोज है, *(उँगली पर गिनती हुई)* उस दिन मंगल पड़ेगा दीदी! मंगल मेरे लिए बड़ा शुभ दिन है, दीदी! बोलो क्या सोच रही हो!

सूका : *(आँसू बहाती हुई)* लेकिन इस घर से निकलने के लिए मंगल अच्छा दिन नहीं है। मंगल ही के दिन तो मैं भी इस घर से निकली थी।

लच्छी : *(उदास चुप है।)*

सूका : *(आँसू पोंछती हुई)* और पूर्णमासी को तो सारी रात अँजोरिया रहती है।

लच्छी : तो फिर क्या होगा दीदी ?

सूका : मैं किसी तरह तुम्हारे लिए अच्छी साइत बिचरवाऊँगी। इस बीच में मैं हीरा को *(रुककर)* हीरा ही नाम है न !

लच्छी : हाँ, उनका यही नाम है दीदी !

सूका : तुम नाम नहीं लेती।

लच्छी : *(शर्मा जाती है)* नहीं दीदी ! मैं उन्हें माधोपुरवाला कहती हूँ *(रुककर)* उनसे मेरा विवाह पक्का हो गया था, लगन चढ़ गयी थी, इधर-उधर हल्दी घूम गयी थी। यहाँ तक कि दीदी ! एक दिन देह में बुकवा भी लग गया था। *(रुक जाती है।)*

सूका : फिर क्या हुआ ?

लच्छी : वह जो मेरा काका है न, जिसको मेरे दादा मरते समय मुझे सौंप गये थे, उसी ने दीदी, मेरा बेड़ा डुबाया *(रुक-कर)* यहाँ के तेजई-मूरत को हैजा ले जाय, यही दो इसे लेकर दाढ़ीजार काका के पास गये थे। इसने माया दिखायी, उस कलमुहें ने मेरा सौदा कर लिया।

सूका : कितने पर !

लच्छी : मुझे यह भी न पता चला, मैं तो हरदम रोती ही रही।

सूका : लेकिन चढ़ी लगन टूटी कैसे ?

लच्छी : जबरजस्ती तोड़ी गयी दीदी, उसने माधोपुर कहलवा भेजा कि उसके घर बरछा है। माधोपुर वाले के आगे-पीछे कोई न था, मुहजरे काका के मुँह में स्याही पोतने के लिये वह न बिरादरी बुला सका, न उसमें इतना ज़ोर ही ज़ुलुम

था कि वह लठिहा इकट्ठा कर दहिजरे के घर में घुस मेरी बाँह पकड़ लेता। *(रोती हुई क्षण भरके लिये चुप हो जाती है)* लेकिन भाग में तो था पहले कमालपुर, ब्रह्म की काँटी कौन मेटता दीदी।

सूका : वही मेटेगा, रोती क्यों हो?

लच्छी : *(आँसू पोछती हुई सूका के गले में लिपट जाती है)* सच दीदी, क्या यह सब हो जायगा!

सूका : देखो कहीं से अगर कुछ बात नहीं फूटती तो...।

लच्छी : *(बीच ही में)* यह बात क्यों कर फूटेगी दीदी! कौन जानता ही है इसे!

[बाहर से भगौती आता है, उसकी आहट पाते ही दोनों दो ओर हट जातीं हैं।]

भगौती : *(एक क्षण दोनों का जैसे अध्ययन करता हुआ)* जा सुकिया, बाहर से बरतन उठा ला।

[सूका बाहर जाती है।]

भगौती : *(इधर-उधर देख कर लच्छी के पास खिसक कर)* सुकिया तुम से कुछ कह तो नहीं रही थी! यों ही कुछ, कुछ नहीं!

[लच्छी सिर हिलाती है, बाहर से जूठे बरतन लिये सूका आती है और चुपचाप भीतर चली जाती है।]

भगौती : उससे तुम्हारा कभी झगड़ा क्यों नहीं होता? क्या बात है?

लच्छी : जब मेरा बोलना-चालना मना है, तो झगड़ा कैसे होगा!

भगौती : अरे झगड़ा करने के लिये बोलना-चालना थोड़े मना है। उससे न बोलना, झगड़ा ही के लिये तो है।

लच्छी : *(जली हुई वाणी से)* रूई न सूत जोलाहों में लड़ाई !

[उसी बीच दुइदरे में सूका आती हैं।]

भगौती : *(आज्ञा देता हुआ)* चार चिलम गाँजा तो लेती आना, बुटवलिया में से लाना, उस दिन जो मैं लाया था, *(जोर से)* जरा कलीदार लाना, चिप्पड़-चिप्पड़ हाँ।

[लच्छी भगौती के पास से दूसरी ओर हट जाती है।]

भगौती : खबरदार रहना मेरी बातों से, नहीं तो मैं बड़ा खराब आदमी हूँ !

[पोटली में बँधे हुए गाँजे को सूका भीतर से ले आती है और उसी तरह वह भगौती के सामने फेंक देती है।]

भगौती : *(क्रोध से)* सीधे से दे देती तो क्या हाथ में नागन डँस लेती ! बेहया कहीं की *(पोटली खोलकर गाँजा लेता हुआ)* अभी तुम्हारे प्रेमी को पता चलेगा कि मुँह में कितने दाँत होते हैं, फिर उसके नाम पर रोना।

[घूरता हुआ बाहर चला जाता है।]

लच्छी : *(उत्सुकता से)* बड़े गाँव में कुछ होने वाला है क्या दीदी।

सूका : हुँ...भले हो ! मैं जल रही हूँ तो वह क्यों न जले, जले खूब !

लच्छी : *(घबड़ाई हुई)* तो इंदर का घर जलेगा आज !

[एकाएक चुप होकर शून्य में देखने लगती है।]

लच्छी : क्या सोच रही हो दीदी, बोलो न !

सूका : सोच रही हूँ, कहीं मेरी तरह तुम्हारी भी *(सहसा निचले ओंठ को दाँतों से मीच लेती है)* इस घर से तबाह होकर अच्छे के लिए मैं उसके संग भागी थी। लेकिन जब भाग में अच्छा लेकर उतरी ही न थी, तो क्या होता (रुककर) हैरान होकर पराये की बाँह भी पकड़ी, वह भी न आदमी निकला, 'जहाँ गयी डाढो रानी, तहाँ पड़ा पाथर-पानी।'

लच्छी : *(उदासी से चुप है।)*

सूका : *(गम्भीरता से)* मैं हीरा को बुलवाऊँगी। सौगन्ध दिला-कर सब बातें उससे साफ कर लूँगी। मैं तिल भर नहीं चाहती कि तुम्हें भी मेरी तरह कहीं भटकना पड़े।

[लच्छी बढ़कर अपना मुँह सूका के सीने में गड़ा देती है।]

सूका : *(उसके खुले सिर को आँचल से ढकती हुई)* तुम्हारे भाग पर मैं अपने भाग की साया नहीं पड़ने दूँगी बिट्टी ! घबड़ाओ नहीं, सब मेरी ही तरह अभागे नहीं होते।

[लच्छी उसके अंक में अपने मुँह को गड़ाती जा रही है।]

सूका : *(घबड़ाई हुई आँखों से)* मैं अपने कलेजे पर यह भी एक बड़ा पत्थर रख लूँगी, मैं यहाँ इन सीकचों में अकेली रहकर काट लूँगी, लेकिन मुझे सन्तोष होगा कि मैं तुम्हें तो छुड़ा सकी।

[सहसा बाहर से गाँव के तमाम आदमियों का कोलाहल उभरता है, सूका-लच्छी दोनों घबड़ाकर एक दूसरे को देखने लगती हैं, बाहर से लाठी लिये हुए भगौती दौड़ा आता है ।]

भगौती : *(प्रतिहिंसा के आवेश में)* चलो दरवाजे पर खड़ी होकर देखो न, *(अट्टहास करके हँसने लगता है)* चलो जी भरकर देख लो सूका, आज तेरी लंका में आग लगी है, जा आँख पसार कर देख, तेरे इंदर का घर स्वाहा हो रहा है ।

[दोनों चुप खड़ी हैं, भगौती हँस रहा है, पृष्ठभूमि में मनुष्यों का कोलाहल बढ़ रहा है ।]

भगौती जल में रहकर मगर से बैर ! *(रुककर आश्चर्य से)* अरे ! तू रो नहीं रही है, जरा भी अफसोस नहीं तुझे ! तेरे प्रभो का घर जले और तू मंगल गावै, यही तेरी प्रीति की रीति है !

[हँसता है ।]

सूका : *(हँसी को चीरती हुई आवाज से)* ऐसी प्रीति में लगे आग ! उसे भी डँसे नागन और इंदरवा की टिकठी के साथ तू भी उसके पाँव दबाने जा !

[क्रोध से अपनी दसों उँगलियाँ आपस में भींचकर फोड़ती है, और तेजी से दुइदरे की ओर लौटती है । भगौती तेजी से हँसता है, लच्छी घबड़ाई हुई खड़ी रहती है ।]

[तेजी से पर्दा गिरता है ।]

[कुछ ही क्षणों बाद फिर उसी आँगन में पर्दा उठता है। समय की गति में इस बीच पन्द्रह दिन बीत गये हैं। काली अँधेरी रात है। आँगन की दोनों चारपाइयाँ दीवार के सहारे खड़ी हैं। दायीं ओर बोरसी में कंडे की आग दहक रही है। दुइदरे के पावे पर मिट्टी का चिराग जल रहा है।

पर्दा उठने पर आँगन सूना मिलता है। भोजन करके भीतर से खाँसता हुआ भगौती निकलता है। धोती पहने है, कंधे पर अँगोछा झूल रहा है, दायें हाथ में लोटा लिये हुए आँगन पार करता-करता सहसा रुक जाता है।]

भगौती : *(पुकारता हुआ)* सुनती है न रे ! पहले बाहर चिलम चढा के दे जा ! सुना की नहीं !

आवाज : सुन तो रही हूँ।

सूका : *(भीतर से निकलकर)* न जाने किसने इसका गला फाड़ा था।

[आँगन में सिर थाम कर बैठ जाती है। दायें हाथ से चढ़ी चिलम लिये लच्छी निकलती है।]

लच्छी : *(सूका को देती हुई)* लो दीदी !

[चिलम लिये चुपचाप बाहर चली जाती है। लच्छी एक खाट को बिछा लेती है और उस पर बैठ जाती है।]

सूका : *(लौटते ही)* कितनी भाँग थी आज ?

लच्छी : रोज से दुगनी थी दीदी !

सूका : एकाध धतूर का बीया डाल दिया था कि नहीं।

लच्छी : एकाध क्या दीदी ! मैंने गिनकर दस बीया डाला होगा !

सूका : फिर भी देखो यह कब सोता है ! इसे तो जैसे नींद ही नहीं आती !

लच्छी : देख लेना दीदी ! आज यह जैसे घोड़ा बेंचकर सोयेगा। खूब घोंट कर बनायी थी भाँग *(दिखाती हुई)* कुल मिला कर इतनी सी थी दीदी !

सूका : *(संतोष से)* अच्छा, तभी तो आज इसने भरा भी खूब है, गिनकर नौ रोटियाँ गट की हैं—इतनी मोटी-मोटी रोटियाँ। उसके ऊपर दो परसौवा भात खाया है।

[लच्छी हँस पड़ती है, लेकिन फौरन ही अपनी उभरती हुई हँसी को आँचल से रोक लेती है।]

सूका : *(ऊपर आकाश की ओर देखकर)* अच्छा, अब जल्दी करो, चलो, पहले भोजन कर लो।

लच्छी : *(उठकर सूका के समीप आकर)* आज मुझे तिल भर भूख नहीं दीदी ! सुबह से खाते-खाते पेट में साँस नहीं है !

सूका : कैसी बात मुँह से निकालती है। आज नहीं खायेगी ! (रुककर) तुम्हारे लिए तो मैंने मीठा चावल बनाया है, सजाई हुई दही रक्खे हूँ। चल आज मैं तुझे अपने हाथ से खिलाऊँगी, चल !

[लच्छी का दायाँ हाथ पकड़े सूका उसे भीतर ले जाती है। दायें हाथ में चिलम लिये खाँसता हुआ बाहर से भगौती आता है।]

भगौती *(झल्लाकर)* चिलम नहीं अपना सिर चढ़ाती है। अभी दो लाठी मारूँ तो पता लग जाय कि चिलम कैसे चढ़ाई जाती है। *(बोरसी के पास बैठ जाता है और चिमचे

से चिलम की आग बदलने लगता है) जब चिलम में तम्बाकू कम रखेगी, तो उस पर खूब आग बोझ देगी और जब तम्बाकू खूब होगी तो चिलम में आग ही न होगी, सुअर कहीं की !

[चिलम की आग बदलकर खड़ा होता है, और चिलम की राख फूँकने लगता है।]

भगौती : *(बुलाता हुआ)* ओ हरखू मौसिया ! हुक्का लेकर यहीं चले आवो।

[हुक्का लिये हरखू आते हैं, दोनों बिछी खाट पर बैठ जाते हैं।]

भगौती : *(हुक्के पर चिलम रखकर)* अब पीयो मौसिया !

[हरखू हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं।]

भगौती : तो मौसिया, मुझे इधर खाँसी आने लगी है। *(खाँसता है)* सूखी खाँसी है।

हरखू : *(धुआँ छोड़कर)* ई है कि होगी, वायु-पित्त से तो शरीर ही रचा गया है।

[हुक्के के पीने में लग जाते हैं।]

भगौती : नहीं मौसिया, इधर दो-तीन दिनों से कुछ-कुछ दम भी फूलने लगा है।

हरखू : ई है कि इसकी क्या चिन्ता ! अरे इतवार-मंगल सूरज को दो लोटा जल चढ़ा दो बस, *(कस लेकर)* भाई एक बात का और ख्याल रक्खा करो, जरा अच्छा गाँजा मँगवाया करो, हाँ !

भगौती : दो ही दिन से तो चुक गया है, नहीं गाँजा तो मैं सदा बुटवलिया ही पीता हूँ।

[हरखू हुक्के पर दम कसकर उसे भगौती को दे देते है ।]

हरखू : इंदरवा का क्या हाल-चाल है, इधर कहीं दिखाई नहीं पड़ता ।

भगौती : दिखाई क्या पड़े ! अरे घर था, वह फूँक-तापकर साफ ही हो गया (*रुककर*) सुना है उसने एक नया छप्पर डलवाया है मौसिया !

हरखू : लगवा न दो एक लुक्की उसमें भी, मजा आ जाये ।

भगौती : उसमें क्या मजा ! मजा तो इसमें आयेगा मौसिया, जब उसकी धान की हरी फसल ही काट कर गिरा दी जायेगी (*रुककर*) है न मजेदार बात !

हरखू : (*समर्थन में*) क्या बात है, ई है कि, तब जाकर पता चलेगा कि किसी मर्द से पाला पड़ा था ।

भगौती : बस, तुम देखते चलो मौसिया !

[हुक्के को खाट के पावे से लगाकर रख देता है ।]

हरखू : (*कुछ क्षण चुप, रहस्य के स्वर में*) आज कल सूका के क्या रंग हैं ?

भगौती : सब फीका पड़ा है ।

हरखू : और लच्छी !

भगौती : ठीक ही है !

हरखू : और कुछ उम्मीद-आसरा भी दिखाई पड़ा कि नहीं ?

भगौती : (*चुप है ।*)

हरखू : अगर नहीं तो कहीं उसे तकी-पीर के मेले में ले जाओ, सुना है शाहपुर का फकीर अगर जुमे के दिन किसी को

दुआ करके ताबीज दे दे, तो चौथे ही महीने उसका आँचल सम्हाले न सम्हले।

भगौती : चाहता तो यही हूँ मौसिया (*रुककर*) तुम्हारी उस दिन की बात मेरे मन में घर कर गयी।

हरखू : हाँ और नहीं तो क्या ! ई है कि, सोचने की बात है, कि अगर तुम्हे कोई आल-औलाद नहीं होती, और कल को तुम मर जाते हो, तो क्या होगा ? (*रुककर*) सारी ज्यादाद अलगू के हाथ चली जायगी, और पितरपक्ख में तुम्हारी आत्मा एक लोटा पानी के लिये तरस कर प्यासी रह जायगी।

भगौती : ठीक कहते हो मौसिया ! मैं इसी जुमे को लच्छी को लेकर शाहपुर जाऊँगा।

[भगौती को खाँसी का दौड़ा आ जाता है। हरखू खाट से उठते हैं और दोनों बाहर चले जाते हैं। सूका भीतर से एक लोटा पानी लिये हुये निकलती है और बाहर देकर आँगन में लौट जाती है।]

लच्छी (*भीतर से निकलकर*) बाहर दरवाजे की किल्ली बन्द कर आयी दीदी !

सूका अभी नहीं, कौन जाने वह सोचे कि आज इतने सबेरे ही क्यों किल्ली बन्द हो रही है। (*रुककर*) बस, अभी सो जायगा, खाट पर गिरा नहीं कि मुर्दे की तरह सोया।

लच्छी वह दाढ़ीजार घर गया कि नहीं ?

सूका गया काला नाग !

[सूका भीतर चली जाती है और पिटरिया लिये वापस आती है।]

सूका : आ, जल्दी से तेरी चोटी कर दूँ ।

[लच्छी को सामने बिठा लेती है, और उसके सिर में कंघी करने लगती है ।]

सूका : गठरी में मैंने सब बाँध दिया है !

लच्छी : *(चुप है ।)*

सूका : जिसे पहनकर तू जायगी, उस साड़ी को मैंने बाहर निकाल लिया है और बाकी दोनों साड़ियाँ मैंने बाँध दी हैं ।

लच्छी : नहीं दीदी ! हाथ जोड़ती हूँ, उन दोनों साड़ियों को तुम ले लो ना, पहनना !

सूका : जिद न कर बिट्टी । आज कहाँ मुझे ही तुम्हें एक साड़ी देनी थी लेकिन ।

लच्छी : *(बीच ही में)* नहीं दीदी ! मैं अपनी उन दोनों साड़ियों को नहीं ले जाऊँगी ।

सूका : नहीं ले जाओगी तो उन्हीं को देख देखकर मैं तेरी सुधि में दिन-रात हैरान रहूँगी । उन्हें पहनूँगी कैसे, मुझे तो हरदम रुलाई आयेगी । और सबसे बड़ी बात वह मुझे पहनने ही क्यों देगा । मारकर तन से उतरवा लेगा, और बेंचकर या तो गाँजा पी डालेगा, या नन्दो को दे देगा !

[दोनों चुप हो जाती हैं ।]

लच्छी : क्यों दीदी ! कल भोर में जब वह देखेगा कि मैं इस घर से लापता हूँ, तो वह तुम्हें मारेगा तो नहीं ?

सूका : तू जा, इसकी चिन्ता मत कर । मेरी चिन्ता कभी न करना ।

लच्छी : *(रोती-सी)* नहीं दीदी, वह तुम्हें बहुत मारेगा ।

सूका : तो क्या कर लेगा ! इस शरीर पर मार की क्या चिंता ! जब लोहे से दागने तक की चिन्ता नहीं की। तूने तो देखा ही है, उसने मुझे कहाँ-कहाँ नहीं दागा, कहीं तो नहीं बचा है *(रुककर पीड़ा से साँस भरती हुई)* वही मसल है बिट्टी कि 'अब क्या बगुला लगायो दीठ, सौ-सौ जाल रगरि गे पीठ !'

[लच्छी की चोटी कर चुकती है।]

सूका : अच्छा, अब तू अपनी माँग भर ले, आँख में काजल कर लेना, मैं तब तक बाहर की किल्ली बन्द कर आती हूँ।

[सूका जाती है, लच्छी सिन्दूर से अपनी माँग भरती है, आँखों में काजल लगाती है, शीशे में अपना मुख देखने लगती है, बाहर से सूका आती है।]

सूका : *(सामने बैठकर)* माथे पर टिकुली नहीं लगायी *(पिटरिया में से कागज की एक छोटी-सी डिब्बी निकालती है उसमें से एक टिकुली निकालकर लच्छी के माथे पर चिपका देती है।)* ये सब टिकुली तुम लगा डालना। माँ ने मुझे दिया था, मैं एक भी न लगा सकी।

[लच्छी अपने आँचल से सूका के पैर छूती है और उसे अपने माथे लगाती है।]

सूका *(भरे कंठ से)* सब मंशा पूरी हो, दूधो नहाव, पूतो फलो।

[सूका खड़ी हो जाती है। लच्छी भी उठती है। लच्छी की दृष्टि जमीन में गड़ी है और सूका भरी आँखों से उसे देख रही है।]

सूका : तेरे गहने मैंने गठरी में बाँध दिये हैं, जी तो चाहता था कि सब गहने तुझे पहना देती, लेकिन रास्ते में गहने बजने लगेंगे, न जाने कितना कहाँ-कहाँ भागना-दौड़ना पड़े।

लच्छी : (चुप है।)

सूका : अब चलो, साड़ी भी बदल लो।

[लच्छी को लिये अन्दर जाती है, क्षण भर में भीतर से गठरी उठाये हुये अकेले आँगन में लौटती है। गठरी खोलती है, उसमें टिकुली की डिब्बी और कजरौटा रखती है। भीतर दौड़ती है। लोटा लिये हुए वापस आती है, उसे पोंछकर रखती है। फिर उठती है, सामने दीवार की खूँटी से लटकते हुए बन्दर की खोपड़ी उतारती है और उसे भी गठरी में रखकर सब एक में बाँध देती है। भीतर से पीली साड़ी पहने लच्छी आती है।]

सूका : अब गठरी बिल्कुल तैयार है। इसमें बन्दर की खोपड़ी भी रख दी है।

लच्छी : क्या होगा वह! मैं उसकी कोई चीज नहीं ले जाऊँगी।

सूका : (स्नेह से) उसमें क्या रक्खा है। उससे यही होगा कि रास्ते में कहीं भूत-परेत का डर नहीं रहेगा। और मेरी बात भूलना नहीं जहाँ जाओगी, वहाँ अपने दरवाज़े पर इसे जरूर टाँग देना, हाँ।

लच्छी . (चुप है।)

सूका : मैं भी आज अपनी माँग भरूँगी!

[सिन्दूर से माँग भरती है।]

सूका : मैं तुझे अपनी सूनी माँग से नहीं बिदा करूँगी *(रोपड़ती है)* आज तेरे लिये मैं भी सुहागन बनूँगी !

लच्छी : राजी दीदी से मौका मिलने पर अपना सिर खोलवा-बँधवा लिया करना। पइयाँ पड़ती हूँ दीदी, कभी उपवास न करना।

सूका : मुझे भूल जाना लच्छी, कभी मेरी सुधि न करना।

लच्छी : *(रोती हुई चुप है)*

सूका : अपने हीरा की एक-एक बात मानना। एक कदम भी आगे न रखना बिना उनसे पूछे। मैंने सब तै कर लिया है, सब ठीक हो गया है। आज रात भर तुझे चलना होगा। भोर में सरजू नदी का पहला खेवा उतर कर वे तुझे दक्खिन ले जायँगे, यहाँ से तेरह कोस जमीन। फिर वहाँ मोटर मिलेगी, उसमें बैठकर परसों शाम तक तू सुल्तापुर जिले में पहुँच जायगी, बेलीडीहा गाँव में, वहीं हीरा की ननिहाल है। बहुत धनी घर है, बड़े जबहे के लोग हैं, कोई वहाँ तक फटक नहीं सकता।

लच्छी : *(डर से काँप कर सूका के गले लग जाती है)* मुझे डर लग रहा है दीदी !

सूका : पगली ! तू अपने मंगेतर के साथ जा रही है। डरी तो मैं नहीं, जो एक पराये के साथ भागी थी। फिर जिस तरह मेरे करम में आग लगी है, वैसा किसी का नहीं है बिट्टी ! तेरे तो भाग उजागर हैं, चाँद—सुरज हैं तेरे भाग में।

[दोनों निःशब्द रो पड़ती हैं, और एक दूसरे के गले से बँधी रहती हैं, बाहर खिड़की पर बहुत ही धीमे से एक आहट होती है। अलग-अलग होकर

दोनों चौकन्नी हो जाती हैं। सूका दायीं ओर से जाती है। लच्छी आँगन में घबड़ाई हुई खड़ी रहती है। सूका लौटती है, उसके पीछे-पीछे हीरा आता है। पचीस वर्ष का सुन्दर युवक, धोती-कुर्ता पहने है, सिर पर अँगोछा बँधा है, दायें हाथ में कद बराबर लाठी लिये है। गले में सोने की तावीज है, जो कुरते के ऊपर चमक रही है। हीरा आँगन में आकर सूका के पैर छूता है 'पा लागन दीदी'।

सूका : सुखी रहो, चलो भोजन कर लो !

हीरा : नहीं दीदी, बुआ के घर कर लिया है।

सूका : इस गठरी में पूड़ियाँ बँधी हैं, खाँड़ भी है। रास्ते में किसी चीज की तकलीफ न करना। खाते-पीते, उठते-बैठते जाना। लच्छी बहुत पैदल नहीं चली है।

हीरा : जहाँ कैसे, कोई भी सवारी मिली, मैं पैदल नहीं चलने दूँगा, विश्वास रखना।

सूका : (*आँचल से अपने आँसुओं को सम्हालती हुई*) किसी भी हालत में अपनी लच्छी का साथ न छोड़ना। (*गला रूँध जाता है*) दुनियाँ कहती है कि सूका बाँझ है, बाँझ रहेगी, लेकिन जब मुझे लच्छी मिली, तब जैसे, मैं माँ हो गयी।

[*लच्छी से चिपट कर रो पड़ती है।*]

सूका : (*लच्छी के आँसू पोंछती हुई*) रोओ नहीं, अब अपने घर जाओ (*सिसकती हुई*) मेरी बेटी को कभी न कुछ होने पावे, जाओ अब ! जाओ मेरी लच्छी !

[*लच्छी और सूका निःशब्द रोती हुई एक दूसरे के गले से इस तरह चिमट जाती है, जैसे दोनों*

एक हो गयी हों। हीरा अपनी लाठी में गठरी उठा लेता हैं और दायें कंधे पर रख लेता है। सूका लच्छी को छोड़कर दुइदरे में जाती है और जलते हुए चिराग को उठा लाती है। लच्छी सूका के पैर पर अपना माथा टेकती है, हीरा भी उसके पैर छूता है, सूका रोती हुई लच्छी को आगे बढ़ाती है, हीरा-लच्छी बाहर निकलते हैं।]

सूका : *(चिराग दिखाती हुई खड़ी रहती है)* मुझे न निहारो, जाओ मेरी बेटी, इस घर की तुझ पर कभी साया तक न पड़े, जाओ मेरी......*(रो पड़ती है।)*

[चिराग लिये खड़ी रहती है, धीरे-धीरे पर्दा गिरता है।]

चौथा अंक

[पर्दा फिर उसी दुइदरे में उठता है। कातिक के दिन, और ठीक दोपहर का समय है। बरामदे में दायें पावे के सामने एक खाट बिछी है और उस पर गन्दा-सा विस्तरा लगा है। खाट के नीचे जमीन पर लोटा गिलास तथा दो एक मिट्टी के बर्तन, बोतल शीशी सब बेतरतीब से रक्खे हैं।

पर्दा उठते ही हम देखते हैं, सूका वहीं बरामदे में बैठी गेहूँ में से जौ अलग कर रही है। वह कभी हाथ से बीनती हुई दिखाई देती है और कभी सूप में गेहूँ ढहराती हुई। उसके बाल रूखे और अस्तव्यस्त हैं। तन पर फटी तो नहीं, लेकिन मटमैला वस्त्र जरूर है। सूका के साथ गाँव की दो औरतें उसे घेर कर बैठी हैं।

दोनों औरतों का ध्यान केवल बातों में है, लेकिन सूका सिर नीचे गड़ाये गेहूँ में से जौ अलग करने में लगी है।]

पहली औरत : आज महीना दिन बीत गया दीदी, लेकिन लच्छी का न पता चला। न जाने किस भँवर में चली गयी।

दूसरी औरत : सच, जैसे कोई उसे गत की लकड़ी मारकर ले गया हो, नहीं तो कम से कम सूका दीदी को तो पता होता (सूका से) क्यों सूका दीदी, नहीं पता न!

[सूका केवल सिर हिलाकर रह जाती है।]

दूसरी औरत : वाह रे लच्छी! ऐसी गयी तू, कि न कुत्ता भूँका न पहरू जागा।

पहली औरत : मुझे तो लगता है दीदी, उसने कहीं कोई कुआँ-इनार न देख लिया हो।

दूसरी औरत : (*झुँझलाकर*) आ चुप रहो ! कुआँ-इनार वह क्यों देख लेगी !...न उसे खाने-पीने का दुख, न भइया रे उसे पहनने-ओढ़ने का दुख, औ न घर-गृहस्थी के काम धाम का टंटा ! फिर और क्या चाहिए (*रुककर*) अरे ! मैं तो कमालपुर के घर-घर की बीस बरस की हाल जानती हूँ और दस साल से तो मैं खुद अपनी आँखों देखती चली आ रही हूँ। भइया रे, लच्छी जितना सुख इस गाँव में किसी ने भोगा ही न होगा।

पहली औरत : मैं भी मानती हूँ दीदी ! यह सब सही, लेकिन उसके सीने पर जो हरदम दो मन का पत्थर रखा रहता था। न घर में सूका दीदी से बोलो, न उसके साथ उठो-बैठो और न घर से बाहर गाँव में कहीं पाँव रक्खो।

दूसरी औरत : तो क्या दुख था इसमें !

पहली औरत : राम जाने दीदी ! यह तो वही बता सकती है।

दूसरी औरत : (*निःस्वास भरकर*) कहाँ अब वह बताने आ रही है (*रुककर*) मुझे तो भइया रे इसी बात पर पूरा विश्वास है और कई दिन इसे मैंने सपन में भी देखा था (*रुककर*) भइया, इंदरवा उस रात को पिछवारे-वाली नीम पर बैठा रहा होगा—सूका दीदी की ताक में। उसी समय बेचारी लच्छी अगवारे-पिछवारे निकली होगी और दहिजरे ने धर दबाया होगा—जोई हाथ सोई साथ, मैं तो भइया यही जानती हूँ।

पहली औरत : यही तो सारा गाँव कहता है। लेकिन अब तक लच्छी का कोई सुराग न मिला। तब से पुलिस ने दो बार इंदरवा को पकड़ा, कई बार उसकी नंगा-झोरी ली, तलाशा खूब, उसके सारे नात-बाँत छाने गये, लेकिन कहीं न कुछ पता चला ! बस यही हुआ कि उस दिन मुडेरा के बाजार में इंदर और भगौती बाबू की गोल से लाठी चल गई और भगौती बाबू घायल हो गये। खाट पर लादकर घर लाये गये।

दूसरी औरत : *(सूका से)* क्यों दीदी ! अब उनकी कैसी हाल है ?

सूका : भीतर खाट लिये तो पड़े हैं। बाँया पैर तो किसी तरह जमीन पर रखने भी लगे। लेकिन दायाँ पैर तो छूने ही नहीं देते। मुडेरा के वैद आये थे। कहाँ रतन पुर और चिलमा, जुग-जुग जिये अलगू बाबू, वहाँ से ढूँढ़-ढूँढ़कर वह कई पैर बैठानेवालों को ले आये। लेकिन किसी की न चली। सभी यही कह-कहकर लौट जाते हैं कि पैर की हड्डी टूट गयी है।

पहली औरत : तब क्या होगा दीदी ?

सूका : होगा क्या ! जो जैसी करनी करे, सो तैसा फल खाय *(रुककर)* जो करनी मैंने की थी, वह मेरे आगे उतरा। मैं उसका फल भोग रही हूँ और मरते दम तक भोगूँगी। और जो इन्होंने किया है, उसका लेखा-जोखा, हे भगवान त्रिलोकी नाथ, तुम्हीं जानो। *(रुककर)* लोग कहते हैं कि मेरी कोख अंधी है, इस-लिये जब मैं मरने भी गयी तो मुझे मेरे करम में अंधा कुआँ ही मिला। पर मैं समझती हूँ वह कोई कुआँ न था, वह था गाँव का झूठ।

[दोनों औरतें चुप हैं।]

सूका : अगर वह कुआँ सच अंधा होता, तो उसमें दो-चार जहरीले साँप जरूर होते। ऊपर से वह घास-फूस, लत्ता-बँवर से ढका होता और उसमें कोई मुझे गिरी हुई न देख पाता। मुझे खूब मालूम है, ऐसे कुएँ में एक बार गिरकर आज तक कोई जिन्दा बाहर नहीं निकला है—लेकिन मैं निकली हूँ।

[दोनों औरतें हतप्रभ-सी देखती रह जाती हैं।]

सूका : अंधा कुआँ यही है जिसके सँग मैं ब्याही गयी हूँ—जिसमें एक बार मैं गिरी, और ऐसी गिरी कि फिर न उबरी। न कोई मुझे निकाल पाया, न मैं खुद निकल सकी और न कभी निकल ही पाऊँगी। बस, धीरे-धीरे इसी में घुटकर मर जाऊँगी।

[सहसा भीतर से भगौती की खाँसने, फिर जोर से कराहने की आवाज उठती है। सूका भीतर भागती है।]

दूसरी औरत : आखिर अंत दरजे पर काम आयी सूका दीदी ही!

पहली औरत : इतनी सेवा न करती तो अब तक कीड़े पड़ जाते।

दूसरी औरत : नन्दो भी तो अपने घर से आयी है।

पहली औरत : सूका दीदी ने बुलवा मँगवाया है, नहीं तो जितना नन्दो ने इसके साथ किया है दूसरी भावज होती तो जनम भर नन्दो को कमालपुर का मुँह न देखने को बदा होता।

[भीतर से सूका लौटती है।]

पहली औरत : और नन्दो कहाँ रहती है ?

सूका : सोई पड़ी है चारो खाना चित्त ।

पहली औरत : अजब तमाशा है भइया ! तब तो भगौती, भइया-भइया थे, हरदम चुगली, 'सूका ऐसी, सूका वैसी,' अब क्या हुआ ?

सूका : चुप रहो बहिन, नहीं तो उल्टे तुम्हीं से लड़ने लगेगी।

पहली औरत : मुझसे लड़ेगी तो मैं मुँह भर दूँगी नहीं ।

दूसरी औरत : पर सूका दीदी ! इधर मैंने देखा है कि नन्दो का दिमाग अब पहले से ठंडा है । तुम्हारी ही चापलूसी में रहती है ।

सूका : उसकी चापलूसी से मेरे घाव भरेंगे, जाकर चापलूसी करे उसकी, जो खाट पर पड़ा सड़ रहा है, (रुककर) सुसराल से आये आज उसे पन्द्रह दिन से ऊपर हुए, लेकिन मजाल क्या, एक दिन भी अगर वह भाई के पास फटकी हो । गुह-मूत कराने-उठाने की तो बात ही न्यारी है ।

पहली औरत : तुम्हारी ही मौत चारो ओर से है दीदी !

सूका : जब कराहते हैं तब उठ के दौड़ो । जब पुकारें तब दौड़ो, न दिन देखो, न रात । कराहते-पुकारते अगर तुरन्त न पहुँचो, तो बिना फोर-फोर गाली, कलमुँहा चारपाई पर पड़े-पड़े मेरी सात पुस्त तारने लगता है । लाचार पड़ा है, गुह-मूत न करूँ तो कल ही गन्धा जाये, फिर भी ऊपर से हँसता रहता है, बोली-तानें की अगिन बान छोड़ता रहता है ।

[दोनों औरतें चुप हैं ।]

सूका : भीतर से तो जी होता है कि उसी तरह सड़ने दूँ। जिस लाठी और बेंत से मुझे मारा है, आज उसी के मुँह में डाल दूँ कि खा इसी को। जिन लोहों और सीकचों से मुझे दागा है, जी कहता है कि उन्हें उसके कलेजे में आज डाल दूँ...लेकिन...लेकिन...नहीं।

[फफककर रो पड़ती है।]

पहली औरत : न रोओ दीदा! न रोओ, क्या करोगी।

सूका : जिसने मुझे जान से मार डालने के लिए कौन-कौन सा जतन नहीं किया, आज मैं उसी को जिलाने के लिए क्या-क्या नहीं कर रही हूँ। यह जौ उसी के लिए बीन रही हूँ। कल मंगल है, उसे सतनरायन बाबा की कथा सुनवाऊँगी। कौन जाने दान-पुन्य ही से वह अच्छा हो जाये।

[भीतर से अँगड़ाई लेती हुई नन्दो निकलती है। पहले की नन्दो में और आज की नन्दो में इतना अन्तर है कि आज वह सुसराल के गहने पहने हुए है, लेकिन अपने रूप और बदन से वह पहले की अपेक्षा पीली पड़ गयी है।]

नन्दो : (सूका से दबे स्वर में) भौजी, थोड़ा सा गुड़ दे दो, मैं शर्बत बनाऊँगी।

सूका : उत्तरवाले घर में डेहरी के पास तो रखा हुआ है, जाकर बोलती पीती नहीं।

[नन्दो भीतर लौटती है।]

सूका : (कटुता से) मुँह झौंसी कहीं की, आज गुड़ माँगने चली है!

दूसरी औरत : तो कुछ देती क्यों हो ? जिसने सदा पानी मागने पर आग दिया है उसे आज आग दो न !

सूका : क्या करूँ बहिनी, मुझसे यह सब होता ही नहीं, बस भीतर ही भीतर झुलस कर रह जाती हूँ। क्या करूँ, मैं तो अपने से ही मजबूर हूँ।

[तीनों चुप होकर एक दूसरे को देखती रह जाती हैं।]

पहली औरत : (उठकर) मैं तो चली दीदी। घर बच्चा रो रहा होगा।

सूका : (जैसे स्वप्न देखती-सी) बच्चा !

पहली औरत : हाँ, उसे मैं सुलाकर आयी थी, अब जग गया होगा।

[चली जाती है।]

दूसरी औरत : (उठती हुई) मैं भी चलूँगी बहिनी !

सूका : (रोककर) बैठो न, इस दोपहरी में जाकर क्या करोगी।

दूसरी औरत : मरने की तो फुर्सत ही नहीं रहती दीदी, काम को न पूछो।

[बाहर से एक तीसरी औरत गोद में एक बच्चा लिये आती है।]

सूका : आओ बैठो !

तीसरी औरत : बैठूँगी तो यह रोने लगेगा। बड़ी बुरी टेक पड़ गयी है इसकी।

सूका : (खड़ी होकर) देखूँ तो इसे (गोद ले लेती है।) क्या नाम रक्खा इसका ?

तीसरी औरत : परदेशी।

हली औरत : जब यह पेट में आया, तब इसका बाप परदेश था।

सिरी औरत : बक्।

[दोनों हँस पड़ती हैं।]

का : *(प्यार से बच्चे को चुमकारती हुई)* बेटा पलदेसी, तुम डाँटकर कह दो, 'मेली माता को अगर ऐसा कहोगी तो मैं बला होते ही तुझे मालूँगा'। धमका दो *(प्यार से)* कितना लाजा बेटा है!

[भीतर से एकाएक भगौती की कराह उभरती है, वह अपनी कराह में सूका को पुकारता है, सूका बच्चे को देकर भीतर भागती है।]

दूसरी औरत : सूका दीदी का ही दिल है कि वह इतने पर भी आज भगौती को डूबने से बचा रही है। वह जो नन्दो आयी है, उसकी न पूछो, बाँह उठाकर खाती है और पैर फैलाकर सोती है, बस!

तीसरी औरत : वह काम ही कब करती थी, उसे तो जन्म से ही इधर से उधर लकड़ी लगाते बीता है।

[बाहर से दायें हाथ में कटोरा लिये राजी आती है, उसी समय भीतर से अपनी दायीं बाँह पकड़े सूका लौटती है।]

राजी : कैसी हाल है?

सूका : *(चिन्तायुक्त झुँझलाहट से)* न जाने कहाँ भगवान ने उसका काज छिपा रक्खा है, न जीने को, न मरने को।

दूसरी औरत : क्यों क्या बात है दीदी?

सूका : उस तरह था तब भी मुझे रोज भूज रहा था, आज इस तरह है, तब भी मुझे जिन्दा मछली की तरह भूज रहा है *(रुककर)* अलगू बाबू, मिनकू काका और मुडेरा के वैद सब ने मुझे मना किया है कि उसे भीतर ओड़े में ही रखना, पुरवा हवा न लगने पाये लेकिन वह मुझे विना फोड़-फोड़ कर गाली दे रहा है, यह बाँह में देखो, सेर भर का कटोरा फेंक कर मुझे मारा है, बताओ मैं कैसे इसकी दवा करूँ। दिल कहता है कि जहर घोल कर पिला दूँ मुँहजरे को।

[तीनों औरतें चुप-उदास हैं।]

सूका : कहता है कि मुझे दुइदरे में ले चल। भीतर मेरा दम घुटता है। मुझे आँगन दिखा, मुझे दरवाजे पर ले चल, मुझे हवा में बिठा, बोलो मैं क्या-क्या करूँ ?

दूसरी औरत : कुछ न करो, परे-परे चिल्लाने दो !

सूका लेकिन कुछ न करूँ तो जाऊँ कहाँ। इसे छोड़ कर और कहीं मेरी मुक्ति भी तो नहीं है *(रो पड़ती है)* मैं उसे सिर से पैर तक घृणा करती हूँ, मैं उसकी साया से भागती हूँ, लेकिन इसे छोड़कर मैं और कहीं जा भी तो नहीं सकती।

[रोने लगती है।]

राजी *(स्नेह से)* चुप रहो दीदी ! मैं कल कथा के लिए घी ले आयी हूँ, इसे रख लो।

सूका जाओ भीतर रख आओ।

[राजी भीतर जाती है।]

सूका *(फिर बच्चे को गोद में ले लेती है)* जब तक सच्ची

इस घर में थी, लगता था यह घर बच्चों से भरा हुआ है। (*एकाएक क्षण भर के लिए चुप हो जाती है।*) मेरी माँ कहा करती थी, जिस औरत के पेट में दुधमुहें बच्चे ने अपना मुँह नहीं मारा, वह औरत नहीं, बबूल का पेड़ है जिस पर जल्दी पंछी भी नहीं बैठते।

[राजी लौट आती है।]

तीसरी औरत : अभी तो तुम्हारी सारी उमर पड़ी है दीदी!

सूका : उमर रह कर क्या करेगी। जिस पेट और अंक को भगवान ने दुधमुहें के हाथ-पैर मारने के लिए बनाया था, उसमें तो इस शैतान ने कस-कस कर लात मारे हैं। इसमें अब वह रक्त ही नहीं है जिससे अंक में दूध आता है (*रो पड़ती है*) इसमें तो चारों ओर से चोट है, घाव हैं।

[राजी जौ और गेहूँ को उठाकर भीतर ले जाती है।]

सूका : (*बच्चे को देती हुई*) लो परदेशी की माँ (*देकर*) कहते हैं कि दुधमुहें बच्चे को गोद में लेकर नहीं रोना चाहिए।

[एकाएक भीतर से फिर भगौती की तेज आवाज आती है। साथ ही साथ कुछ फेंकने और टूटने की भी आवाज उभरती है। सूका भीतर जाती है। बरामदे में ये तीनों स्त्रियाँ धीरे-धीरे कुछ अस्पष्ट बातें करती हैं और भीतर सूका और भगौती की कड़ी आवाज उठती रहती है। क्षण भर में वाता-

वरण शान्त-सा हो जाता है, केवल भगौती के धीरे-धीरे कराहने की आवाज होती है।

सूका अपने कंधे पर भगौती को सम्हाले हुए धीरे-धीरे बाहर निकालती है और बरामदे में बिछी हुई खाट पर उसे लिटा देती है। भगौती के सिर पर अब भी एक चौड़ी पट्टी बँधी है, दायाँ पैर घुटने से पंजे तक कपड़े से बँधा हुआ है।]

भगौती : *(एकाएक कराहना बन्द करके बरामदे में खड़ी हुई औरतों को आग्नेय दृष्टि से देखता है।)* मेरे घर किसी औरत के आने-जाने की जरूरत नहीं है, 'अपनी-अपनी खँझड़ी अपना-अपना ताल।'

[राजी खड़ी रहती है और शेष दोनों औरतें भगौती को घूरती हुई चली जाती हैं।]

भगौती : घर-घर की चुगली, दूसरे-दूसरे का परपंच, यही सब करने के लिए ये औरतें दुपहरी में इकट्ठी होती हैं।

सूका : यही करनी है तो मरने पर तुम्हें गाँव के चार आदमी नहीं जुरेंगे, जो तुम्हारी अर्थी के पीछे-पीछे दो-चार बोझ लकड़ी लेकर नदी के घाट तक जायें।

भगौती : तू अपनी चिन्ताकर, मुझे औरत नहीं चाहिए, क्या करेंगी ये जुठमुही रूठ कर! और मुझे आदमी की कम नहीं है। कह तो इसी चारपाई पर पड़े-पड़े अभी दो सौ आदमी इकट्ठा कर दूँ।

सूका : तब क्यों नहीं इकट्ठा किया, जब मुंडेरे में वह तुम्हें मुरदा बना रहा था, मुझे भूजने के लिए पैर तुड़वाकर घर आये हो!

भगौती : घबड़ाओ नहीं, पैर ठीक हुआ नहीं कि तुरन्त उसी रात अगर इंदरवा का खून मैंने नहीं किया तो मैं अपने बाप का नहीं।

[जोर से खाँसने लगता है। सूका बढ़कर उसके सिर को उठाती है और खाट के नीचे रखे हुए मिट्टी के एक बर्तन में उसे थुकाती है।]

भगौती : मेरा सरहाना ऊँचा कर दे। मैं इस तरह नहीं रहूँगा।

सूका : तो जाकर बाहर टहल आवो न। हरखू को बुला लो, अब तो वे गाँजा पीने नहीं आते। जाओ बुला लाओ न!

भगौती : *(चुप है।)*

सूका : जाओ अपने तेजई-मूरत के घर हो आवो। वे तो तुम्हारे ससुर-समधी थे, कहाँ हैं अब!

[घूरती हुई सूका भीतर चली जाती है और एक समेटी हुई लिहाफ लाती है और उसे गोल कर भगौती के सिरहाने रख देती है। भगौती अब लिहाफ पर बायें हाथ का सहारा देकर आधा बैठ सा जाता है।]

राजी : अच्छा दीदी, अब मैं चलूँगी। कथा की सामग्री में जो कुछ बाकी रह गया है, उसे मैं कल जुटा दूँगी, चिन्ता न करना।

सूका : अलगू बाबू को भेज देना।

[राजी जाने लगती है।]

भगौती : *(व्यंग से)* अलगू से कहना, तेरे बिना उसे नींद नहीं आ रही है।

[सूका भगौती को घृणा से देखती है ।]

भगौती : देख क्या रही हो ? मैं वही भगौती हूँ भूलना नहीं ! जरा अच्छा तो होने दे, तब बताऊँगा कि लच्छी कहाँ हैं और तुझी से ढुढ़वाऊँगा !

सूकाँ : (चुप है ।)

भगौती : खूब बदला लिया तूने मुझसे । लच्छी का इस घर से निकल जाना, इससे कड़ा बदला और कुछ नहीं हो सकता । (*खाँसता है*) तेरे इस बदले से मैं बुड्ढा हो गया, जैसे मेरी कमर टूट गयी हो, नहीं तो मुडेरा के बजार में मुझे मारकर इंदरवा नहीं निकल जाता, मैं उसका खून पी लेता । (*कराहकर*) बहुत समझ-बूझकर तूने मुझसे बदला लिया सूका !

सूका : (*क्रोध से*) शैतान, झूठे कहीं के ।

भगौती : अच्छा तू ही सच-सच बता, तूने मुझसे बदला नहीं लिया ?

सूका : अगर मुझे बदला ही लेना होता, तो मैं कुएँ में डूबने नहीं जाती । (रुककर) याद है वह रात, तूने मुझे इसी पावे में बाँध रखा था और उसी रात को यहाँ इंदरवा आया था, मैं उसके संग भाग सकती थी ।

भगौती : तो भागी क्यों नहीं ?

सूका : क्योंकि मुझे बदला नहीं लेना था । बदला ही लेना होता तो मैं तुझे बहुत आसानी से कभी ही जहर दे सकती थी ।

भगौती : वह उतना बड़ा बदला नहीं होता ।

सूका : (*पीड़ा से*) भगवान् के लिये मुझे ऐसा न कह । एक बार

तो तू मुझे पत्नी की तरह देख ले। निगोड़े कहीं के, अगर मुझे बदला लेना होता तो आज मैं तेरे साथ इस खून, पीप और पैखाना-पेशाब में न सनी होती।

भगौती : यह भी एक तरह का बदला ही है। जो एक दिन मेरी दया पर जी रही थी, आज उसकी दया पर मुझे जीना पड़ रहा है यह भयानक बदला है।

सूका : नहीं, तू अपनेपन पर जी रहा है। मेरी दया की बात होती तो मैं तेरी इतनी सेवा न करती।

भगौती : मुझसे और भी कोई बहुत बड़ा बदला लेना होगा।

[सूका रोने लगती है और सिर थामकर जमीन पर बैठ जाती है। बाहर से अलगू आता है। सूका सिसकती हुई अपने को आँचल में छिपा लेती है।]

अलगू : घबड़ाती क्यों हो, बाबू के पैर जल्दी ठीक नहीं हो जायेंगे क्या! कल सतनरायन बाबा का कथा सुना दो। इसी शुक्र के दिन मैं इन्हें डोली से शहर ले जाऊँगा और कितने रुपये क्यों न लगें, मैं पैर ठीक कराके छोड़ूँगा।

सूका *(उठकर पास आती हुई)* तुम्हारा ही तो आसरा है बाबू, और मेरा कौन है!

[रो पड़ती हैं।]

अलगू *(बिगड़कर)* देख सुकिया, तू बहुत तिरिया चरित मेरे सामने न दिखा, रोना-धोना हो तो मेरे सामने से हट जा।

[सूका अलगू की बाँह पकड़ भीतर चला जाता

है, कुछ क्षणों बाद भीतर से नन्दो निकलकर बाहर जाने लगती है।]

भगौती : (नन्दो को रोककर) हे री नन्दो, सुन इधर आ !

[पास आकर खड़ी हो जाती है।]

भगौती : तेरे गाँव की ओर तो लछिया कहीं नहीं सुचियाती।

[नन्दो सिर हिलाती है।]

भगौती : फिर वह कहाँ हो सकती है ? क्या ख्याल है तेरा ?

नन्दो : (इधर-उधर देखकर) इंदरवा ही ले गया होगा भइया !

भगौती : पर कहीं सुचियाती नहीं, इंदरवा तो यहीं है बड़े गाँव में, लेकिन लछिया का कोई पता नहीं चलता।

नन्दो : दुहिजरे के पूत ने कहीं ले जाकर बेंच दिया होगा, कलकत्ता, कानपुर तो मरतुआ के पाँव तले रहते हैं।

भगौती : (पीड़ा से) ठीक कहती है, लछिया को बेंच लिया होगा।

[पीड़ा से कराहने लगता है।]

नन्दो : और क्या, वह लच्छी को अपने पास क्यों रखता ! दहिजरे ने जिस पर दाँत गड़ाया है वह तो अभी घर ही में है।

[नन्दो बाहर निकल जाती है। भीतर से अलगू के साथ सूका आती है।]

सूका (अलगू से) सब चीज से सचेत रहना बाबू ! और उसका भी ख्याल रखना।

अलगू बेफिकर रहो।

[चला जाता है।]

भगौती किसका ख्याल रखा रही हो ?

सूका किसका किसका ख्याल रखाऊँ, सब तो बिलाय रहा है,

रबी की फसल उस तरह गयी, भदई में बीया-बिसार तक न हुआ, अगहनी की तो कोई आशा ही नहीं।

भगौती : (कराहकर चुप हो जाता है।)

सूका : खलिहान में चार बोझ पुआल है, खूँटे पर दो ही बैल हैं और सिर ही पर इंदरवा दुश्मन है।

भगौती : इंदरवा मेरा क्या टेढ़ा कर लेगा।

सूका : नहीं, वह आकर तुम्हें पूजेगा, उसका घर फूँका गया है, उसकी हरी फ़सल काटी गयी है, दो बीघे ऊख में आग लगी है, फिर वह तुम्हें ऐसे ही छोड़ देगा। कौन है उस दुहिजरे के आगे-पीछे रोनेवाला?

भगौती : तो मेरे ही आगे-पीछे कौन रोनेवाला है। (रुककर) अच्छा होने दो, अब की उसे जान से न मरवा डालूँ तो मेरा भगौती नाम नहीं!

सूका : बड़ा नाम है! वाह!!

भगौती : (क्रोध से) दूर हो जा मेरे सामने से! खुद तो साही का काँटा बनकर मेरे घर में आयी, मेरा नाम बेचा...।

[आवेश में गला रुँध जाता है और वह खाँसने लगता है; सूका आगे बढ़कर उसका सीना सहलाती है। दौड़कर भीतर से पानी लाती है। पिलाती है, उसकी खाँसी शान्त हो जाती है और वह कराहने लगता है।]

भगौती : दूर हो जा मेरी नजर से।

सूका : दूर तो हो जाऊँ, तेरी बला से। पर एक ही दिन में तो सड़ने लगोगे। पानी बिना मर जाओगे, हाँ!

[*भगौती को फिर खाँसी आ जाती है और जो पानी उसने अभी पिया था, उसी का कै हो जाता है, सूका जल्दी से उसे अपनी हथेली में ले लेती है और नीचे बरतन में डाल देती हैं। उसी बर्तन में वह फिर कुल्ला कराती है और अपने आँचल से भगौती का मुँह पोछकर फिर लिटा देती है. वह थककर अपनी आँखें मूँद लेता है। सूका उसके सीने को अपनी हथेली से सहलाती रहती है फिर वह धीरे-धीरे सो जाता है। बाहर से राजी आती है, वह भी चिन्ता से खड़ी देखती रह जाती है।*]

सूका : (*राजी के पास आती है।*) लगता है, दैव के यहाँ भी मेरे लिए जगह नहीं है।

राजी : सोये हैं न!

सूका : हाँ आँख मूँदे तो हैं, लेकिन खाँसी के मारे दम जो हर-दम फूलता रहता है।

राजी : दहिजरा के पूतों ने गाँजा पिला-पिलाकर (*रुक जाती है*) अब नहीं दिखाई पड़ते मुँहफौंसे!

सूका : अब क्यों दिखायी पड़ेंगे। अभी तो जैसे मरे हुए हैं।

राजी : (*भगौती की खाट की ओर बढ़कर*) सरहाने कुछ लोहा-पत्थर रख दिया है कि नहीं, ऐसे में भूत-शैतान का बड़ा डर रहता है।

सूका : हाँ, पैताने एक गँडासा रख दिया है; वह भी इसकी जान में नहीं!

राजी : क्यों!

सूका : तुम तो ऐसी पूछती हो, जैसे इसकी आदत नहीं जानती!

हरदम तो मुझे देख-देखकर इसका खून जलता है, क्रोध से हर घड़ी दाँत पीसता है। अगर इसे इसका पता हो कि इसके पास गेंड़ासा रखा है तो तुरन्त गेंड़ासा फेंककर मुझे मारे, चाहे जो हो।

राजी (*हैरान चुप रहती है*)।

सूका : करम ने जब जहर का पेड़ लगाया था, तब उसमें मेवे कहाँ से फलेंगे।

राजी : कहाँ है नन्दो ?

सूका : कहीं गाँव में परेत रही होगी।

राजी : तभी न ! सुसराल में यह हरकत नहीं न चलेगी। उस पर उलटे रोती घूमती है कि सास मारती है, ससुर गाली देता है, मरद घर से निकालता है।

[*सहसा भगौती अपनी नींद में बाखलान लगता है—हू···हू···हू···मार-मार-मार हू-हू।*]

सूका : (*पास जाकर*) एक चण की नींद में भी मार-मार नहीं बंद होता।

भगौती : (*घबड़ाया हुआ*) आँय···आँय···क्या हुआ ?

सूका : हुआ क्या !

भगौती : मैं सो गया था क्या ?

सूका : भला तुम सोओगे। मार-सार से छुट्टी मिलेगी तब तो।

भगौती : (*कराहकर*) सपना देख रहा था कि मैं लछिया को पकड़कर लाया हूँ और इसी पावे में बाँध रहा हूँ।

सूका : सपना चाहे जो देख लो, वैसे इस पावे में मैं ही बाँधी जा सकती हूँ। मैं ही भाग में यह लेकर उतरी थी, लच्छी नहीं ! वह भाग्यवान थी, अच्छे करम थे उसके !

भगौती : (*बिगड़कर*) अच्छा कपार मत खा मेरा (रुककर) पानी पिला जल्दी।

सूका : (*पानी पिलाकर*) जब मैं तेरा कपार खाती हूँ, तब तू मेरे हाथ का पानी भी न पी, अपनी नन्दो को पास बैठा ले ना !

राजी : नन्दो तो गाँव में घूम रही है। वह यहाँ क्या फटकेगी !

भगौती : इसी ने तो उसे कमालपुर बुलाया है। मैं थोड़े चाहता था।

सूका : क्यों नहीं, मैं ही तो नन्दो की मोह में मरी ही जा रही थी। तब एक बड़ा सुख मुझे दिया था, और एक सुख आज दे रही है।

भगौती : (चुप है।)

सूका : मेरे सात मुद्दई को ऐसे परानी से न भेंट हो।

[*बाहर से मिनकू काका आते हैं।*]

मिनकू : (*भगौती की ओर बढ़कर*) अब कैसी हाल-चाल है ?

[*कोई कुछ नहीं बोलता, सूका राजी के पास चली जाती है।*]

मिनकू : कहो भगौती, अब कैसी तबियत है ?

भगौती : वैसी ही है।

मिनकू : (*मिर्जई की थैली में से निकालते हुए*) यह लो सूका, देवगाँव के सोखे ने यह जंतर बनाकर दिया है। इसे उसी पैर में बाँध दो ! (*सूका जंतर ले जाती है*) उसकी भवानी ने अखाड़े में खेलकर कहा कि अगले मंगल तक पैर बैठ जायगा।

सूका : राजी ! जा भीतर से सवा सेर के अन्दाज में अन्न लेती आ।

[राजी भीतर जाती है।]

मिनकू : बहुत पहुँचा हुआ सोखा है, उसके अखाड़े पर पहुँचकर मुझे कुछ बताने की जरूरत ही न पड़ी। बस पाँच पैसा, दो फूल लवाँग, जैसे ही मुट्ठी में लेकर मैं बैठा, उसकी भवानी सब भाखने लगी।

भगौती : *(बीच ही में)* उसकी भवानी ने यह नहीं बताया कि लछिया कहाँ है?

मिनकू : बताया है—नाम तो नहीं बताया भगौती, लेकिन उसने रत्ती-रत्ती बात बता दी।

भगौती : क्या?

मिनकू : कि उस रात एक नौजवान घर के किनारे, नीम के पेड़ पर सँझहीं से बैठा था। भिनसार हो रहा था, लछिया बाहर निकली, उसने किसी और को समझ-कर उसे धर दबाया और वह सीधे लछिया को पच्छू दिशा ले गया।

[इसी बीच राजी भीतर से अन्न लाती है। सूका उसे लेकर भगौती को छुआती है। फिर जंतर को उसके टूटे पैर में बाँध देती है।]

भगौती : *(अतुल जिज्ञासा से)* कहाँ ले गया पच्छू दिशा में?

मिनकू : बहुत बड़ा शहर है, कपड़ा, लोहा और चमड़े के बड़े-बड़े कल कारखाने हैं उस शहर में।

भगौती : कानपुर शहर *(सोचता हुआ)* जिन्दा है अभी

मिनकू : हाँ, हाँ, जिन्दा क्यों नहीं है। उसको पाँच सौ रुपये में एक ठीकेदार ने खरीद लिया है।

भगौती : अब तो अच्छा होने दो काका (*सहसा तेजी से*) उसने यह नहीं बताया काका कि लछिया के भागने में किसी औरत का भी हाथ था।

सूका : (*बीच ही में*) किसी और का क्या, सीधे-सीधे सूका का नाम क्यों नहीं लेते ?

भगौती : मैं तो नाम लूँगा ही, चाहे किसी सोखा-माली की भवानी बताये या न बताये।

मिनकू : यह तुम्हारा भ्रम है भगौती !

भगौती : नहीं, मेरा विश्वास है काका।

सूका : तेरे विश्वास में लगे आग।

[*सूका झुँझलाकर राजी से सटकर दूर खड़ी हो जाती है।*]

मिनकू : सोखा ने कुल पन्द्रह रुपये का खर्च बताया है, लेकिन यह भी कहा है कि वह लड़की को पकड़ कर दिखा देगा।

भगौती : पन्द्रह तो क्या काका, मैं पाँच सौ रुपये खर्च करने के लिए तैयार हूँ (*चुप हो जाता है*) वह भूत हाँकना नहीं जानता काका !

मिनकू : क्यों नहीं ! ओह ! वह तो ऐसी मूठ मारता है कि घरी घंटे में आदमी अंधा हो जाय, बावी हो जाय, उसके मुँह से बात न निकले।

भगौती : क्या लेता है ?

मिनकू : यह तो नहीं पूछा।

भगौती : चाहे जो लगे काका ! तुम कल ही देवगाँव जाओ और सोखा से कहो कि वह इंदरवा पर भूत हाँक दे। ऐसी मूठ मारे कि वह अंधा होकर छटपटाता हुआ मेरे पास

आकर गिर पड़े। *(आवेश में)* और मैं···और मैं··· सूका !

सूका : क्या है, पागल तो नहीं हो गये।

भगौती : पागल तो तूने बना ही दिया। एक बात सुन, सरहाने मेरी कटार लाकर रख दे।

सूका : क्यों ?

भगौती : इंदरवा जब मेरे सामने अंधा होकर छटपटाकर गिरेगा, फिर मैं अपनी कटार से उसका कलेजा निकालूँगा।

मिनकू : लेकिन अभी इतनी जल्दी क्यों। उकताने से थोड़े काम होता है, अभी तो सोखा के पास मैं कल जाऊँगा।

भगौती : नहीं काका, हो सकता है कि कल मैं भूल जाऊँ *(रुककर)* सूका कटार कहाँ है, ला जल्दी से।

सूका : उसे मैंने गाँववाले कुएँ में फेंक दिया।

भगौती : *(दाँत पीसकर रह जाता है)* और मेरा फरसा ?

सूका : पता नहीं !

भगौती : और मेरी लठिया ! बोलती है नहीं तो अभी···*(दाँत पीसता है।)*

सूका : काट कर चूल्हे में लगा दिया।

भगौती : *(क्रोध से लाल हो जाता है)* देखा न काका ! तिस पर तुम लोग मेरा ही कसूर देते हो, यह औरत है कि चुड़ैल।

मिनकू : *(चुप है।)*

सूका : तैने ही तो चुड़ैल बनाया है *(फुँफलाकर)* लाठी, गँड़ासा, फरसा, कटार ! इन्हें अपने घर में रहने दूँगी, जिसने मेरे तन का खून पिया है, उसमें लगे आग !

भगौती : (क्रोध से) सुन लो कान फाड़ के काका, राजी तू भी सुन ले, नहीं तो बाद को तुम्हीं लोग पुतला टाँगने लगते हो।

मिनकू : उसने डर के मारे ऐसा किया है, बचाव के लिये कि फिर कभी न तुम उन्हीं हथियारों से उसे मार बैठो।

भगौती : (चुप है।)

सूका : काका ! इसी दायें पैर से इसने मेरे कलेजे पर दो लात मारा था। उसी मार से आज तक मेरे कलेजे से लेकर पेड़ू तक पत्थर जैसी गाँठ पड़ गयी है। जब पुरवैइया बहती है तो अन्न को कौन कहे, मैं एक बूँद पानी तक नहीं घूँट पाती। दर्द के मारे मुर्दा हो जाती हूँ।

भगौती : तो उसी पाप से मेरा यह पैर टूटा है, बोल ! बोलती क्यों नहीं !

सूका : क्या बोलूँ मैं ?

मिनकू : (जाने लगते हैं।)

भगौती : चले काका !

मिनकू : हाँ।

भगौती : तो कल भोर में देवगाँव जाने की बात पक्की रही न !

मिनकू : हाँ बिल्कुल पक्की।

[मिनकू का प्रस्थान]

सूका : बैठो न, खड़ी क्यों हो ?

राजी : नहीं, अब घर चलूँगी दीदी !

सूका : यह भी तो घर ही है।

राजी : (चुप है।)

[बाहर से नन्दो आती है।

भगौती : *(क्रोध से देखता हुआ)* कहाँ थी तू ! *(नन्दो घबड़ा जाती है)* बोल कहाँ थी !

नन्दो : हरखू मौसिया के घर गयी थी !

भगौती : क्यों ? बताती क्यों नहीं !

नन्दो : मूँड़ बन्हाने गयी थी !

भगौती : लेकिन तेरे तो सब बाल खुले हैं ।

[नन्दो काँप जाती है और वह डरी दृष्टि से सूका की ओर देखकर सिर झुका लेती है ।]

भगौती : इधर आ, मेरे पास *(डाँटता हुआ)* चल मेरे पास ।

सूका : *(नन्दो के कंधे पर अपनी बाँह रख देती है)* क्या करोगे पास बुलाकर ?

भगौती : *(कड़े स्वर से)* मैं कहता हूँ कि उसे मेरे पास आने दे ।

सूका : मैं पराये घर की लड़की पर तुझे हाथ नहीं उठाने दूँगी हाँ !

भगौती : आज मेरा पैर न टूटा होता तो बताता ! कुछ भी कहकर निकल जाओ ।

सूका : *(भगौती के पास चली जाती है)* मजबूर क्यों पड़ा है, ले मार ! मैं तो तेरे पास खड़ी हूँ, तेरा हाथ तो नहीं टूटा है, मार न ! मुझे मार ! मार ले पेट भर जाय ।

भगौती *(आँख मूँदे चुप पड़ा रहता है ।)*

सूका : *(भावोन्मेष में)* मजबूर तू क्यों है, मजबूर मैं हूँ—अपने से भी, दुनिया से भी ।

[सूका राजी के पास जाकर खड़ी हो जाती है । नन्दो सूका से सटी खड़ी रहती है । सूका नन्दो को लेकर बैठ जाती है और उसका सिर खोलती है ।]

सूका : (राजी से) भीतर से कंघा तो लाना ।

[राजी भीतर जाती है, कंघा लिए आती है, सूका को दे देती है और स्वयं सूका से सटकर बैठ जाती है ।]

सूका : (नन्दो के बालों में कंघा करती हुई) घर में रहते हुए फाँसी लगती है । मूड़ बँधवाने के लिए इन्हें हुस्नू मौसिया का ही घर मिला था ।

राजी : मेरे घर तो कभी भूलकर भी पाँव नहीं रखती ।

[नन्दो चुप बैठी है ।]

सूका : खुद खतरा खायेंगी, अभी क्या ।

राजी : बड़ी मिठाई में कीयाँ पड़ता है ।

सूका : (भगौती की ओर उपेक्षा से देखकर) किसी दिन गुस्से में आजायेगा तो पीस के पी लेगा, न बहन जानेगा न भगवान्, उसे न किसी का डर है न लाज ।

[भगौती क्रोध से सिर उठाता है । चारपाई के नीचे झुककर लोटा उठाता है और उसे साधकर सूका पर फेंकता है । लोटा सूका की पीठ से टकराता है । वह चीख उठती है, नन्दो राजी घबड़ा उठती हैं और उधर भगौती पर दर्दनाक खाँसी का दौड़ा पड़ जाता है । राजी सूका की पीठ सहलाने लगती है । सूका भगौती को घृणा से देखती है, लेकिन कुछ बोलती नहीं ! भगौती बुरी तरह से खाँस रहा है, सूका आगे बढ़ती है और भगौती को सम्हालती है, धीरे-धीरे पर्दा गिरता है ।]

[कुछ क्षणों के बाद फिर वही पर्दा उठता है । प्रायः छः घंटे रात बीत चुकी है । दुइदरे का रंग-

मंच पूर्णतः अंधकारमय है, कहीं से भी न रोशनी है, न आवाज, बाहर केवल हवा के बहने की आवाज कभी-कभी उठती रहती है। भीतर से चिराग लिए हुए सूका निकलती है और उस धीमी रोशनी में स्पष्ट है कि भगौती अपनी खाट पर सो रहा है। चिराग लिए हुए सूका ज्यों ही दुइदरे को पार करके भगौती की खाट की ओर बढ़ती है, सूका के हाथ का चिराग एकाएक बुझ जाता है। वह अंधकार में उल्टे पाँव भीतर जाती है। क्षण भर बाद वह फिर जलते हुए चिराग को अपने आँचल की ओट में छिपाये, दुइदरे से निकलती है, बरामदे में आती है और चिराग को दायें पावे के ताख पर रखने लगती है, सहसा चिराग फिर बुझ जाता है। बुझे हुए चिराग को वह ताख पर रख देती है, फिर भीतर जाती है और लौटकर दियासलाई से चिराग जला देती है।

खाट के नीचे से सूका दवा की शीशी निकालती है, उसे एक कटोरी में ढालती है, फिर भगौती को जगाकर, उसके सिर को ऊँचा करके उसे दवा पिलाती है। कुल्ला कराती है और उसके मुँह को अपने आँचल से पोंछकर उसे फिर सुला देती है।]

भगौती : बड़ी तीखी दवा है ! कहाँ से मगायी है ?

सूका : शहर से ! खाँसी की दवा है।

भगौती : मेरी खाँसी की ! (कराहकर) लेकिन आज मैंने फिर तुम से छिपकर दो चिलम गाँजा पिया है।

[सूका चुप खड़ी है।]

भगौती : साँझ को हरखू मौसिया आये थे।

सूका : (चुप है।)

भगौती : (कराहकर) मुझे करवट सुलादे सूका। इस तरह से सोते-सोते मेरी पीट कट गयी। कर दे न बायें करवट। बाये करवट तो मैं सो सकता हूँ। सुनती क्यों नहीं !

सूका : सुन रही हूँ, कर तो दूँ बायें करवट, लेकिन अभी तो चीखने लगोगे।

भगौती : नहीं, अब की चुपचाप सो जाऊँगा।

[सूका भगौती को बायें करवट करती है, लेकिन वह दर्द से कराह उठता है।]

भगौती : (*पीड़ा से*) नहीं, रहने दे करवट। रहने दे, इसी तरह रहना पड़ेगा।

सूका : (*चिढ़कर*) सारी रात पडी है और अभी से यह नखरा, सारा दिन तो काम करते-करते मर जाती हूँ, दहिजरा रात को भी एक घंटा आँख पर आँख न धरने को मिले।

भगौती : तो क्या करूँ मैं !

सूका : तू क्या करेगा ! कर तो भगवान् रहा है (*रुककर*) मेरे लिए उसके भी घर जगह नहीं।

भगौती : मेरे लिए तो है न।

सूका : भगवान जानें।

भगौती : (*बिगड़कर*) क्या दिन-रात भगवान-भगवान रटे रहती है, क्या करता है भगवान तेरे लिए, उल्लू कहीं की !

[सूका बिना कुछ बोले भीतर चली जाती है, हाथ में एक कम्बल लिये लौटती है और उसे जमीन पर बिछाने लगती है।]

भगौती : मेरे सँग तेरा भी अभाग है सूका !

सूका : (चुप है)

भगौती : पता नहीं, हम दोनों के भाग्य में क्या लिखा था !

सूका : यही कि तेरे सँग मैं भी जलूँगी !

भगौती : अच्छा हो जाऊँ, तुझे लेकर कहीं तीरथ करने जाऊँगा ।

सूका : हो चुका मेरा तीरथ ! मरने पर दो हाथ मुझे कफ़न दे देना, बस ।

भगौती : अशुभ मत बोल सूका, देख लेना इस बार मैं तेरे लिये चंदाहार बनवाऊँगा ।

[सूका जमीन पर बिछे हुए कम्बल पर बैठ जाती है ।]

भगौती (कराहकर) कितनी रात गयी होगी ?

सूका पहर-छः घंटे ।

भगौती तब तो न जाने कब भोर होगा । (कराहकर) पता नहीं, होगा भी ।

सूका होगा क्यों नहीं (रुककर) मन में राम-राम कहते हुए सो जाओ ।

भगौती यह मुझसे नहीं होगा । सब पोपलीला है ।

सूका तेरे लिए तो सब पोपलीला है, बस तू ही एक सत्य है ।

भगौती मिनकू काका को रुपया दे दिया न !

सूका : रुपया कहाँ रखा है जो दे देती, कभी धरने-उठाने को फूटी कौड़ी भी दी है, वही एक चाँदी की हँसुली बची थी, वही दे दी ।

भगौती : कोई बात नहीं, वह देवगाँव का सोना है, उधर उसने

भूत हाँका नहीं कि इंदरवा की आँखें बह जायँगी। साला दौड़ा हुआ आयेगा मेरे पैरों पर, गजब की मूठ चलाता है देवगाँव का सोखा, देखना।

सूका : अच्छा, सो जाओ अब।

[सूका लेट जाती हैं और अपने आँचल से मुँह ढक लेती है।]

भगौती : *(पुकारता है)* सूका ! ओ सुकिया।

सूका : *(बिगड़कर)* मुझे जीने देगा की नहीं !

भगौती : जरा मेरे सीने को सहला दे, मुझे तुरन्त नींद आ जायेगी !

सूका : *(उठती है)* जब मैं मर जाऊँगी तब तुम मेरे लिए रोओगे। अभी भूज लो खूब।

[खाट पर बैठकर उसका सीना सहलाने लगती है। भगौती आँखें मूद लेता है। कुछ क्षण बाद बाहर खिड़की पर एक आवाज होती है। सूका खाट से उतर कर चिराग की लौ तेज करती है और उसे लिए हुए इधर-उधर देखने लगती है लेकिन फिर कोई आहट न पाकर चिराग को ताख पर रख देती है। पृष्ठभूमि में एकाएक फिर कुछ टूटने और रौंद कर चलने की आवाज होती है। सूका अपने आँचल को बाँध, साड़ी का फाँड कस लेती है। उसी समय खप-रैल से आँगन में इंदर कूदता है, खूँखार रूप में। दायें हाथ में नंगी कटार लिये हुए है। सूका पहली दृष्टि में उसे देखकर भय से काँप जाती है, लेकिन दूसरे ही क्षण वह भगौती के पायताने बढ़कर बिस्तरे के नीचे रखे हुए गँड़ासे को निकालती है।]

इंदर : (बरामदे में आता हुआ, धीरे से) खबरदार, मेरी ओर मत बढ़ना सूका !

[सूका के 'क्यों' कहने पर वह अपने बंद मुँह पर उँगली रखकर उसे चुप रहने का संकेत करता है ।]

सूका : (दृढ़ता से) मैं चुप तब होऊँगी, जब इसी गँडासे से तेरा सिर काट लूँगी । (एक कदम आगे बढ़कर) बोल दाढ़ी-जार का पूत, यहाँ तू क्यों आया ?

इंदर : (उसी तरह मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने का संकेत करता हुआ) चुप रहो ! आज मैं इसे जान से मारकर तुझे निकालने आया हूँ ।

सूका (भय से कँप जाती है और उसकी वाणी एकाएक गिर जाती है ।) ऐसा न कर ! मैं तेरे पाँव पड़ती हूँ, ऐसा न कर । मैं विधवा हो जाऊँगी, मुझ पर दया कर ।

इंदर (घृणा से) तू उसे पति मानती है !

सूका पति तो है ही ।

इंदर लेकिन यह आदमी नहीं है ।

सूका कुछ तो है ।

इंदर कुछ नहीं है ।

[आवेश में भगौती की ओर बढ़ता है ।]

सूका (दृढ़ता से डाँटकर) खबदार, जो कदम आगे बढ़ाया

[इंदर के सामने तन कर खड़ी हो जाती है.

इंदर : ओह ! यह मजाल !

सूका : (गँडासा ताने चुपचाप खड़ी है ।)

इंदर : तो आज गँडासा है तेरे हाथ में ।

सूका : समझा क्या था। नामर्द कहीं का! यह घायल है लेकिन बेआसरा नहीं है।

[सहसा इंदर सूका के हाथ से गेंड़ासा छीनने के लिए झपटता है, सूका क्रोध से उस पर गेंड़ासा चला देती है। उसी समय भगौती जग जाता है। सूका के गेंड़ासे की चोट इंदर अपने बायें हाथ पर रोक लेता है, हाथ कट जाता है, लेकिन वह सूका के हाथ से गेंड़ासा छीनने के लिए तत्पर है। भगौती क्रोध से बार-बार उठने का प्रयत्न करता है, लेकिन पीड़ा से चीखकर गिर पड़ता है।]

भगौती : मार! मार शैतान को! शाबाश सूका! छोड़ना नहीं! जाने न पाये!

[भगौती खाट के नीचे रक्खे हुए लोटा-गिलास तथा अन्य मिट्टी के बर्तनों को उठा-उठाकर क्रोध से इंदर को मारता रहता है और गुहार भी मचाता रहता है। इंदर सूका के हाथ से गेंड़ासा छीनता है। सूका की दोनों हथेलियों से खून बह रहा है लेकिन फिर भी वह दोनों हाथों से उसे पकड़े है।]

सूका : *(चिल्ला कर कहती रहती है)* मेरे जिन्दा रहते तू उसे नहीं मार सकता। मैं तेरा खून पी लूँगी। नहीं, नहीं···नहीं··यह नहीं हो सकता। मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता।

[भगौती अपने प्रयत्न में खाट से गिरकर नीचे आ जाता है और अपनी समस्त पीड़ा को भूलकर वह

पड़े-पड़े इंदर की ओर बढ़ने लगता है। उसी समय इंदर सूका के हाथ से गेंड़ासा छीन लेता है।]

भगौती : (चीखकर) ले मुझे मार। उस पर हाथ न चलाना, तेरा दुश्मन मैं हूँ, सूका नहीं।

इंदर : (बायें हाथ में कटार और दायें में गेंड़ासा लिये हुए भगौती की ओर झपटता है।) हाँ, हाँ तुझे ही मारूँगा, उसे तो ले जाऊँगा।

सूका : (चीखकर दौड़ती है) नहीं, नहीं, यह नहीं होगा!

[दोनों हथियारों से एक ही साथ इंदर जमीन पर गिरे हुए भगौती पर चोट करता है, सहसा बीच में सूका फाट पड़ती है। इंदर के दोनों उठे हुए वार सूका पर सही उतर जाते हैं और वह करुण कराह से भगौती के सीने पर बिखर जाती है। इंदर सूका को देखकर पागल-सा हो जाता है। वह तेजी से तीन बार पूरे दुइदरे में चक्कर काटता है, फिर बहुत मजबूती से वह दायें पावे को अपनी बाहों में जकड़ लेता है, जैसे किसी ने उसे बाँध दिया हो। उसकी अपराध भरी भयानक आँखों में सूका का खून साफ उतर आया है।]

भगौती : (दम तोड़ती हुई सूका को अपने सीने से जकड़े हुए चिल्लाता रहता है) सूका!...मैंने अपनी सूका को मार डाला, सूका...सूका...सूका!

[लाठी लिए हुए बाहर से अलगू दौड़ा हुआ आता है उसके पीछे ही मिनकू काका और गाँव के

कई लोग लाठी लिए हुए दौड़े आते हैं और चारों ओर से इंदर को घेर लेते हैं। इंदर अब भी उसी तरह स्वयं पावे से अपने को बाँधे हुए खड़ा रहता है। मनुष्यों के क्रोध-मय और आवेश पूर्ण कोलाहल को चीरती हुई भगौती की करुण आवाज उठती रहती है—'खूनी मैं हूँ, सूका का खून मैंने किया है, मैंने किया है'।]

[तेजी से पर्दा गिरता है।]